सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 121, नई दिल्ली, गुरुवार 10 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 सीएम रेखा गुप्ता के बंगले का नवीनीकरण करने के टेंडर को रद्द कर दिया गया

06 गर्मी बढ़ा रहे हैं घटते हुए बादल

08 भारत बंद का असर: राउरकेला में आंशिक, सुंदरगढ़ में अधिक

तय कीमत से पांच गुणा वसूल रहे थे पार्किंग चार्ज अब एमसीडी ने लगाया 24 लाख का जुर्माना

संजय बाटला

दिल्ली नगर निगम ने पार्किंग ठेकेदारों द्वारा तय शुल्क से अधिक वसूली करने पर सख्त कार्रवाई की है। एमसीडी आयुक्त अश्वनी कुमार के आदेश पर 24 लाख से अधिक का जुर्माना लगाया गया है। निगम ने चेतावनी दी है कि नियमों का उल्लंघन करने वालों के ठेके रद्द किए जाएंगे। दैनिक जागरण ने चांदनी चौक समेत कई पार्किंगों में अधिक शुल्क वसूली का मुद्दा उठाया था।

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम द्वारा ठेके पर दी गई पार्किंग में तय शुल्क से पांच गुणा रुपये वसूलने पर दैनिक जागरण की खबर के बाद निगम ने बड़ी कार्रवाई की है। एमसीडी आयुक्त अश्वनी कुमार की सख्ती के बाद पार्किंग ठेकेदारों पर 24 लाख से अधिक का जुर्माना लगाया गया है।

इसके साथ ही निगम ने चेतावनी जारी की है कि सभी पार्किंग का समय-समय पर निरीक्षण किया जाएगा। साथ ही जो ठेकेदार पार्किंग के नियमों का उल्लंघन करते हुए पाए जाएंगे उनके ठेके रद करने से लेकर उन्हें ब्लैकलिस्ट करने की कार्रवाई भी की जाएगी।

इसके साथ ही निगम पार्किंगों के निरीक्षण को लेकर नए सिरे से दिशा-निर्देश भी तैयार कर रहा है जिन्हें आने वाले दिनों में जारी किया जा सकता है। दैनिक जागरण ने सोमवार के संस्करण में चांदनी चौक में बड़ी पार्किंग परेड ग्राउंड, चर्च मिशन रोड, लाजपत राय मार्केट के सामने और दंगल मैदान पार्किंग की जमीनी पड़ताल कर 20 रुपये घंटे की बजाय 100 रुपये का शुल्क वसूलने का मुद्दा उठाया था।

इसके बाद निगमायुक्त अश्वनी कुमार के सख्त आदेश के चलते निगम की टीम ने सोमवार को ही इन पार्किंग का निरीक्षण कर अपनी रिपोर्ट दे दी थी। निगमायुक्त की मंजूरी के बाद निगम ने परेड ग्राउंड और चर्च मिशन रोड की पार्किंग के ठेकेदार पर मेसर्स जगतार सिंह 16.45 लाख का जुर्माना लगाया है।

वहीं, दंगल मैदान के पार्किंग ठेकेदार मेसर्स जोगिदर सिंह 3.76 लाख से ज्यादा का जुर्माना लगाया है। लाजपत राय मार्केट के सामने पार्किंग ठेकेदार मेसर्स गिरीराज एंटरप्राइजेज पर 1.77 लाख तो वहीं अन्य पार्किंग 1.75 और 79 हजार तक का जुर्माना लगाया है।

निगम ने अपने जारी बयान में कहा है कि पार्किंग शुल्क दिल्ली नगर निगम द्वारा निर्धारित किए जाते हैं और किसी भी ठेकेदार को स्वीकृत दरों से अधिक राशि वसूलने का अधिकार नहीं है। नागरिकों से अपील है कि वे सतर्क रहें और निर्धारित दरों से अधिक ठेकेदार को एक पैसा भी न दें।

नागरिकों को एमसीडी के हेल्पलाइन नंबर 155305 या फिर एमसीडी 311 मोबाइल एप या ईमेल के जरिये इसकी शिकायत की जा सकती है। इन शिकायतों से एमसीडी को पार्किंग ठेकेदारों की अनिमियतता पर अंकुश लगाने में मदद मिलेगी।

एमसीडी ने अपने बयान में यह भी बताया है कि करोल बाग के गुरुद्वारा रोड पार्किंग स्थल, आर्य समाज-Iपार्किंग स्थल,अजमल खान रोड पार्किंग स्थल और सरस्वती मार्ग पार्किंग स्थल के साथ ही यूसुफ सराय मार्केट (फुटओवर ब्रिज के किनारे से ग्रीन पार्क मेट्रो स्टेशन के गेट नंबर 2 तक) में पार्किंग की दर 40 रुपये घंटा और 24 घंटे के लिए अधिकतम 200 रुपये चार पहिया वाहन के लिए तो वहीं दो पहिया वाहन के 20 रुपये घंटा और 100 रुपये अधिकतम 24 घंटे के लिए लिया जा सकता है।

एमसीडी के शेष पार्किंग स्थलों पर चार पहिया वाहनों के लिए 20 रुपये प्रति घंटा और 100 रुपये अधिकतम 24 घंटे के लिए वसूले जा सकते हैं। इसी प्रकार दो पहिया वाहनों के लिए 10 रुपये घंटा और 50 रुपये अधिकतम 24 घंटे के लिए वसूले जा सकते हैं।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली में पुराने वाहन नहीं होंगे जब्त, सीएक्यूएम ने दी राहत; इस तारीख के बाद एनसीआर में भी कार्रवाई

दिल्ली में 15 साल पुरानी पेट्रोल और 10 साल पुरानी डीजल गाड़ियों पर लगी तेलबंदी फिलहाल हटा ली गई है। सीएक्यूएम की बैठक में इस पर फैसला लिया गया। दैनिक जागरण में सोमवार को प्रकाशित खबर पर मुहर लग ही गई। एक नवंबर से नोएडा गाजियाबाद फरीदाबाद गुरुग्राम और ग्रेटर नोएडा के साथ ही दिल्ली में भी शुरू होगा।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। राजधानी में 15 साल पुरानी पेट्रोल और 10 साल पुरानी डीजल गाड़ियों पर लगी तेलबंदी फिलहाल हटा दी गई है। दिल्ली सरकार के अनुरोध को स्वीकार करते हुए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने फिलहाल इस अभियान को लगभग चार माह के लिए स्थगित कर दिया है।

राष्ट्रीय राजधानी में उम्रदराज वाहनों पर होने वाली कार्रवाई अब एक नवंबर से अमल में लाई जाएगी। तब इन वाहनों पर लगा प्रतिबंध केवल दिल्ली तक ही सीमित नहीं रहेगा बल्कि दिल्ली के साथ- साथ पांच एनसीआर जिलों में भी लागू होगा।

सीएक्यूएम ने निर्देश संख्या 89 में भी संशोधन कर दिया है। ज्ञात हो कि दैनिक जागरण ने सोमवार के अंक में ही पेज एक पर "पुराने वाहनों को सीएक्यूएम से मिल सकती है राहत" शीर्षक से प्रकाशित खबर में पाठकों को यह जानकारी दे दी थी। मंगलवार को सीएक्यूएम की बैठक में जागरण की इस खबर पर मुहर भी लग गई।

राष्ट्रीय राजधानी में एक जुलाई से उम्रदराज वाहनों को ईंधन देने पर रोक लगा दी गई थी। साथ ही ऐसे वाहनों को जब्त कर उन्हें स्क्रैप के लिए भेजने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी थी। इस कार्रवाई की आलोचना भी हो रही थी और सियासत भी। आम आदमी पार्टी लगातार दिल्ली की रेखा गुप्ता सरकार पर हमले बोल रही थी। इस पर सियासत एवं आम जन की परेशानियों को देखते हुए दिल्ली सरकार ने यह कार्रवाई रोकने के लिए सीएक्यूएम को एक पत्र भी लिखा था। दिल्ली सरकार के पत्र और अनुरोध को ध्यान में रखते हुए मंगलवार को सीएक्यूएम अध्यक्ष राजेश वर्मा की अगुवाई में एक उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक हुई। बैठक में निर्णय लिया गया कि दिल्ली में पुराने वाहनों पर होने वाली यह कार्रवाई अब एक नवंबर से अमल में लाई जाएगी।

एक नवंबर से बढ़ेगा कार्रवाई का दायरा

सीएक्यूएम ने भी फैसला लिया है कि एक नवंबर से ऐसे वाहनों पर कार्रवाई का दायरा भी बढ़ेगा। दिल्ली के साथ-साथ पांच एनसीआर जिलों में भी इस कार्रवाई को अमल में लाया जाएगा। आयोग ने सर्वसम्मति से फैसला लिया कि दिल्ली और एनसीआर के जिलों में एक साथ तेलबंदी लागू करना उचित होगा। अब एक नवंबर से गुरुग्राम, फरीदाबाद, नोएडा, गाजियाबाद और सोनीपत में भी पाबंदियां लागू की जाएंगी।

दिल्ली सरकार ने पत्र में किया था अनुरोध

दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने आयोग को पत्र लिखकर उम्रदराज वाहनों के लिए तेलबंदी के फैसले पर रोक लगाने को कहा था। उन्होंने परिचालन, ढांचागत और तकनीकी बाधाओं के आधार पर यह आग्रह किया था कि आदेश को तत्काल प्रभाव से तब तक के लिए रोक दिया जाए जब तक कि ऑटोमेटिक नंबर प्लेट पहचान (एएनपीआर) सिस्टम पूरे एनसीआर में इंटिग्रेट नहीं हो जाता।

एलजी ने सीएम को लिखा था पत्र

एलजी वीके सक्सेना ने भी इस मसले पर सीएम रेखा गुप्ता को एक पत्र लिखा था। उन्होंने उम्रदराज वाहनों को ईंधन नहीं देने की योजना पर गंभीर आपत्ति जताते हुए कहा था कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली अभी इस तरह के प्रतिबंध के लिए तैयार नहीं है।

इस फैसले से आम लोगों खासतौर पर मध्यम वर्गीय लोगों को भारी नुकसान होगा। यह फैसला सामाजिक और आर्थिक दोनों ही लिहाज से उचित नहीं लगता।

सीएम ने सुप्रीम कोर्ट जाने की कही है बात

सीएम रेखा गुप्ता का भी बयान सामने आया था। उन्होंने कहा था कि उनकी सरकार इस मामले में सुप्रीम कोर्ट का रुख करेगी। दिल्ली सरकार शीर्ष अदालत को प्रदूषण की रोकथाम के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी देगी।

साथ ही अनुरोध करेगी कि वह राष्ट्रीय राजधानी में उम्र दराज वाहनों पर एनसीआर के बाकी हिस्सों की तरह ही समान नियम लागू करने की इजाजत दे।

कमाल है!

बिना हेलमेट... जुर्माना 1000/-
नो पार्किंग में पार्किंग करना... जुर्माना 3000/-
इन्सुरेंस नही है... जुर्माना 1000/-
शराब पी कर वाहन चलाना... जुर्माना 10000/-
नो एंट्री में वाहन चलाना... जुर्माना 5000/-
मोबाईल फोन पे बात करना... जुर्माना 2000/-
प्रदूषण सर्टिफिकेट नहीं... जुर्माना 1100/-
ट्रिपल सीट ड्राइविंग... जुर्माना 2000/-

खराब सिग्नल... कोई जिम्मेदार नहीं है!
सड़क पर गड्ढे... कोई जिम्मेदार नहीं है!
अतिक्रमित फुटपाथ... कोई जिम्मेदार नहीं है!
सड़क पर रोशनी नहीं... कोई जिम्मेदार नहीं है!
सड़क पर कचरा बह रहा है...कोई जिम्मेदार नहीं है!
सड़कों पर लाइट के खंभे नहीं... कोई जिम्मेदार नहीं है!
खुदी सड़क कोई मरम्मत नहीं... कोई जिम्मेदार नहीं है!
गड्ढों में गिर कर आप गिरो चोटिल हो जाएँ... कोई जिम्मेदार नही है!
आवारा गायें जानवर टकरा जाए कुत्ता काट ले... कोई जिम्मेदार नहीं!
ऐसा लगता है कि जनता ही एकमात्र अपराधी है और जुर्माना देने के लिए उत्तरदायी है। प्रशासन, निगम और सरकार कोई जिम्मेदार नहीं है। उनके लिए कोई नियम लागू नहीं होते हैं। वे किसी भी चूक के लिए कभी ज़िम्मेदार नहीं हैं।
क्या उन्हें दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए ????
नागरिक केवल काम करेंगे... दर्द का सामना करेंगे... कर चुकाना होगा... जुर्माने का भुगतान करेगा... सरकार की जेब भरें... और उन्हें फिर से सत्ता में वोट दें !
आप लोगों से हाथ जोड़कर निवेदन है कि इसे ज्यादा से ज्यादा शेयर करें ताकी यह बात उन्हें भी पता चलनी चाहिए जिन्होंने यह नियम बनाया है।
It is time that Judiciary starts to levy hefty fines on Govt Officers for better civic amenities

नोएडा में ट्रैफिक जाम से मिलेगा छुटकारा, 27 करोड़ रुपये होंगे खर्च; सर्वे जल्द

नोएडा शहर में यातायात जाम की समस्या को दूर करने के लिए प्राधिकरण को नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम के तहत 27 करोड़ रुपये मिले हैं। इस धन का उपयोग प्रमुख सड़कों पर जाम के कारणों का पता लगाने और उन्हें दूर करने में किया जाएगा। नोएडा ट्रैफिक सेल तकनीकी सुधार करेगा और नए ट्रैफिक प्लान बनाएगा ताकि जाम मुक्त सफर और प्रदूषण कम किया जा सके।

नोएडा। प्राधिकरण नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम (एनसीएपी) के तहत 27 करोड़ रुपये मिला है। इसका उपयोग नोएडा में यातायात जाम के कारकों को खत्म कर सुधार लाने में किया जाएगा। इसके लिए प्रमुख सड़कों पर कहां-कहां जाम की समस्या रहती है। इसका सर्वे सलाहकार कंपनी से कराया जा रहा है। सर्वे रिपोर्ट आने के बाद नोएडा ट्रैफिक सेल (एनटीसी) उन सभी प्वाइंट को तकनीकी रूप से सही करेगा। ताकि वहां यातायात जाम की समस्या न हो। बता दें कि नोएडा में अधिकांश यातायात जाम बाटलनेक की वजह से लगता है।

नोएडा प्राधिकरण नोएडा ट्रैफिक सेल महाप्रबंधक एसपी सिंह ने बताया कि इसका प्रमुख उद्देश्य सड़क पर लोगों को जाम मुक्त सफर उपलब्ध कराना है। साथ ही वायु प्रदूषण को कम करना है। यातायात जाम में गाड़ियां फंसने से वातावरण में प्रदूषण का स्तर बढ़ता है। इसलिए जाम मुक्त सफर के लिए प्रमुख सड़कों को ही चुना गया है। यहां ऐसे प्वाइंट जहां बाटलनेक बन रहा हो, यूटर्न की वजह से जाम लग रहा हो या लेफ्ट टर्न देने की आवश्यकता है। वहां तकनीकी रूप से दक्ष किसी एक कंपनी का चयन कर रि-कंस्ट्रक्शन कराया जाएगा। इसके अलावा ट्रैफिक सिग्नल को लेफ्ट टर्न फ्री कराया जाएगा।

इससे नोएडा का यातायात काफी स्मूद हो जाएगा। नेशनल क्लीन एयर प्रोग्राम के तहत करीब 300 करोड़ रुपये केंद्र सरकार से मिलना है। इससे पहले भी प्राधिकरण दो बार 30-30 करोड़ रुपये मिल चुका है। नए प्लान के तहत एनसीएपी का पैसा नोएडा में ट्रैफिक कंजेशन को दूर करने में किया जाएगा। नए ट्रैफिक प्लान बनाए जाएंगे, जिसके अनुसार यहां काम होगा।

तेज बारिश के कारण पानी-पानी हुआ यमुनापार अब लोग एमसीडी और पीडब्ल्यूडी से पूछ रहे य सवाल

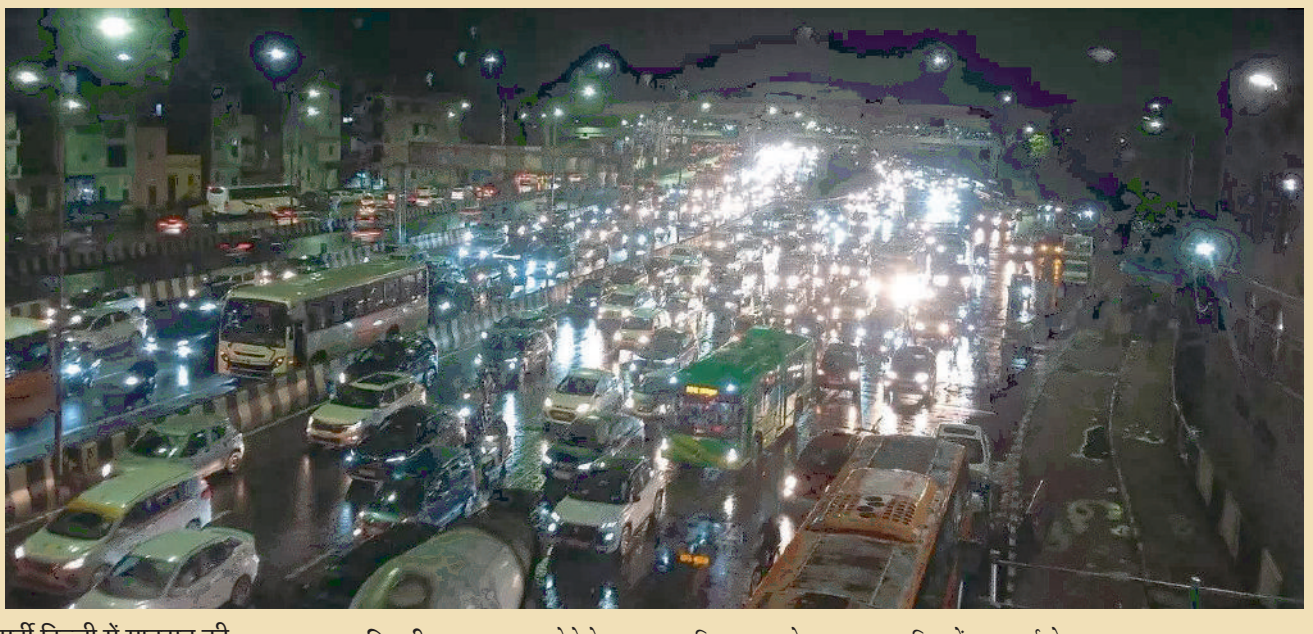

पूर्वी दिल्ली में मानसून की शुरुआत के साथ ही तेज बारिश ने यमुनापार को जलमग्न कर दिया। आवासीय क्षेत्रों और मुख्य मार्गों पर पानी जमा हो गया जिससे लोगों के घरों और दुकानों में पानी भर गया। जलभराव से परेशान लोगों ने निगम और पीडब्ल्यूडी से जलभराव रोकने के वादों पर सवाल उठाए।

दिल्ली। मानसून शुरू होने के साथ ही यमुनापार का सूखा भी खत्म हो गया। बुधवार देर शाम को आई तेज वर्षा ने यमुनापार को पानी-पानी कर दिया। रिहायशी इलाकों की गलियों से लेकर मुख्य मार्गों पर वर्षा का पानी जमा हुआ।

जलभराव से लोगों के मकानों व दुकानों में पानी भर गया। जलभराव से गुस्साए लोगों ने निगम व पीडब्ल्यूडी से सवाल पूछ लिया आखिर उस वादे का क्या हुआ जिसमें दावा किया गया था जलभराव नहीं होगा। नाले साफ करवा दिए गए हैं। एक ही वर्षा ने सफाई का सच सामने ला दिया।

सीलमपुर, शाहदरा मेट्रो स्टेशन के बाहर, ब्रह्मपुरी रोड, बाबरपुर सौ फुटा रोड, वजीराबाद रोड, एनएच-नौ की सर्विस लेन, स्वामी दयानंद मार्ग, शाहदरा जीटी रोड, यमुना विहार, बृजपुरी रोड समेत कई जगह वर्षा से जलराव हुआ।

सड़कों पर इतना पानी भर गया कि कई वाहन बंद हो गए। इससे सड़कों पर जाम लग गया। लोग जलभराव में अपने वाहनों को धक्का लगाकर साइड करते हुए दिखाई दिए।

सीलमपुर सर्विस रोड पर करीब तीन फुट पानी जमा हो गया। बैरिकेड लगाकर वाहनों के लिए रास्ता बंद करना पड़ा। जिस सड़क पर जलभराव हुआ, वहां लंबा जाम लगा।

गुरु-पूर्णिमा पर विशेष...

सारा धर्म एक महाकाव्य है। अगर यह तुम्हें खयाल में आए, तो आषाढ़ की पूर्णमा बड़ी अर्थपूर्ण हो जाएगी।

अन्यथा, एक तो आषाढ़, पूर्णिमा दिखाई भी न पड़ेगी। बादल घिरे होंगे, आकाश तो खुला न होगा, चांद की रोशनी पूरी तो पहुंचेगी नहीं।

और प्यारी पूर्णिमाएं हैं, शरद पूर्णिमा है, उसको क्यों न चुन लिया? ज्यादा ठीक होता, ज्यादा मौजूं मालूम पड़ता।

नहीं; लेकिन चुनने वालों का कोई खयाल है, कोई इशारा है। वह यह है कि गुरु तो है पूर्णिमा जैसा और शिष्य है आषाढ़ जैसा। शरद पूर्णिमा का चांद तो सुंदर होता है, क्योंकि आकाश खाली है। वहा शिष्य है ही नहीं, गुरु अकेला है। आषाढ़ में सुंदर हो, तभी कुछ बात है, जहां गुरु बादलों जैसा घिरा हो शिष्यों से।

शिष्य सब तरह के जन्मों-जन्मों के अंधेरे का लेकर आ गए। वे अंधेरे बादल हैं, आषाढ़ का मौसम हैं। उसमें भी गुरु चांद की तरह चमक सके, उस अंधेरे से घिरे वातावरण में भी रोशनी पैदा कर सके, तो ही गुरु है। इसलिए आषाढ़ की पूर्णिमा! वह गुरु की तरफ भी इशारा है उसमें और शिष्य की तरफ भी इशारा है। और स्वभावतः दोनों का मिलन जहां हो, वहीं कोई सार्थकता है।

ध्यान रखना, अगर तुम्हें यह समझ में आ जाए काव्य—प्रतीक, तो तुम आषाढ़ की तरह हो, अंधेरे बादल हो। न मालूम कितनी कामनाओं और वासनाओं का जल तुममें भरा है, और न मालूम कितने जन्मों- जन्मों के संस्कार लेकर तुम चल रहे हो, तुम बोझिल हो। तुम्हें तोड़ना है, तुम्हें चीरना है। तुम्हारे अंधेरे से घिरे हृदय में रोशनी पहुंचानी है। इसलिए पूर्णिमा!

चांद जब पूरा हो जाता है, तब उसकी एक शीतलता है। चांद को ही हमने गुरु के लिए चुना है। सूरज को चुन सकते थे, ज्यादा मौजूं होता, तथ्यगत होता। क्योंकि चांद के पास अपनी रोशनी नहीं है। इसे थोडा समझना। चांद की सब रोशनी उधार है। सूरज के पास अपनी रोशनी है। चांद पर तो सूरज की रोशनी का प्रतिफलन होता है। जैसे कि तुम दीए को आईने के पास रख दो, तो आईने में से भी रोशनी आने लगती है।

वह दीए की रोशनी का प्रतिफलन है, वापस लौटती रोशनी है। चांद तो केवल दर्पण का काम करता है, रोशनी सूरज की है।

हमने गुरू को सूरज ही कहा होता, तो बात ज्यादा तथ्यपूर्ण होती। मिश्रित कर दे। चांद शून्य है; उसके पास कोई रोशनी नहीं है, लेता और सूरज के पास प्रकाश भी महान है, विराट है। चांद के पास कोई बहुत बड़ा प्रकाश थोड़े ही है, बड़ा सीमित है; इस पृथ्वी तक आता है, और कहीं तो जाता नहीं। पर हमने सोचा है बहुत, सदियों तक, और तब हमने चांद को चुना है दो कारणों से। एक, गुरु के पास भी रोशनी अपनी नहीं है, परमात्मा की है।

वह केवल प्रतिफलन है। वह जो दे रहा है, अपना नहीं है; वह केवल निमित्तमात्र है, वह केवल दर्पण है।

तुम परमात्मा की तरफ सीधा नहीं देख पाते, सूरज की तरफ सीधा देखना बहुत मुश्किल है। देखो, तो अड़चन समझ में आ जाएगी। प्रकाश की जगह आंखें अंधकार से भर जाएंगी। परमात्मा की तरफ सीधा देखना असंभव है, आंखें फूट जाएंगी, अंधे हो जाओगे। रोशनी ज्यादा है, बहुत ज्यादा है, तुम सम्हाल न पाओगे, असह्य हो जाएगी। तुम उसमें टूट जाओगे, खंडित हो जाओगे, विकसित न हो पाओगे।

इसलिए हमने सूरज की बात छोड़ दी। वह थोड़ा ज्यादा है; शिष्य की सामर्थ्य के बिलकुल बाहर है। इसलिए हमने बीच में गुरु को लिया है। गुरु एक दर्पण है, पकड़ता है सूरज की रोशनी और तुम्हें दे देता है। लेकिन इस देने में रोशनी मधुर हो जाती है। इस देने में रोशनी की त्वरा और तीव्रता समाप्त हो जाती है। दर्पण को पार करने में रोशनी का गुणधर्म बदल जाता है। सूरज इतना प्रखर है, चांद इतना मधुर है!

इसलिए तो कबीर ने कहा है, गुरु गोविंद दोई खड़े, काके लागू पाय। किसके छुऊं पैर? वह घड़ी आ गई, जब दोनों सामने खड़े हैं। फिर कबीर ने गुरु के ही पैर छुए, क्योंकि बलिहारी गुरु आपकी, जो गोविंद दियो बताय। सीधे तो देखना संभव न होता। गुरु दर्पण बन गया। जो असंभवप्राय था, उसे गुरु ने संभव किया है, जो दूर आकाश की रोशनी थी, उसे जमीन पर उतारा है। गुरु माध्यम है। इसलिए हमने चांद को चुना।

गुरु के पास अपना कुछ भी नहीं है। कबीर कहते हैं, मेरा मुझमें कुछ नहीं। गुरु है ही वही जो शून्यवत हो गया है। अगर उसके पास कुछ है, तो वह परमात्मा का जो प्रतिफलन होगा, वह भी विकृत हो जाएगा, वह शुद्ध न होगा। चांद के पास अपनी रोशनी ही नहीं है जिसको वह मिला दे, है सूरज से, देता है तुम्हें। वह सिर्फ मध्य में है, माधुर्य को जन्मा देता है। सूरज कहना ज्यादा तथ्यगत होता, लेकिन ज्यादा सार्थक न होता। इसलिए हमने चांद कहा है। फिर सूरज सदा सूरज है, घटता—बढ़ता नहीं।

गुरु भी कल शिष्य था। सदा ऐसा ही नहीं था। बुद्ध से बुद्ध पुरुष भी कभी उतने ही तमस, अंधकार से भरे थे, जितने तुम भरे हो। सूरज तो सदा एक सा है। इसलिए वह प्रतीक जमता नहीं। गुरु भी कभी खोजता था, भटकता था, वैसे ही, उन्हीं रास्तों पर, जहां तुम भटकते हो, जहां तुम खोजते हो। वही भूलें गुरु ने की हैं, जो तुमने की हैं। तभी तो वह तुम्हें सहारा दे पाता है। जिसने भूलें ही न की हों, वह किसी को सहारा नहीं दे सकता। वह भूल को समझ ही नहीं सकता। जो उन्हीं रास्तों से गुजरा हो; उन्हीं अंधकारपूर्ण मार्गों में भटका हो, जहां तुम भटकते हो, उन्हीं गलत द्वारों पर जिसने दस्तक दी हो, जहां तुम देते हो; मधुशालाओं से और वेश्यागृहों से जो गुजरा हो; जिसने जीवन का सब विकृत और विकराल भी देखा हो, जिसने जीवन में शैतान से भी संबंध जोड़े हों—वही तुम्हारे भीतर की असली अवस्था को समझ सकेगा।

जब मुझे स्वप्न में संन्यास मिला!

हमारे सनातन धर्म के शास्त्रों में चार आश्रमों का वर्णन है,जिनसे क्रमशः हर पुरुष को गुज़रना चाहिए! --- ब्रह्मचर्य,गृहस्थ,वानप्रस्थ और संन्यास!(जो ब्रह्मचारी गृहस्थ में ना जाना चाहे,वो सीधे संन्यास ले सकता है!)...किंतु ब्रह्मवैवर्त पुराण(कृष्ण जन्म खंड,185.180) में स्पष्ट निर्देश है कि कलयुग में संन्यास लेना निषिद्ध/वर्जित है!इसका कारण यह है कि संन्यास के नियम बहुत कड़े/कठोर होते हैं और वर्तमान कलयुगी परिवेश में उनका यथावत पालन करना लगभग असम्भव है!...मैंने इस संदर्भ में एक बार अपने श्री गुरुदेव से पूछा था कि कलयुग में यदि संन्यास लेना वर्जित है,तो श्री शंकराचार्य,रामानुजाचार्य,मध्वाचार्य और चैतन्य महाप्रभु आदि महान आचार्यों ने संन्यास क्यों लिया!?!तब गुरुदेव ने बताया, "वो ईश्वर कोटि के आचार्य हैं!वो आचरण करके बताना चाहते थे कि निषेध आज्ञा के बावजूद कोई संन्यास ले,तो उसकी रहनी कैसी होनी चाहिए!?! उसका मानदंड कैसा होना चाहिए!?!"(श्री चैतन्य महाप्रभु काठ की बनी स्त्री को भी नहीं छूते थे,पैदल चलते थे,सुखसुविधा की किसी भी वस्तु का प्रयोग नहीं करते थे,आगामी कल के लिए कोई खाद्य सामग्री संग्रहित नहीं करते थे ; राजा से मिलने को उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया था!आजकल के अधकचरे संन्यासी इसके दशांश का भी आचरण नहीं करते!)

मुझे अजपा दीक्षा मिली हुई है!इसमें दीक्षा दान के समय ही सन्यास का बीज डाल दिया जाता है!इसलिए फिर भावी जीवन में कभी भी अनुष्ठानिक रूप से सन्यास लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती!जिस प्रकार समयानुसार सांप अपनी केंचुली छोड़ देता है,उसी प्रकार शनै शनै सांसारिक सबकुछ स्वतः छूट जाता है!...इसके अलावा मुझे व्यक्तिगत रूप से भी संन्यास लेने में कोई रुचि नहीं थी क्योंकि संन्यास लेने पर व्यक्ति सबका प्रणम्य हो जाता है(जबकि मैं तो सदा दास ही बना रहना चाहता हूं)! सबका प्रणम्य बनने से अहंकार बढ़ने की संभावना भी प्रबल हो जाती है!

किंतु 2021 के 18 मार्च की रात्रि को मैंने एक दीर्घकालिक जीवंत स्वप्न देखा,जिसमें बहुत सारे संतों के मध्य एक जटाधारी महात्मा ने मुझे विधिपूर्वक संन्यास दीक्षा प्रदान की!मेरे अनचाहे ही ये काम हो गया!...सुबह उठकर मैंने इसके बारे में फेसबुक पर पोस्ट डाली,तो गोरखपुर के एक वरिष्ठ गृहस्थ साधक ने कहा,₹नमन!आप सन्यासी तो जन्म से हैं!भले ही यह घटित अभी हुआ हो!कल ही मैंने भी इसे आपके प्रति अनुभव किया है!मैं हठात ही सोच रहा था आप के सन्यास के बारे में!...आप धन्य हैं भगवन!आपको शत शत नमन!अब आप मुझे नहीं कह सकते कि मैं उम्र में आपसे बड़ा हूँ!संन्यासी जगतगुरु होता है!अतः पहले हृदय भर कर मुझे आशीर्वाद दीजिए जिससे प्रभु के चरण कमल मैं करतलगत कर सकूं!नमन अजपा जप के महान साधक!₹...एक भक्त ने पूछा,₹अब कैसा परिवेश रहेगा गुरूजी आपका?आपसे भेंट तो होगी न गुरुजी!?!₹...मैंने कहा,₹ये सबकुछ तो बिना मेरे किसी प्रयास के अनायास ही हुआ है!...कुछ समय कथाओं से विराम लूँगा,और अपनी साधना पर ध्यान दूँगा!...आपसे मिलकर नामब्रह्म देने को मैं स्वयं लालायित हूँ!₹...एक ने कहा,₹आप तो पहले से ही सन्यासी हैं क्योंकि विवाह तो किया नही है!₹...मैंने कहा,₹केवल विवाह ना करने से व्यक्ति bachlelor कहला सकता है,सन्यासी नहीं!₹

संन्यासी की परिभाषा है --- सत + न्यासी! न्यास का अर्थ है --- स्पर्श! अतः जो सत्स्वरूप परमात्मा के सतत स्पर्श में रहे,वही संन्यासी है!अतः मैं भरसक प्रयास कर

ता हूं कि सदा अपने प्रभु के चिंतन मनन में ही संलग्न रहूं!

जानियें, क्या करें - गुरु पूर्णिमा के दिन

======================

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरू पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन गुरु पूजा का विधान है। गुरू पूर्णिमा वर्षा ऋतु के आरंभ में आती है। इस दिन से चार महीने तक परिव्राजक साधु-संत एक ही स्थान पर रहकर ज्ञान की गंगा बहाते हैं। ये चार महीने मौसम की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ होते हैं। न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दी। इसलिए अध्ययन के लिए उपयुक्त माने गए हैं। जैसे सूर्य के ताप से तप्त भूमि को वर्षा से शीतलता एवं फसल पैदा करने की शक्ति मिलती है, ऐसे ही गुरुचरण में उपस्थित साधकों को ज्ञान, शांति, भक्ति और योग शक्ति प्राप्त करने की शक्ति मिलती है।

यह दिन महाभारत के रचयिता कृष्ण द्वैपायन व्यास का जन्मदिवस भी है। व्यास जी ने ही चारों वेदों की भी रचना की थी। इस कारण उनका एक नाम वेद व्यास भी है। उन्हें आदिगुरु कहा जाता है और उनके सम्मान में गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा नाम से भी जाना जाता है।

गुरु पूर्णिमा के दिन ये करें -

* प्रातः घर की सफाई, स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर साफ-सुथरे वस्त्र धारण करके तैयार हो जाएं।
* घर के किसी पवित्र स्थान पर पटिए पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर 12-12 रेखाएं बनाकर व्यास-पीठ बनाना चाहिए।
*फिर हमें 'गुरुपरंपरासिद्धयर्थं व्यासपूजां करिष्ये' मंत्र से पूजा का संकल्प लेना चाहिए।
* तत्पश्चात दसों दिशाओं में अक्षत छोड़ना चाहिए।
* फिर व्यासजी, ब्रह्माजी, शुकदेवजी, गोविंद स्वामीजी और शंकराचार्यजी के नाम मंत्र से पूजा करना चाहिए।
*अब अपने गुरु अथवा उनके चित्र की पूजा करके उन्हें यथा योग्य दक्षिणा देना चाहिए।

गुरु पूर्णिमा पर यह भी है विशेष -

* गुरु पूर्णिमा पर व्यासजी द्वारा रचे हुए ग्रंथों का अध्ययन-मनन करके उनके उपदेशों पर आचरण करना चाहिए।
*यह पर्व श्रद्धा से मनाना चाहिए, अंधविश्वास के आधार पर नहीं।
* इस दिन वस्त्र, फल, फूल व माला अर्पण कर गुरु को प्रसन्न कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए।
* गुरु का आशीर्वाद सभी-छोटे-बड़े तथा हर विद्यार्थी के लिए कल्याणकारी तथा ज्ञानवर्द्धक होता है।
*इस दिन केवल गुरु (शिक्षक) ही नहीं, अपितु माता-पिता, बड़े भाई-बहन आदि की भी पूजा का विधान है।

संघर्ष केवल वही सफल हो सकता है जिस संघर्ष में भगवत-प्राप्ति/भगवत-प्रेम हो बाकी सभी संघर्ष हमें अंततः असफलता/पतन की ही ओर ले जाते हैं।

इस जीवन में कुछ बड़ा/सफल बनना है तो भगवत–प्रेम का संघर्ष करें। इस ओर किये गये छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा प्रयास/साधना अंततः निसंदेह सफल होती है। ध्यान रहे कि जहां राम है वहीं आराम है अन्यथा चींटी से लेकर राक्षस तक सभी संघर्षरत होते हैं लेकिन जितना संघर्ष करते हैं उतने ही और व्यथित होते जाते हैं। वास्तव में भविष्य उनके लिए है जो सपनों की सुंदरता में विश्वास करते हैं। जबकि सच/सत्य की प्रवृत्ति हमारे भीतर परिस्थितियों का सामना करने का साहस पैदा करती है।

उपयोगी घरेलू जानकारी :-

सुबह दोपहर और शाम को शीतल जल से मुख एव आखों में पानी के छींटे मारने से आँख के रोग नही आते।

उबला पानी पीने से तीनों दोष नष्ट होते है, किन्तु यदि यही पानी बासी हो जाये अर्थात 12 घण्टे से अधिक रखा रहे तो तीनों दोष बढ़ते है।

पानी उबालने पर यदि 3/4 भाग शेष बचे तो यह वातनाशक है, यदि 1/2 भाग शेष बचे तो पित्तनाशक है ,यदि 1/4 शेष बचे तो कफनाशक है।

जिस जल में गर्म लोहा या गर्म पत्थर ठंडा किया गया हो वह औषधि है।

बकरी का दूध सर्वदोषनाशक है, माँ के पर्याय पर बकरी का दूध उपयुक्त है।

भैंस के दूध में त्रिकुट चूर्ण मिलाकर पीने से अधिक लाभ है।

बकरी का मूत्र बाबासीर में सर्वोत्तम है।

बकरी और गाय का मूत्र ही पीने योग्य है सर्वोत्तम है

मूंगदाल सभी दालों में उत्तम है।

उड़द दाल दालों की राजा है, लेकिन इसे किसी अन्य दाल के साथ मिलाकर बनाना जहर समान है।

दालों का सेवन रात्रि में करना विष के सेवन के समान है।

काले चने का सेवन भिगोकर, पकाकर, भूनकर तीनो अवस्था मे उपयुक्त है।

सफेद चनों का सेवन हानिकारक है।

कांसे के पात्र में रखा हुआ घी का सेवन विष है।

दही व छाछ के साथ केला खाना विष है।

गुड़, शहद, काली मिर्च के साथ पूरी खाना विष के समान है।

उड़द की दाल, दही, दूध के साथ मूली का सेवन न करे।

भोजन के पहले मीठा और अंत मे कसाय, कड़वा या खट्टा खाना चहिए।

पान के पत्तो का सेवन सबसे सुंदर औषधि है..

गुरु पूर्णिमा आज

गुरु पूर्णिमा आषाढ़ मास की पूर्णिमा को कहते हैं और इस साल गुरु पूर्णिमा का पर्व 10 जुलाई को मनाया जाएगा। इस दिन भगवान विष्णु की विधि विधान से पूजा की जाती है। गुरु पूर्णिमा के दिन अपने-अपने घरों में सत्य नारायण भगवान की कथा करवाने का विशेष महत्व माना जाता है। इस दिन महर्षि वेद व्यासजी का जन्म भी हुआ था। इसलिए इसे व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। मान्यता है कि इस दिन सत्य नारायण भगवान की कथा करने से आपके घर में सुख समृद्धि का वास होता है और घर से हर प्रकार की नेगेटिव एनर्जी दूर होती है।

गुरु पूर्णिमा की तिथि

==================

वैदिक पंचांग के अनुसार, गुरु पूर्णिमा 10 जुलाई को मनाई जाएगी। पूर्णिमा तिथि 10 जुलाई को रात 1 बजकर 36 मिनट पर शुरू होगी और यह 11 जुलाई को रात 2 बजकर 06 मिनट पर खत्म होगी। इसलिए गुरु पूर्णिमा 2025, 10 जुलाई को मनाई जाएगी।

गुरु पूर्णिमा का महत्व

====================

पौराणिक मान्यताओं में बताया गया है कि लगभग 3000 ई.पूर्व, आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को वेद व्यास जी का जन्म हुआ था। इसलिए हर साल इस दिन को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाते हैं। यह दिन वेद व्यास जी को समर्पित है। माना जाता है कि इसी दिन उन्होंने भागवत पुराण का ज्ञान दिया था। गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं। साथ ही पूर्णिमा का दिन होने की वजह से इस दिन विष्णु भगवान और मां लक्ष्मी की पूजा की जाती है। इस दिन गुरुओं का सम्मान किया जाता है और साथ ही उन्हें गुरु दक्षिणा भी दी जाती है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन गुरु और बड़ों का सम्मान करना चाहिए। जीवन में मार्गदर्शन के लिए उनका आभार व्यक्त करना चाहिए, गुरु पूर्णिमा पर व्रत, दान और पूजा का भी महत्व है। व्रत रखने और दान करने से ज्ञान मिलता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

गुरु पूर्णिमा की पूजा विधि

======================

गुरु पूर्णिमा पर अगर आप पंडितजी को बुलाकर सत्यनारायण भगवान की कथा करवा पाने में असमर्थ हैं तो चिंता न करें। आप भगवान विष्णु की पूजा स्वयं करके भी शुभ फल पा सकते हैं। भगवान विष्णु की पूजा में तुलसी, धूप, दीप, गंध, पुष्प और पीले फल चढ़ाएं। श्रीहर का स्मरण करें और अपनी मनोकामना बताएं। भक्ति भाव से पूजा करना जरूरी है। पूजा के बाद भगवान को अलग-अलग तरह के पकवानों का भोग लगाएं और प्रणाम करें और फिर भोग को प्रसाद के रूप में सभी लोगों में बांट दें।

क्या आपको अपने गोत्र की असली शक्ति का पता है?

न कोई अनुष्ठान। न कोई अंधविश्वास। यह आपका प्राचीन कोड है।
इस पूरे थ्रेड को ऐसे पढ़िए जैसे आपका अतीत इसी पर निर्भर करता हो।
गोत्र आपका उपनाम नहीं है। यह आपकी आध्यात्मिक डीएनए है।
आइए जानते हैं सबसे अजीब बात क्या है?
हम में से ज्यादातर लोग यह भी नहीं जानते कि हमारा गोत्र क्या है।
हम सोचते हैं यह तो बस वो लाइन है जो पंडितजी पूजा में बोलते हैं। लेकिन ये उससे कहीं ज़्यादा है।
गोत्र का मतलब है — आप किस ऋषि के मन से जुड़े हुए हैं।
खून से नहीं। बल्कि विचार, ऊर्जा, तरंग और ज्ञान से।
हर हिंदू आध्यात्मिक रूप से किसी एक ऋषि से जुड़ा हुआ है। वो ऋषि आपके बौद्धिक पूर्वज हैं। उनका ज्ञान, उनका मानसिक स्वरूप, उनकी आंतरिक ऊर्जा — ये सब आप में प्रवाहित होती है।
गोत्र का मतलब जाति नहीं है।
आजकल लोग इसे गड़बड़ा देते हैं।
गोत्र का ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र से कोई लेना-देना नहीं है। यह जातियों से पहले, उपनामों से पहले, यहाँ तक कि राजाओं से भी पहले से है।
यह सबसे प्राचीन पहचान प्रणाली थी — शक्ति नहीं, ज्ञान के आधार पर।
हर किसी का गोत्र होता था — यहां तक कि ऋषि भी अपने सच्चे शिष्यों को गोत्र देते थे। यह सीख के बल पर अर्जित होता था।
गोत्र कोई लेबल नहीं है। यह एक आध्यात्मिक विरासत की मोहर है।
हर गोत्र एक ऋषि से आता है — एक सुपरमाइंड से।
मान लीजिए आपका गोत्र वशिष्ठ है।
तो इसका मतलब आपके पूर्वज ऋषि वशिष्ठ थे — वही जिन्होंने भगवान राम और राजा दशरथ को मार्गदर्शन दिया था।
इसी तरह, भारद्वाज गोत्र?
आप उस ऋषि से जुड़े हैं जिन्होंने वेदों के बड़े भाग लिखे और योद्धाओं व विद्वानों को प्रशिक्षित किया।
कुल मिलाकर 49 प्रमुख गोत्र हैं। हर एक ऐसे ऋषि से जुड़ा है जो खगोल- शास्त्री, चिकित्सक, योद्धा, मंत्र विशेषज्ञ या प्रकृति वैज्ञानिक थे।
बुज़ुर्ग एक ही गोत्र में विवाह क्यों मना करते थे?
अब आती है वो बात जो स्कूल में नहीं पढ़ाई जाती:-
प्राचीन भारत में गोत्र का उपयोग जेनेटिक लाइन (वंशानुक्रम) को ट्रैक करने के लिए किया जाता था।
गोत्र पितृवंश से चलता है अर्थात पुत्र ऋषि की वंशरेखा को आगे बढ़ाता है।
इसलिए यदि एक ही गोत्र के दो व्यक्ति विवाह करें, तो वे आनुवंशिक रूप से भाई-बहन जैसे होते हैं। ऐसे बच्चों में मानसिक और शारीरिक दोष होने की संभावना रहती है।
गोत्र प्रणाली = प्राचीन भारतीय डीएनए विज्ञान।
और हमें ये हज़ारों साल पहले पता था — पश्चिमी विज्ञान के जेनेटिक्स से पहले।
गोत्र = आपका मानसिक प्रोग्रामिंग।
अब इसे निजी बनाते हैं।
कुछ लोग जन्म से विचारशील होते हैं। कुछ में गहरी आध्यात्मिक भूख होती है। कुछ को प्रकृति में शांति मिलती है। कुछ स्वाभाविक नेता या सत्य-साधक होते हैं।
क्यों?
क्योंकि आपके गोत्र ऋषि का मन अभी भी आपकी प्रवृत्तियों को आकार देता है।
जैसे आपका मन आज भी उसी ऋषि की तरंगों से ट्यून है — जैसे वह सोचते, महसूस करते, प्रार्थना करते और शिक्षा देते थे।
यदि आपका गोत्र किसी योद्धा ऋषि से है, तो आपमें साहस की भावना होगी।यदि वह किसी चिकित्सक ऋषि से है, तो आप आयुर्वेद या चिकित्सा की ओर आकर्षित होंगे।
यह कोई संयोग नहीं है — यह गहरी प्रोग्रामिंग है।
गोत्र का उपयोग शिक्षा को व्यक्तिगत बनाने में होता था।
प्राचीन गुरुकुलों में सबको एक जैसा नहीं पढ़ाया जाता था।
गुरु का पहला प्रश्न होता था — बेटा, तुम्हारा गोत्र क्या है? क्यों? क्योंकि इससे पता चलता था कि छात्र किस तरह से सीखता है। कौन सी विद्या उसके लिए उपयुक्त है। कौन से मंत्र उसकी ऊर्जा से मेल खाते हैं।
अत्रि गोत्र का छात्र ध्यान और मंत्र में प्रशिक्षित होता।कश्यप गोत्र का छात्र आयुर्वेद में गहराई तक जाता।
गोत्र सिर्फ पहचान नहीं था — यह सीखने की शैली और जीवन पथ था।
अंग्रेजों ने इसका मज़ाक उड़ाया। बॉलीवुड ने हँसी बनाई। और हम भूल गए।
जब अंग्रेज आए, उन्होंने इस प्रणाली को अंधविश्वास कहा। वे गोत्र को समझ नहीं सके — इसलिए उसे बकवास बता दिया।
बॉलीवुड ने फिर मजाक बनाया। पंडितजी फिर गोत्र पूछ रहे हैं! — जैसे यह कोई बेकार पुरानी बात हो।
और धीरे-धीरे, हमने अपने दादाजी - दादीजी या नानाजी - नानीजी से पूछना बंद कर दिया। हमने अपने बच्चों को बताना छोड़ दिया।
सिर्फ 100 साल में, 10,000 साल पुरानी व्यवस्था गायब हो रही है।
उन्होंने इसे मारा नहीं। हमने इसे मरने दिया।
यदि आप अपना गोत्र नहीं जानते — आपने एक नक्शा खो दिया है।
कल्पना कीजिए कि आप एक प्राचीन शाही परिवार के सदस्य हैं — लेकिन अपना उपनाम भी नहीं जानते।
यही गंभीरता है।
आपका गोत्र आपके पूर्वजों का जीपीएस है — जो आपको मार्ग दिखाता है:
सही मंत्र, सही अनुष्ठान, सही ऊर्जा उपचार, सही आध्यात्मिक मार्ग, विवाह में सही मेल। इसके बिना, हम अपने ही धर्म में अंधे होकर चल रहे हैं।
गोत्र की परंपराएँ "सिर्फ दिखावा" नहीं थीं।
जब पंडित जी पूजा में आपका गोत्र बोलते हैं — वो सिर्फ औपचारिकता नहीं कर रहे। वो आपको ऋषि की ऊर्जा से जोड़ रहे हैं। आपकी आध्यात्मिक वंश परंपरा को बुला रहे हैं। ताकि वह साक्षी बने और आशीर्वाद दे।
इसीलिए संकल्प में गोत्र बोलना महत्वपूर्ण है — जैसे कहा जा रहा हो।
मैं, भारद्वाज ऋषि का वंशज, पूर्ण आत्म - जागरूकता के

साथ ईश्वर से सहायता मांगता हूँ।
यह सुंदर है। पवित्र है। और सच्चा है।
अपने गोत्र को फिर से जानिए — इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। अपने माता-पिता से पूछिए। अपने दादा-दादी या नाना-नानी से पूछिए। ज़रूरत हो तो शोध कीजिए। लेकिन इस हिस्से को जाने बिना न जिएं।
इसे लिख लीजिए। अपने बच्चों को बताइए। गर्व से कहिए।
आप सिर्फ 1990 या 2000 में जन्मे कोई आम व्यक्ति नहीं हैं। आप एक अनंत ज्वाला के वाहक हैं, जिसे हजारों साल पहले किसी ऋषि ने प्रज्वलित किया था।
आप उस कहानी का अभी तक का अंतिम अध्याय हैं — जो महाभारत, रामायण, यहां तक कि समय की गिनती शुरू होने से भी पहले शुरू हुई थी।
आपका गोत्र आपकी आत्मा का भुलाया हुआ पासवर्ड है।
आज के युग में हम वाई-फाई पासवर्ड याद रखते हैं, ईमेल लॉगिन्स, नेटफ्लिक्स कोड लेकिन हम अपना सबसे प्राचीन पासकोड भूल जाते हैं — अपना गोत्र।
वह एक शब्द, एक पूरी धारा खोल सकता है — पूर्वजों का ज्ञान, मानसिक प्रवृत्तियाँ, कर्मिक स्मृतियाँ, यहां तक कि आपकी आध्यात्मिक कमज़ोरियाँ और ताकतें।
यह सिर्फ एक लेबल नहीं — एक चाबी है। आप या तो इसका उपयोग करते हैं या इसे खो देते हैं।
महिलाएं विवाह के बाद अपना गोत्र "खोती" नहीं हैं — वे उसे चुपचाप संभालती हैं।
बहुत लोग मानते हैं कि महिलाएं विवाह के बाद अपना गोत्र बदल देती हैं। लेकिन सनातन धर्म बहुत सूक्ष्म है। श्राद्ध जैसे अनुष्ठानों में भी, स्त्री का गोत्र उसके पिता के वंश से लिया जाता है। क्यों? क्योंकि गोत्र वाई - क्रोमोसोम (पुरुष वंश) से चलता है।
स्त्रियाँ उस ऊर्जा को धारण करती हैं, लेकिन आनुवंशिक रूप से आगे नहीं बढ़ातीं।
इसलिए नहीं — स्त्री का गोत्र विवाह के बाद समाप्त नहीं होता। वह उसमें जीवित रहता है।
देवता भी गोत्र नियमों का पालन करते थे। रामायण में जब भगवान श्रीराम और सीता का विवाह हुआ — तब भी उनके गोत्र की जाँच की गई थी।
राम: इक्ष्वाकु वंश, वशिष्ठ गोत्र
सीता: जनक की पुत्री, कश्यप गोत्र वंश
उन्होंने सिर्फ प्रेम के नाम पर विवाह नहीं किया। दिव्य रूपों ने भी धर्म का पालन किया।
यह प्रणाली कितनी पवित्र थी — और आज भी है।
गोत्र और प्रारब्ध कर्म का गहरा संबंध है
क्या कभी ऐसा लगा है कि कुछ आदतें, प्रवृत्तियाँ, इच्छाएँ — बचपन से ही आपके अंदर हैं?
यह आपके प्रारब्ध कर्म का हिस्सा हो सकता है — जो इस जीवन में फल देने लगे हैं।
और गोत्र इस पर प्रभाव डालता है।
हर ऋषि की अपनी कर्मिक प्रवृत्तियाँ थीं। आप, उनकी ऊर्जा को लेकर, उन्हीं कर्मों की ओर आकर्षित हो सकते हैं — जब तक आप उसे तोड़ने का संकल्प न लें।
गोत्र जानना = अपने कर्म पथ को समझना और शुद्ध करना।
हर गोत्र का अपना देवता और बीज मंत्र होता है। गोत्र सिर्फ मानसिक वंश नहीं है — ये विशिष्ट देवताओं और बीज मंत्रों से जुड़े होते हैं, जो आपकी आत्मा की आवृत्ति से मेल खाते हैं।
कभी ऐसा लगा कि कोई मंत्र आप पर असर नहीं कर रहा?
शायद आप अपने फोन को गलत चार्जर से चार्ज करने की कोशिश कर रहे हैं।
सही मंत्र + आपका गोत्र = आध्यात्मिक करंट का प्रवाह।
यह जानना आपकी साधना, ध्यान और उपचार की शक्ति को 10 गुना बढ़ा सकता है।
जब भ्रम हो — गोत्र आपकी आंतरिक दिशा है
आज की दुनिया में हर कोई खोया हुआ है।
जीवन का उद्देश्य, रिश्ते, करियर, धर्म — हर चीज़ में उलझन है।
लेकिन यदि आप चुपचाप बैठें और अपने गोत्र, अपने ऋषि, अपनी पूर्वज प्रवृत्तियों पर ध्यान करें — तो आंतरिक स्पष्टता मिलने लगेगी।
आपके ऋषि उलझन में नहीं जीते थे। उनका विचार प्रवाह अभी भी आपकी नसों में बह रहा है।
उससे जुड़ जाइए — और खोए हुए नहीं, जड़ों से जुड़े महसूस करने लगेंगे।
हर महान हिंदू राजा गोत्र का सम्मान करता था
चंद्रगुप्त मौर्य से लेकर हर्षवर्धन, शिवाजी महाराज तक — सभी राजाओं के पास राजगुरु होते थे, जो कुल, गोत्र और संप्रदाय का रिकॉर्ड रखते थे।
यहां तक कि राजनीति और युद्ध के निर्णय भी गोत्र संबंधों, मेलों और रक्त संबंधों के आधार पर होते थे।
क्यों? क्योंकि गोत्र को नजरअंदाज करना ऐसा था जैसे अपनी रीढ़ को नजरअंदाज करना।
गोत्र प्रणाली ने महिलाओं को शोषण से बचाया।
इसे "पिछड़ा" कहने से पहले समझिए — प्राचीन काल में गोत्र का पालन अनाचार को रोकने, कुल की मर्यादा बनाए रखने और लड़कियों की गरिमा की रक्षा के लिए होता था।
यहां तक कि यदि कोई महिला युद्ध में बिछड़ जाए या अगवा हो जाए — तो उसका गोत्र उसे पहचानने और सम्मान दिलाने में मदद करता था।
यह पिछड़ापन नहीं — यह दूरदर्शी व्यवस्था थी। गोत्र = ब्रह्मांडीय खेल में आपकी भूमिका।
हर ऋषि केवल ध्यान नहीं करते थे — वे ब्रह्मांड के लिए कर्तव्य निभाते थे।
कोई शरीर के उपचार पर केंद्रित था। कोई ग्रह-नक्षत्रों को समझ रहा था।
कोई धर्म की रक्षा कर रहा था, कोई न्याय प्रणाली बना रहा था।
आपका गोत्र उस उद्देश्य की गूंज अपने अंदर रखता है।
यदि जीवन में खालीपन लगता है — शायद आपने अपनी ब्रह्मांडीय भूमिका को भूल दिया है।
गोत्र खोजिए। आप खुद को पा लेंगे।
यह धर्म की बात नहीं — यह पहचान की बात है।
चाहे कोई नास्तिक हो या सिर्फ आध्यात्मिक या फिर अनुष्ठानों से उलझन में — गोत्र फिर भी मायने रखता है।
क्योंकि यह धर्म से परे है।यह पूर्वज चेतना है। यह भारत की वह गहराई है, जो ज़बरदस्ती नहीं करती — बस चुपचाप मार्गदर्शन देती है।
आपको इसमें "विश्वास" करने की ज़रूरत नहीं। बस इसे याद रखने की ज़रूरत है।
अंतिम शब्द:
आपका नाम भले ही आधुनिक हो।
आपकी जीवनशैली भले ही वैश्विक हो।
लेकिन आपका गोत्र समय से परे है।
और यदि आप इसे अनदेखा करते हैं, तो आप उस नदी की तरह हैं — जो नहीं जानती कि वह कहाँ से आई है।
गोत्र आपका "अतीत" नहीं है यह भविष्य के ज्ञान का पासवर्ड है।

गुजरात में पुल हादसा दुखद, बीजेपी के भ्रष्टाचार की कीमत जान गंवा कर चुका रही जनता- केजरीवाल

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली/गुजरात। आम आदमी पार्टी ने गुजरात के महीसागर नदी पर बने पुल के गिरने से जान गंवाने वाले लोगों के प्रति गहरा दुख व्यक्त किया है। साथ ही, बीजेपी के 30 साल के भ्रष्ट शासन व्यवस्था पर भी सवाल खड़ा किया है। ''आप'' के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल और गुजरात प्रभारी गोपाल राय समेत अन्य बड़े नेताओं ने इस दुर्घटना पर शोक जताते हुए इसकी गहन जांच कराने और जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की मांग की है, ताकि गुजरात में बार-बार हो रहे ऐसे हादसों पर रोक लग सके। उधर, ''आप'' गुजरात के स्थानीय कार्यकर्ता सूचना मिलते ही घटना स्थल पर पहुंच गए और बचाव अभियान में लगे प्रशासन की मदद में जुट गए।

''आप'' के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने एक्स पर कहा कि गुजरात में हुआ यह हादसा बेहद दुखद और पीड़ादायक है। ईश्वर दिवंगत आत्माओं को शांति दें और शोक संतप्त परिवारों को इस अपार दुख को सहने की शक्ति दें। घायलों के जल्द स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं। लेकिन इस समय एक अहम सवाल भी पूछना ज़रूरी है।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि पिछले 30 सालों से गुजरात की सत्ता में बैठी बीजेपी क्या यह बताएगी कि बार-बार ऐसे घटिया और जानलेवा पुल गुजरात में कैसे बन रहे हैं, जो भरभराकर गिर जाते हैं? सत्ता के संरक्षण में हो रही इस लापरवाही और भ्रष्टाचार की कीमत आम लोगों को अपनी जान देकर चुकानी पड़ती है। इस दुर्घटना के ज़िम्मेदार चाहे कितने भी प्रभावशाली और रसूखदार लोग क्यों न हों, उनके खिलाफ सख़्त से सख़्त कार्रवाई होनी चाहिए। तभी हम भविष्य में ऐसे हादसों को रोक पाएंगे और मासूम लोगों की जान बचा पाएंगे।

उधर, आम आदमी पार्टी के गुजरात प्रभारी गोपाल राय ने एक्स पर कहा कि गुजरात में भाजपा का तथाकथित विकास मॉडल फिर गिर गया। वडोदरा-आणंद को जोड़ने वाला पुल बीच से टूटा, कई लोगो समेत गाड़िया नदी में गिर गई। बीते दिनों मोरबी पुल हादसा हो, या राजकोट अग्निकांड, या फिर सूरत का तक्षशिला हादसा, हर बार भाजपा की लापरवाही और भ्रष्टाचार ने सैकड़ों मासूमों की जान ली है। गुजरात अब और नहीं सहेगा, बदल के रहेगा।

"आप" के वरिष्ठ नेता व गुजरात प्रदेश अध्यक्ष ईशुदान गढ़वी ने एक्स पर पोस्ट कर कहा कि वडोदरा जिले के पादरा में एक बड़ा हादसा हुआ है। वडोदरा और आणंद को जोड़ने वाला गंभीरा पुल टूट गया है और कई वाहन नदी में गिर गए हैं। आम आदमी पार्टी कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि वे घटनास्थल पर पहुंचें और बचाव अभियान में सहयोग करें।

ईशुदान गढ़वी ने गुजरात की बीजेपी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि बीजेपी सरकार का क्या कमाल का जज्बा है। मुख्यमंत्री कहते हैं कि 23 में से एक पुल ढह गया और फिर भी सरकार इतने लोगों की मौत के बाद भी अपनी लापरवाही और भ्रष्टाचार छुपा रही है? स्थानीय लोगों द्वारा बार-बार चिंता जताए जाने के वीडियो मौजूद हैं, फिर भी सरकार जांच का नाटक करेगी? मृतक परिवार हमारे राज्य के हैं और हमारे परिवार हैं। भाजपा सरकार को ऐसे हादसों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

शीशमहल घोटाले सहित केजरीवाल के दर्जनों घोटाले एक से एक बड़े हैं - वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की अरविंद केजरीवाल द्वारा खुद के लिए नोबल पुरस्कार की मांग करना हास्यास्पद है एक भद्दा मजाक है।

जैसा की हम जानते हैं की केजरीवाल युवा काल से ही विदेशी फंडों से देश में आराजकता फैलाते आये हैं -- उनको मैगेसय अवार्ड मिलना, उनके अमरीका की फोर्ड फाउंडेशन से रिश्ते सब संदेहस्पद रहे हैं।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की दिल्ली वाले केजरीवाल की नोबल पुरस्कार की चाहना को सुन कर स्तब्ध हैं, केजरीवाल जान लें की उन्हे नोबल पुरस्कार अवश्य मिलता यदि अकर्मण्यता, आराजकता एवं भ्रष्टाचार के लिए पुरस्कार देने की श्रेणी होतीं।

केजरीवाल ध्यान रखें की दिल्ली वाले उनके महिला विरोधी कृत्यों जैसे असहाय महिला पेंशन घोटाला, महिला सुरक्षा से जुड़ पैनिक बटन घोटाला, महिला सहयोगियों से मारपीट के कृत्य, दिल्ली में जलबोर्ड घोटाला, निजी कम्पनियों से मिलकर किये घोटाले, परिवहन घोटाले, लोकनिर्माण विभाग में साढ़ू के साथ किए घोटाले, स्कूल रूम घोटाले, कोविड़काल घोटाले, जासूसी घोटाले शराब पॉलिसी घोटाले के आलावा शीशमहल निर्माण घोटाले को भूले नही है पर हमे केजरीवाल के लिए खेद है की इन घोटालों के लिए नोबल पुरस्कार नही जेल मिलती है।

वैसे दिल्ली वाले उनकी गणतंत्र दिवस 2014 एवं स्वाधीनता दिवस 2014 से पूर्व एवं उपराज्यपाल निवास मे घुस कर की आराजकता भी याद है पर इनके लिए भी नोबल पुरस्कार नही मिलता, इन सबकी सजा दिल्ली वाले फरवरी 2025 में दे चुके।

दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता के बंगले का नवीनीकरण करने के टेंडर को रद्द कर दिया गया

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता के सरकारी आवास पर 60 लाख रुपये में नवीनीकरण का काम होना था। इसके लिए टेंडर भी निकाला गया था। अब जानकारी सामने आई है कि इस टेंडर को रद कर दिया गया है।

टेंडर के रद्द करने की वजह, प्रशासनिक कारण बताई गई है। बंगला की सजावट और साज सज्जा के लिए इस टेंडर के तहत 60 लाख रुपयों को इस तरह खर्च किया जाना था। इसमें दो टन के 24 एसी, 5 बड़े एचडी टीवी, 6 गीजर और झूमर समेत तमाम तरह की लाइटें लगाई जानी थीं। इस रेनोवेशन में बड़ी मात्रा में इलेक्ट्रिकल वायरिंग समेत तमाम तरह के बिजली से संबंधित काम होने थे। इसका कुल खर्च 5940170 रुपये होना था, जिसे प्रशासनिक कारणों का हवाला देते हुए रद्द कर दिया गया है।

जीआईआईएस में फ्लैगशिप स्कॉलरशिप प्रोग्राम के जरिए 10 विद्यार्थियों को पूर्ण वित्तपोषित वैश्विक शिक्षा प्रदान की गई

मुख्य संवाददाता

नईदिल्ली। प्रतिभा, महत्वाकांक्षा और क्षमता का जश्न मनाने के लिए, ग्लोबल इंडियन इंटरनेशनल स्कूल (जीआईआईएस) ने 9 जुलाई 2025 को एरोसिटी, दिल्ली में ग्लोबल सिटीजन स्कॉलरशिप (जीसीएस) प्राप्तकर्ताओं के नए समूह का सम्मान करने के लिए एक भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया। यह प्रतिष्ठित जीसीएस प्रोग्राम का 18वां संस्करण था।

इस वर्ष के समूह में 10 असाधारण विद्यार्थी शामिल हैं - आठ भारत से और दो मध्य पूर्व से - जिन्हें उनकी उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धियों, नेतृत्व क्षमताओं और उत्कृष्टता के प्रति समर्पण के लिए सम्मानित किया गया है।

2008 में स्थापित, जीसीएस, जीआईआईएस की प्रमुख पहल है, जो शैक्षणिक समानता और गुणवत्ता के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह छात्रवृत्ति कक्षा 11वीं और 12वीं जैसे अहम वरिष्ठ माध्यमिक (सीनियर सैकिंडरी) शिक्षा वर्षों के लिए 100 प्रतिशत ट्यूशन फीस, बोर्डिंग और रहने के खर्च को कवर करती है, जिससे छात्रों को सिंगापुर के जीआईआईएस स्मार्ट कैम्पस में सफल होने में मदद मिलती है। अपने विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे, शीर्ष स्तरीय सुविधाओं और अत्यधिक कुशल शिक्षकों के लिए जाना जाने वाला, जीआईआईएस विद्यार्थियों को सीबीएसई और आईबीडीपी पाठ्यक्रमों के बीच चयन करने का विकल्प देता है। इस प्रमुख कार्यक्रम के तहत, विद्यार्थियों को पूरी अवधि के लिए शून्य ट्यूशन फीस के साथ बोर्डिंग, लॉजिंग और एक उदार वजीफा भी मिलता है। कुल निवेश, दो साल के लिए, प्रति विद्यार्थी 1 करोड़ रुपये है, जो पूरी तरह से जीसीएस प्रोग्राम द्वारा वित्त पोषित है।

ग्लोबल स्कूल्स ग्रुप के अकादमिक निदेशक प्रमोद त्रिपाठी ने कहा, ''ग्लोबल सिटीजन स्कॉलरशिप वित्तीय सहायता से कहीं आगे जाती है; यह सपनों को सशक्त बनाती है। हम भविष्य के लीडरों में निवेश कर रहे हैं - ऐसे विद्यार्थी जो दूरदृष्टि, प्रेरणा और प्रतिबद्धता के साथ न केवल अपने करियर में उत्कृष्टता प्राप्त करना चाहते हैं बल्कि समाज में सार्थक योगदान भी देना चाहते हैं। हमें ऐसी युवा प्रतिभाओं को सहयोग देने पर गर्व है जो वैश्विक रूप से सोचने और उद्देश्यपूर्ण तरीके से कार्य करने का साहस रखते हैं।''

प्रत्येक प्राप्तकर्ता को एक कठोर कई चरणों वाली मूल्यांकन प्रक्रिया से गुजरना पड़ा, जिसमें न केवल अकादमिक प्रदर्शन का मूल्यांकन किया गया, बल्कि नेतृत्व क्षमता, सामुदायिक सहभागिता, समस्या-समाधान कौशल और सकारात्मक परिवर्तन लाने के प्रति समर्पण का भी मूल्यांकन किया गया।

छात्रवृत्ति पाने वालों में से एक, *असम के मोरन टाउन की निष्ठा निर्मिता महंता* ने छात्रवृत्ति के प्रभाव पर कहा, ''इस अवसर ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी है। यह किसी प्रतिष्ठित संस्थान में अध्ययन करने से कहीं बढ़कर है; यह एक वैश्विक समुदाय का हिस्सा बनने के बारे में है जो हमें बड़े सपने देखने, उच्च लक्ष्य रखने और अच्छी सेवा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।''

इस समारोह में विद्यार्थियों, अभिभावकों और गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया, जिसमें शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति को रेखांकित किया गया और पृष्ठभूमि या स्थान की परवाह किए बिना दुनिया भर के प्रतिभाशाली छात्रों के लिए अवसर पैदा करने के लिए जीआईआईएस की प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई।

ग्लोबल स्कूल्स ग्रुप के डिप्टी सीओओ राजीव कौल ने कहा, ''हर नए समूह के साथ, ग्लोबल सिटीजन स्कॉलरशिप इस बात को फिर से परिभाषित करती है कि जब अवसर और क्षमता एक दूसरे से मिलते हैं तो क्या संभव है। जब ये 10 प्रतिभाशाली विद्वान विद्यार्थी अपनी यात्रा पर निकलेंगे तो वे न केवल अपने परिवारों और समुदायों की आकांक्षाओं को साथ लेकर चलेंगे बल्कि जीआईआईएस द्वारा सिखाए गए नेतृत्व, सहानुभूति और उत्कृष्टता के स्थायी मूल्यों को भी साथ लिए होंगे।''

तरुण चुग ने गुरु पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर भगवान वाल्मीकि मंदिर में स्वामी कृष्ण विद्यार्थी जी से आशीर्वाद लिया

– भगवान वाल्मीकि समूचे समाज के पथप्रदर्शक हैं : चुग

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री व अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय प्रभारी तरुण चुग आज दिल्ली के ऐतिहासिक पंचकुइयां रोड स्थित प्राचीन वाल्मीकि मंदिर पहुंचे, जहां उन्होंने महंत पीठाधीश्वर परम श्रद्धेय स्वामी कृष्ण विद्यार्थी महाराज की तिलक लगा कर चरण स्पर्श कर गुरु पूजा किया और आशीर्वाद लिया।

स्वामी ने चुग का स्वागत मंत्रोच्चार के साथ किया और उन्हें भगवान महर्षि वाल्मीकि जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करवाया। इसके पश्चात अंगवस्त्र, श्रीफल व मिष्ठान देकर उनका सम्मान किया। चुग ने स्वामी जी के चरण स्पर्श कर समाज व राष्ट्र के लिए आशीर्वाद लिया।

इस अवसर पर चुग ने कहा, "भगवान वाल्मीकि सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणा हैं। उनका जीवन, उनका विचार और उनका मार्गदर्शन, आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'सबका साथ, सबका विकास' के संकल्प का आधार है।"

स्वामी कृष्ण विद्यार्थी महाराज ने भी वाल्मीकि समाज के उत्थान के लिए बीते 11 वर्षों में हुए ऐतिहासिक कार्यों की सराहना की और प्रधानमंत्री मोदी का धन्यवाद किया। उन्होंने विशेषकर दिल्ली के वाल्मीकि समाज के लिए किये गए प्रयासों को उल्लेखनीय बताया। इस अवसर पर भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय कार्यालय प्रभारी प्रकाश तंवर भी उपस्थित रहे।

दिल्ली पश्चिम विहार के बालाजी एक्शन अस्पताल में दो मजदूरों की संदिग्ध मौत

दिल्ली के पश्चिम विहार स्थित बालाजी एक्शन अस्पताल में सफाई करते समय दो मजदूरों की मौत हो गई। दोनों उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि मजदूर कार्बन फिल्टर के रखरखाव के दौरान बेहोश हो गए थे। पुलिस आस-पास के लोगों से पूछताछ कर रही है।

नई दिल्ली। देश की राजधानी के एक अस्पताल कैंपस के परिसर में सफाई करने के दौरान दो मजदूरों की बुधवार को मौत हो गई। पुलिस ने दोनों के शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। फॉरेंसिक टीम ने भी घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए हैं। मामले की जांच की जा रही है। यह घटना दिल्ली के पश्चिम विहार इलाके में स्थित बालाजी एक्शन हॉस्पिटल के कैंपस परिसर की है।

सूचना मिलते ही पहुंची पुलिस

इस संबंध में मिली जानकारी के अनुसार, पश्चिम विहार पूर्व पुलिस स्टेशन को एक्शन बालाजी अस्पताल दो मेडिको-लीगल केस (MLC) की सूचना प्राप्त हुई थी।

सूचना मिलते ही तत्काल कार्रवाई करते हुए पश्चिम विहार पूर्व के थाना प्रभारी अपनी टीम के साथ अस्पताल पहुंच गए। दोनों मृतक उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे।

उनमें से एक का नाम बृजेश (उम्र 26 वर्ष) और दूसरे का विक्रम (उम्र 30 वर्ष) है। डॉक्टर ने परीक्षण के बाद दोनों को मृत घोषित कर दिया।

कार्बन फिल्टर के रखरखाव का कर रहे थे काम

शुरुआती जांच से पता चला कि दोनों मृतक कार्बन फिल्टर के रखरखाव कार्य के दौरान बेहोश हो गए थे। यह कार्य अस्पताल में एएमसी ठेकेदार द्वारा किया जा रहा था। इसके बाद क्राइम ब्रांच और फॉरेंसिक की टीम को घटनास्थल पर बुलाया गया। उन्होंने घटनास्थल का गहन निरीक्षण किया और कागजी कार्रवाई के साथ-साथ फोटोग्राफी भी की। मृतकों के शवों को कब्जे में लेकर उन्होंने पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। इस मामले में कानून की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। जांच अभी जारी है। साथ ही, पुलिस आस-पास के लोगों से भी पूछताछ कर रही है।

धर्म-भाषा विवाद : खत्म होती राजनीति को बचाने की कोशिश

(आलेख : मुकुल सरल)

कोई कहता है– जय श्रीराम बोलना होगा (हिंदुत्ववादी)

कोई कहता है– मराठी बोलनी होगी (महाराष्ट्र में मनसे)

कोई कहता है– हिंदी पढ़नी होगी (सरकार का त्रिभाषा फ़ार्मूला)

कोई कहता है– हिंदी नहीं चलेगी। कर्नाटक, तमिलनाडु में हिंदी के साइन बोर्ड पर कालिख पोती जाती है।

कोई कहता है– उर्दू नहीं चलेगी, उर्दू पढ़ने से कठमुल्ला बन जाते हैं (यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ)

कोई कहता है– अंग्रेज़ी बोलने में शर्म आएगी (गृहमंत्री अमित शाह)

क्या तमाशा है! ये धर्म और भाषा का विवाद सिर्फ़ और सिर्फ़ राजनीति के लिए!! आप क्या समझते हैं इन्हें अपनी भाषा से प्रेम है, नहीं। ये अपनी ख़त्म होती राजनीति को बचाना चाहते हैं। बस।

यह भारत देश सब धर्म और भाषा-भाषियों का देश है। संविधान की 8वीं अनुसूची में 22 भारतीय भाषाओं को मान्यता है। साहित्य अकादमी 24 भाषाओं में पुरस्कार देती है। यानी यह सभी भारत की राष्ट्रीय भाषाएं हैं। इसके अलावा भी कई भाषा-बोलियां हैं। सबका इतिहास है, सबका सम्मान है, सबके बोलने वाले हैं। फिर विवाद क्यों?

कोई भाषा बोलने की ज़िद क्यों? हमला क्यों? ऐसी ज़बरदस्ती करोगे तो बेटा, अपने बाप को बाप न कहे। यह तो भाषा का मामला है। ऐसे में तो कोई भाषा आती भी हो, तो भी न बोलें।

एक से ज़्यादा भाषाएं सीखना अच्छी बात है। मानसिक विकास होता है। स्थानीय भाषा आना अच्छी बात है। स्थानीय समाज से जुड़ने, उसके ज़्यादा क़रीब से जानने-समझने का मौका मिलता है। लेकिन क्या यह मारकर सिखाओगे या इसकी कोई व्यवस्था करोगे?

लोगों को प्रोत्साहित कीजिए, भाषा स्कूल खोलिए, जैसे प्राइवेट कोचिंग चल रही हैं, वैसे ही सरकार और संगठनों के स्तर पर मुफ़्त कोचिंग क्लास चलाइए। सम्मान कीजिए, पुरस्कार दीजिए, काम दीजिए। यानी लोगों को प्यार से गले लगाइए, फिर देखिए वे खुद आपके पास आएंगे–आपकी भाषा सीखने। जैसे कोई खाना अच्छा लगने पर लोग आपसे पूछते हैं – कैसे बनाया, रैसीपी बताओ, हमें भी सिखाओ।

आज इडली-डोसा-सांबर सिर्फ़ साउथ में नहीं, पूरे भारत में हर गली-नुक्कड़ पर मिलता है। पूरे देश में मुरादाबादी बिरयानी और हैदराबादी बिरयानी की धूम है। देश ही नहीं, दुनिया में लखनऊ की चिकनाकारी की मांग है।

जैसे कोई कविता-कहानी अच्छी लगने पर इच्छा होती है कि इसे इसकी मूल भाषा में पढ़ा जाए, तो ज़्यादा मज़ा आएगा। फीफा वर्ल्ड कप के दौरान शकीरा का गाया ₹Waka Waka... This Time for Africa₹ ऐसा हिट हुआ कि भारत में भी बच्चा बच्चा गाने लगा। आज तक गाते हैं। जब अच्छा लगा, तो अर्थ भी पता किया। इसी तरह प्रसिद्ध इतालवी क्रांतिकारी गीत– हम सब गाते रहते हैं– "Bella ciao, bella ciao, bella ciao, ciao, ciao...₹। इसी तरह हिंदी-उर्दू कविता-ग़ज़लें, फ़िल्में दुनिया भर में धूम मचा रही हैं।

कुल मिलाकर कोई भी ज्ञान, कोई भी शिक्षा डंडा मारकर नहीं दी जा सकती। उसमें वो कशिश और ज़रूरत पैदा करो कि लोग उसे अपनाने पर मजबूर हो जाएं।

ज़रूरत ख़ास तौर से यानी उसे रोज़ी-रोटी से जोड़ें। अंग्रेज़ी के प्रसार की कई वजह हैं, लेकिन आज सबसे ज़्यादा बड़ी वजह यही है कि अंग्रेज़ी जानने पर दुनियाभर में जॉब के रास्ते खुल जाते हैं। ऐसे ही अपनी भाषाओं को बनाओ। हालांकि यह भी सही है कि हिंदी प्रदेशों में कभी दूसरे प्रदेशों की भाषाएं सीखने-सिखाने की ज़रूरत ही नहीं समझी गई।

तमिल-तेलुगु-मलयालम-कन्नड़-मराठी-गुजराती-बांग्ला आदि ये सभी महान भाषाएं हैं। इनका साहित्य बहुत समृद्ध है। और इन्हें बोलने वाले कुछ न कुछ हिंदी ज़रूर बोल-समझ लेते हैं। लेकिन आमतौर पर हम जैसे लोग इन भाषाओं का एक शब्द भी नहीं जानते। हम अंग्रेज़ी तो सीख लेते हैं, लेकिन अपने ही देश के दूसरे प्रदेश की भाषा नहीं सीखना चाहते। हालांकि मुश्किलें भी कम नहीं। और चाहने से ज़्यादा मामला व्यवस्था का है। हमारे स्कूलों में यह व्यवस्था ही नहीं कि कोई प्रादेशिक भाषा सीख सके। त्रिभाषा फ़ार्मूले के तहत भी यही चालाकी की गई कि हिंदी प्रदेशों में हिंदी, अंग्रेज़ी के साथ संस्कृत रख दी गई। इसके पीछे हिंदी नहीं, बल्कि यहां के ब्राह्मणवाद का संस्कृत को लेकर श्रेष्ठतावाद भी था। वो इसे देवभाषा कहते हैं। जबकि हम-आप जानते हैं कि स्कूली उम्र ही वह उम्र है, जब सबसे ज़्यादा जल्दी और तेज़ी से आप दूसरी चीज़ें सीखते हैं। उसके बाद तो बहुत अतिरिक्त मेहनत और समय चाहिए।

लेकिन आज के संदर्भ में यहां भी वही रोज़ी-रोटी का सवाल है। ऐसा नहीं कि आज हिंदी नहीं पिछड़ रही। अच्छी नौकरी-वेतन-भत्ते पाने के मामले में आज अंग्रेज़ी के मुकाबले हिंदी भी बहुत पिछड़ रही है, यह एक वास्तविकता है।

और ऐसा भी नहीं कि विभिन्न प्रदेशों में रहने और काम करने वाले दूसरे प्रदेशों के लोग वहां की भाषा-बोली नहीं जानते-समझते। पेट सब सिखा देता है। टूरिस्ट प्लेस के गाइड व अन्य दुकानदार, टैक्सी, ऑटो चालक सब समझ लेते हैं कि सामने वाला क्या कह रहा है। स्कूली पढ़ाई न की हो, लिखना न जानते हों तब भी फटाफट अंग्रेज़ी बोल लेते हैं।

और अंत में यही बात कि अगर एक प्रदेश में भाषा को लेकर इस तरह विवाद करोगे, तो फिर यह पूरे देश में शुरू हो जाएगा। भाषा का ऐसा आग्रह, ऐसी कट्टरता भी धर्म और जाति के दुराग्रह और कट्टारता की तरह ही है। निज भाषा गौरव अच्छा है, लेकिन घमंड और दूसरे के लिए तिरस्कार बिल्कुल ठीक नहीं। इसलिए इससे बचिए और ऐसी ज़बरदस्ती और गुंडागर्दी का प्रतिरोध कीजिए।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार, कवि और संस्कृतिकर्मी हैं।)

अखण्ड दया धाम में धूमधाम से प्रारम्भ हुआ त्रिदिवसीय गुरु पूर्णिमा महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। कालीदह/परिक्रमा मार्ग स्थित अखंड दया धाम में मंगलायतन सेवा ट्रस्ट के तत्वावधान में त्रिदिवसीय गुरु पूर्णिमा महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ प्रारंभ हो गया है ।महोत्सव के प्रथम दिन प्रातःकाल अत्यंत विधि-विधान से रुद्राभिषेक हुआ ।तत्पश्चात महामंडलेश्वर आचार्य स्वामी भास्करानंद महाराज ने अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा गोपी गीत पर प्रवचन करते हुए कहा कि गोपी गीत भगवान कृष्ण के प्रति गोपियों के निस्वार्थ प्रेम और भक्ति का प्रतीक है। यह प्रेम इतना गहरा है कि गोपियाँ सांसारिक सुखों और मर्यादाओं को त्यागकर कृष्ण के प्रेम में लीन हो जाती हैं।

उन्होंने कहा कि श्रीमद्भागवत पुराण के दसवें स्कंध में वर्णित गोपी गीत एक महत्वपूर्ण स्तोत्र है, जो भगवान कृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम और समर्पण को दर्शाता है ।ब्रज गोपिकाएं सात्विक प्रेम की ध्वजा हैं। सुर, नर और मुनि कोई भी ब्रज गोपिकाएं के निस्वार्थ प्रेम की तुलना नहीं कर सकते हैं।

श्रद्धेय स्वामी भास्करानंद महाराज ने कहा कि गोपी

गीत में गोपियों द्वारा भगवान कृष्ण से अपने दुखों को दूर करने की प्रार्थना की गई है। इसका नित्य पाठ करने से भगवान कृष्ण की कृपा प्राप्त होती है और भक्त के लिए भगवत प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। साथ ही भक्तों के जीवन से दुख और कष्ट दूर होते हैं।

इस अवसर पर महाराजश्री की परम-कृपापात्र शिष्या साध्वी कृष्णानंद महाराज ने अपनी सरस वाणी से गोपी गीत का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया।

महोत्सव में गीता आश्रम के अध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. अवशेषानंद महाराज, गौरी शंकर धाम के अध्यक्ष डॉ. शिवम साधक महाराज, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा देश-विदेश से आए सैकड़ों भक्तों-श्रद्धालुओं की उपस्थिति विशेष रही।

नोएडा के थाना फेज-2 इलाके में उस वक्त अफरा-तफरी मच गई जब देर रात सेक्टर-87 के नया गांव में एक चार मंजिला मकान में अचानक आग लग गई. आग की वजह से पूरे मकान में धुंआ फैल गया और लगभग 100 लोग छत पर फंस गए. सूचना मिलते ही फायर विभाग की छह गाड़ियां और एक हाइड्रोलिक प्लेटफॉर्म मौके पर पहुंच आग बुझाने में जुट गई. अधिकारियों ने बताया कि फर्स्ट फ्लोर पर घरेलू LPG सिलेंडर में गैस रिसाव के चलते आग लगी, जिससे पूरे बिल्डिंग में धुआं भर गया.

भारत और त्रिनिदाद — दो तट, एक आत्मा

सचिन त्रिपाठी

जब भारत की पवित्र गंगा के घाटों से कुछ गरीब और मजबूर लोग नावों में सवार हुए थे, तब उन्हें नहीं पता था कि उनके भाग्य की पतवार किसी और ही तट पर लगने वाली है। त्रिनिदाद और टोबैगो कैरेबियन सागर का यह छोटा सा द्वीपीय देश भारत से हजारों मील दूर होते हुए भी, भारतीय हृदय और इतिहास से गहराई से जुड़ा है। यह रिश्ता केवल कूटनीति या व्यापार का नहीं, बल्कि एक सामूहिक स्मृति और साझा संस्कृति का है।

इस रिश्ते की शुरुआत 30 मई 1845 को हुई, जब 'फाटेल रोज़ैक' नामक जहाज भारत से 225 श्रमिकों को लेकर त्रिनिदाद पहुंचा। ब्रिटिश साम्राज्य ने दास प्रथा समाप्त होने के बाद भारत से मजदूरों को गिरमिटिया व्यवस्था के तहत भेजना शुरू किया। 1917 तक लगभग 1.5 लाख भारतीयों को त्रिनिदाद लाया गया। वे रक्तों में गन्ना काटते थे पर अपने साथ अपने रामचरितमानस, भोजपुरी लोकगीत, त्योहारों की परंपराएं और देवताओं की मूर्तियां भी लाए।

वो परदेश को देश बनाने की यात्रा थी। मंदिर बने, मस्जिदें खड़ी हुईं, दीवाली और होली मनाई जाने लगी। त्रिनिदाद की माटी में तुलसी और नीम के पौधे पनपने लगे। आज त्रिनिदाद में 500 से अधिक मंदिर, रामलीला मंडलियां, और भोजपुरिया संस्कृति की झलक हर कोने में देखी जा सकती है।

भारत और त्रिनिदाद का यह रिश्ता केवल सांस्कृतिक नहीं, राजनीतिक भी बना। बासदेव पांडे, एक गिरमिटिया वंशज, त्रिनिदाद के प्रधानमंत्री बने (1995–2001)। बाद में कमला प्रसाद बिसेसर भी प्रधानमंत्री बनीं। आज वहां की कुल जनसंख्या लगभग 14 लाख है, जिसमें से 37% लोग भारतीय मूल के हैं। वे राजनीति, शिक्षा, चिकित्सा, और मीडिया में प्रभावशाली भूमिका निभा रहे हैं।

कूटनीतिक दृष्टि से भारत और त्रिनिदाद के संबंध 1962 में त्रिनिदाद की स्वतंत्रता के साथ ही औपचारिक रूप से स्थापित हुए। पोर्ट ऑफ स्पेन में भारतीय उच्चायोग न केवल राजनयिक काम करता है बल्कि हिंदी, योग, भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य को भी बढ़ावा देता है।

2025 में इस संबंध ने एक नई ऊंचाई तब छुई, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हाल ही में त्रिनिदाद की ऐतिहासिक यात्रा पर गए। उन्होंने वहां की संसद को संबोधित किया और देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान "ऑर्डर ऑफ द रियब्लिक ऑफ त्रिनिदाद और टोबैगो" प्राप्त किया। यह सम्मान केवल भारत के प्रधानमंत्री को ही नहीं बल्कि उस पूरी 'गिरमिटिया' विरासत को समर्पित था जो शोषण से संस्कृति तक का सफर तय कर चुकी है।

प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा केवल औपचारिकता नहीं थी, वह भारत की सॉफ्ट पावर, डायस्पोरा नीति और ग्लोबल साउथ लीडरशिप की स्पष्ट घोषणा थी। इस दौरान भारत और त्रिनिदाद के बीच 6 अहम समझौतों पर हस्ताक्षर हुए जिनमें डिजिटल गवर्नेंस, स्वास्थ्य, कृषि, संस्कृति, खेल और शिक्षा शामिल हैं।

भारत ने त्रिनिदाद को 2000 लैपटॉप, आधुनिक स्वास्थ्य उपकरण, और डिजिटल एजुकेशन प्लेटफार्म प्रदान किए। साथ ही, भारतीय मूल के नागरिकों के लिए ओवरसीज सिटीजनशिप ऑफ इंडिया सुविधा अब छठवीं पीढ़ी तक लागू कर दी गई है जिससे त्रिनिदाद में बसे भारतीय मूल के लोग अपने पुरखों की धरती से और मजबूती से जुड़ सकें।

इस यात्रा के दौरान त्रिनिदाद ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता की पूरी तरह से समर्थन की भी घोषणा की। यह भारत के लिए एक बड़ी रणनीतिक कूटनीतिक विजय है हालांकि, विरोध के स्वर भी उठे। कुछ स्थानीय संगठनों ने भारत में मानवाधिकार स्थिति को लेकर आपत्ति जताई पर ये स्वर सीमित रहे। बहुसंख्य भारतीय समुदाय और सरकार ने इस दौरे को एक सांस्कृतिक उत्सव की तरह अपनाया।

भारत की 'सॉफ्ट पावर' यहां खुलकर चमकी. योग दिवस, हिंदी सप्ताह, भारतीय फिल्म महोत्सव और रामायण मंचन जैसे कार्यक्रमों ने त्रिनिदाद की नई पीढ़ी को फिर से भारत की ओर मोड़ा है। हिंदी भाषा अब वहाँ के स्कूलों में एक वैकल्पिक विषय बन चुकी है।

भारत और त्रिनिदाद का संबंध आज केवल इतिहास की विरासत नहीं रहा, वह एक जीवंत, क्रियाशील और गहराता हुआ संवाद है। कभी जो रिश्ता 'आंसुओं' और 'अनुबंधों' से शुरू हुआ था, वह आज पुरस्कारों, समझौतों और विश्वास के पुल से जुड़ा है। यह संबंध बताता है कि भारत की आत्मा कहीं भी हो, वह मिटती नहीं, वह पनपती है। त्रिनिदाद की मिट्टी में गंगा की गूंज, तुलसी की खुशबू और रामायण की चौपाइयां आज भी जीवित हैं।

प्रधानमंत्री मोदी की हालिया यात्रा ने इस पुल को नया रंग दिया है। अब यह सिर्फ संस्कृति की नहीं, तकनीकी, शिक्षा, वैश्विक नेतृत्व और विकास की साझेदारी बन चुकी है और यह साझेदारी आने वाले दशकों में भारत की वैश्विक भूमिका को और सशक्त बनाएगी।

कानपुर में रफ्तार से हर माह पौन दर्जन से ज्यादा की मौत : एक और मासूम शिकार

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां रफ्तार से मौत का सिलसिला लगाता जारी है, जिसके क्रम में 3 साल के एक और मासूम की जान चली गई। घटना के बाद उसके परिवार में कोहराम मचा हुआ है। वहीं पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजने के साथ ही वाहन चालक की भी तलाश कर रही है। कुल मिलाकर कानपुर में रफ्तार से दुर्घटनाओं के रूप में मौतों का सिलसिला लगातार जारी है। यहां इसका आंकड़ा प्रतिमाह लगभग पौन दर्जन से भी ज्यादा है।

तेज रफ्तार वाहन की वजह से मासूम की मौत की यह घटना महाराजपुर थाना क्षेत्र के डोमनपुर का मजरा जोशहन खेड़ा में हुई, जहां पिकअप की चपेट में आकर तीन वर्ष के मासूम की दर्दनाक मौत हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक मासूम अभिनव (3) पुत्र धीरेंद्र निषाद अपने बड़े भाई आयुष (5) और मोहल्ले के एक अन्य बच्चे के साथ घर के बाहर खेल रहा था। बताया गया किइसी दौरान पिकअप चालक अरुण कुमार पुत्र किशन निषाद बहुत तेज गति से गाड़ी बैक करके मोड़ने लगा, जिससे अन्य बच्चों ने भागकर अपनी जान बचाई। इस दौरान अभिनव छोटा होने के कारण भाग नहीं पाया और पिकअप की चपेट आ गया, जिससे उसका चेहरा बुरी तरह से कुचल गया।

इस घटना से ग्रामीणों में हड़कंप मच गया और परिजनों का रो -रोकर बुरा हाल है। मां प्रेमलता ने बताया कि दोनों बच्चे सुबह अपने पिता धीरेंद्र के साथ पुराने घर से कुछ ही देर पहले आए थे और घर के बाहर खेलने पहुंचे ही थे कि पिकअप ने रौंद दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच-पड़ताल शुरू कर भागे चालक की भी तलाश कर रही है।

मज़दूर योजनाओं का लाभ उठाएं: गीता सोनी

भवन एवं अन्य निर्माण मजदूर संघ की बैठक मजदूरों की समस्याओं पर हुआ विस्तृत मंथन

सुनील चिंचोलकर

मुंगेली,बिलासपुर। भवन एवं अन्य निर्माण मजदूर संघ की बैठक ब्लॉक अंतर्गत ग्राम बाघमुडा उद्यान (नर्सरी) के प्रांगण में आयोजित हुई। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि मुंगेली जिला प्रभारी गीता सोनी थीं। अध्यक्षता अध्यक्ष सुमित सोनवानी ने की। गीता सोनी ने कार्य विस्तार एवं केंद्र व राज्य सरकार द्वारा मिल रही योजनाओं की जानकारी दी और आगामी अधिवेशन पर विचार विमर्श किया। बैठक में निर्माण श्रमिक एवं संघ के पदाधिकारी अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष व महामंत्री समेत 35 लोग उपस्थित थे।

बैठक का मुख्य उद्देश्य मजदूरों की मौजूदा समस्याओं, पंजीयन प्रक्रिया में आ रही अड़चनों तथा सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा करना था। अपने संबोधन में गीता सोनी ने कहा कि निर्माण श्रमिकों को आज भी अनेक योजनाओं का लाभ समय पर नहीं मिल पा रहा है, जिसका मुख्य कारण सूचना का अभाव और विभागीय लापरवाही है। उन्होंने आश्वस्त किया कि मजदूरों की समस्याओं को प्राथमिकता से

हल किया जाएगा। उन्होंने पंजीयन, नवीनीकरण, चिकित्सा सहायता, मातृत्व लाभ, एवं शिक्षा सहायता जैसी योजनाओं की जानकारी दी और कहा कि जल्द ही जिले में विशेष शिविर लगाकर पात्र श्रमिकों का निःशुल्क पंजीकरण कराया जाएगा।

बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि संघ की ओर से प्रत्येक पंचायत स्तर पर संपर्क अभियान चलाया जाएगा ताकि अधिक से अधिक मजदूरों को योजनाओं का लाभ मिल सके। आगामी बैठक सितम्बर में होना तय किया गया। महामंत्री जगदीशवर द्वारा गीता सोनी का आभार व्यक्त करते हुए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में सदस्य राजेन्द्र मांडले का विशेष सहयोग रहा। बैठक सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई श्रमिकों ने संघ की पहल की सराहना की।

वाराणसी बजरडीहाँ क्षेत्र इकबाल अहमद खलिफा के अध्यक्षता में कड़ी सुरक्षा के बीच मोहर्रम के 12 तारीख को तीजा पर परंपारिक तरीके से अखाड़े को निकाला गया

जिला वाराणसी संवाददाता वसीम अहमद

वाराणसी। बजरडीहाँ क्षेत्र मोहर्रम की बारह तारीख को दोपहर 2 बजें से हमीद नगर कुडीया से अखाड़े का जुलूस निकाला गया जो बजरडीहाँ इकबाल अहमद खलिफा के नेतृत्व में प्रशासन की कड़ी सुरक्षा के बीच जुलूस निकाला गया हमीद नगर कुडीया से चलकर तेलियाना चौराहा बजरडीहाँ पुलिस चौकी धारारा आटों स्टैंड छाई सुदामापर कंकड़हाबिर कमच्छा थाना भेलूपुर ज्योतिया पार्क रेवड़ी तलाब गोदौलिया नई सड़क शेख़ सलीम फाटक काली महल होते हुए लल्लापुरा फातमान जाकर समाप्त हुआ जिला वाराणसी संवाददाता वसीम अहमद ने बताया कि हर साल की तरह इस साल भी बजरडीहाँ क्षेत्र से इकबाल अहमद खलिफा का अखाड़ा निकाला जाता है जिसमें विभिन्न प्रकार के खेलों को खेला जाता है जैसे पटा बना लकड़ी ढ़ाल तलवार सटका बनैठी भाला इत्यादि प्रकार के एक से बढ़कर एक हैरतअंगेज करतब दिखाते हुए खिलाड़ी लल्लापुरा फातमान पहुंचते हैं और सलामी देकर वापस आते हैं खिलाड़ी इम्तियाज अहमद गामा जिला

वाराणसी संवाददाता वसीम अहमद मोहम्मद मोहसिन एजाज अहमद जावेद अहमद परवेज अहमद तस्लीम अंसारी अशरफ अली इरफ़ान रजा सोऐब रेहान सलमान हैदर मोहम्मद फैज़ मोहम्मद नसीम गूलाम रसूल अनिसुर्रहमान मेराज अहमद शहजादे एवं समस्त खिलाड़ी उपस्थित थे

भारतीय फ़न ए सिपहगिरी एसोसिएशन उत्तर प्रदेश के पूर्व मिडिया प्रभारी वसीम अहमद

गुरु पूर्णिमा पर्व 10 जुलाई 2025-गुरुवार और गुरु पूर्णिमा का संयोग अत्यंत दुर्लभ और अत्यधिक शुभ माना जाता है।

गुरु के चरणों में अपने समस्त अहंकार घमंड अभिमान भ्रष्टाचारी मानसिकता अर्पित कर दें यही हमारी सच्ची गुरु दक्षिणा होगी-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

गुरु मेरी पूजा गुरु गोविंद गुरु मेरा पारब्रह्म गुरु भगवंत,गुरु मेरा ज्ञान हृदय ध्यान गुरु गोपाल पुरख भगवान,गुरु जैसा नहीं को देव, जिस मस्तक भाग सो लागा सेव इत्यादि माननीय गुरुवर की महिमा के अनेक आध्यात्मिक भजन हम अनेक बार शिद्दत से सुनते गाते आ रहे हैं क्योंकि भारतमाता की मिट्टी से ही मानवीय जीव की रग रग में आध्यात्मिकता, माता पिता गुरुवर के प्रति सम्मान आस्था समर्पण का भाव समाया हुआ है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र ऐसा मानता हूं कि जितनी आध्यात्मिकता की श्रद्धा भारत में है शायद ही यह विश्व के किसी भी अन्य देश में होगी ।यहां सदियों से माता-पिता और आचार्य को गुरु का दर्जा दिया जाता है भारतीय संस्कृति की पहचान है कि,मातृमान-पितृमानाचार्यवान पुरूषो वेदः।'(अर्थात, जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य हो तो तभी मनुष्य ज्ञानवान होगा।) 'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथि देवों भव। अर्थात-माता को, पिता को, आचार्य को और अतिथि को देवता के समान मानकर उनके साथ व्यवहार करो। गुरुर्ब्रह्मा ग्रुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः। ।गुरु ब्रह्मा है, गुरू विष्णु है, गुरू महेश्वर अर्थात भगवान शंकर है। गुरु ही साक्षात परम ब्रह्म सर्वशक्तिमान है, ऐसे गुरु को मेरा नमस्कार। (उक्त श्लोक में गुरू की महत्ता स्पष्ट करते हुए गुरु को परम ईश्वर के तुल्य बताकर वंदना की गई है।)गुरु कृपा और आध्यात्मिक विकास गुरु पूर्णिमा का मूल उद्देश्य ही होता है, गुरु के प्रति श्रद्धा और आत्मा का शुद्धिकरण ।इस दिन का आयोजन व्यक्ति के आध्यात्मिक उत्थान, साधना में सफलता और चित्त की स्थिरता लाने में सहायक होता है। विद्यार्थियों को विद्या, स्मरण शक्ति और अनुशासन की प्राप्ति होती है, वहीं साधकों को ध्यान, जप, और तप में मन की एकाग्रता मिलती है। यह दिन आत्मबोध और जीवन के सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है ।इसलिए आज गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर हम माता पिता गुरु की विस्तार से चर्चा इस आर्टिकल के माध्यम से करके उसे पर अमल जरूर करेंगे।

साथियों बात अगर हम इस बार गुरु पूर्णिमा की करें तो, अबकी बार बहुत ही अद्भुत संयोग बना है। दरअसल इस बार गुरु पूर्णिमा के दिन गुरुवार है। गुरुवार 10 जुलाई को गुरु पूर्णिमा का पर्व इस बार मनाया जा रहा है। पूर्णिमा पर भगवान विष्णु और उनके विभिन्न स्वरूपों की पूजा का सबसे ज्यादा महत्व शास्त्रों में बताया गया है। तो अब अबकी बार गुरु पूर्णिमा गुरुवार को होने से इसका महत्व और बढ़ गया है। इस शुभ अवसर पर यदि आप अपने घर में सत्यनारायण भगवान की कथा करवाते हैं तो आपको इसका कई गुना लाभ होगा। तो आइए जानते हैं गुरु पूर्णिमा पर घर में सत्यनारायण कथा करवाने के लाभ ।गुरुवार और गुरु पूर्णिमा का संयोग अत्यंत दुर्लभ और अत्यधिक शुभ माना जाता है। जब गुरुवार, जो कि बृहस्पति ग्रह और विष्णु भगवान को समर्पित दिन होता है, और गुरु पूर्णिमा, जो ज्ञान, उपासना और श्रद्धा का पर्व है, एक साथ आते हैं, तो यह काल धार्मिक अनुष्ठानों के लिए सर्वश्रेष्ठ हो जाता है।

साथियों बात अगर हम गुरु शिष्य परंपरा की करें तो,गुरु-शिष्य परम्परा आध्यात्मिक ज्ञान को नई पीढ़ियों तक पहुंचाने का सोपान है। भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परम्परा के अन्तर्गत गुरु अपने शिष्य को निस्वार्थ भाव से शिक्षा देता है। जिसके बदले में शिष्य अपने गुरु को शिक्षा समाप्त होने पर गुरुदक्षिणा देता है। बाद वही शिष्य अपने

गुरु के बताये हुए मार्गदर्शन पर चलकर समाज सेवा करता है। या फिर गुरु बनकर दूसरों को शिक्षा देता है। जिससे यह कर्म चलता रहता है। गुरु-शिष्य की यह परम्परा ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में हो सकती है। जैसे अध्यात्म, संगीत, कला, वेदाध्ययन, वास्तु,,विज्ञान, चिकित्सा आदि। प्राचीन समय में गुरु आश्रमों में अपने शिष्यों को शिक्षा दिया करते थे। उस समय उनके बीच मधुर सम्बन्ध हुआ करते थे। प्राचीन समय में गुरु शिष्य के बीच अगाध प्रेम हुआ करता था। शिष्य अपने गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा व समर्पण का भाव रखता था। गुरु निस्वार्थ भाव से अपने शिष्य को शिक्षा दिया करते थे। गुरु और शिष्य के बीच केवल शाब्दिक ज्ञान का ही आदान प्रदान नहीं होता था बल्कि गुरु अपने शिष्य के संरक्षक के रूप में भी कार्य करता था।अतः गुरु कभी भी अपने शिष्य का अहित नहीं चाहता है। वह हमेशा अपने शिष्य का भला सोचता है। शिष्य का यही विश्वास गुरु के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा और समर्पण का कारण रहा है।

साथियों बात अगर हम वर्तमान परिपेक्ष्य की करें तो जितना माता-पिता और आचार्य को देव समझने वाली इस भव्य भारतीय संस्कृति का गुणगान किया जाए उतना ही कम है परंतु वर्त्तमान समय में यह स्थिति बिल्कुल उलट है। आज आश्रमों की जगह स्कूल कॉलेज ने ले ली है। और गुरु शिष्य का सम्बन्ध वैसा नहीं रहा जैसा प्राचीन समय में रहता था। आज गुरु शिष्य के सम्बन्ध सही नहीं है। और गुरु शिष्य का सम्बन्ध स्वार्थ से पूर्ण हो गया है। गुरु शिष्य परम्परा समाप्त सी हो गयी है ।इस कराल काल में आज भौतिकवाद के प्रभाव में व्यक्तिवादी भोगवादी तथा स्वार्थपरायणता का तांडव नृत्य हो रहा है वहां मानव जीवन में इन दिव्य और उदार विचारों की विलुप्तता की ओर कदम बढ़ाने को रेखांकित करना जरूरी है। कदाचित कुछ संस्कारी परिवार उपरोक्त संस्कृति के श्लोकों और विचारों का सिंचन अपनी पीढ़ी में करते भी होंगे परंतु पाश्चात्य संस्कृति के बदलते प्रभाव को रोकने के लिए बड़े बुजुर्गों बुद्धिजीवियों को आगे आकर जागरूक करने और एक्शन उठाने का समय आ गया है।

साथियों बात अगर हम गुरु के महत्व की करें तो, गुरु कोई साधारण इंसान नहीं होता है। गुरु ही एक जरिया है जिसके बताये हुए पद चिन्हो पर चलने से कठिन से कठिन मुकाम को हासिल किया जा सकता है। इसीलिए हमेशा गुरु का पूर्ण सम्मान करे। गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए। एक गुरु ही हमें समाज में अपनी पहचान बनाने की शिक्षा देता है। प्राचीन समय से लेकर वर्तमान तक गुरु का स्थान सर्वोपरि रहा है। जीवन में अगर गुरु का आशीर्वाद हो तो बड़ी से बड़ी कठिनाईयों से मुकाबला किया जा सकता है।

साथियों जिस तरह एक बच्चे की माँ उसकी प्रथम गुरु होती है जिसे वो खाना पीना, बोलना, चलना, आदि तौर तरीके सिखाती है। ठीक उसी तरह गुरु अपने शिष्य को जीवन जीने का तरीका बताता है। उसे सफलता के हर वो पहलु बताता है जो उसके लिए उपयुक्त हो। इस संसार सागर में सफलता पाने के लिए हर किसी को गुरु की आवश्यकता होती है। गुरु के बिना सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती है। एक गुरु ही होता है जो निस्वार्थ भाव से अपने शिष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। तभी तो गुरु शब्द में "गु" का अर्थ अंधकार (अज्ञान) और "रु" का अर्थ प्रकाश (ज्ञान) होता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का बहुत महत्व है। इसीलिए गुरु को 'ब्रह्मा-विष्णु-महेश' कहा गया है तो कहीं 'गोविन्द'। इस दुनिया में ऐसा कोई इंसान नहीं है जो बिना गुरु के सफल हुआ हो। यदि डॉक्टर, वकील, इंजीनियर समाज सेवक,ट्रेनर,सैनिक, आदि बनाना चाहते है तो इसके लिए आपको उसी क्षेत्र के एक गुरु की आवश्यकता होती है। यही गुरु आपको सफलता के द्वार तक लेकर जाता है,इसीलिए हमेशा गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा होनी चाहिए। गुरु के बिना जीवन अपूर्ण है। आपको कोचिंग,स्कूल, कॉलेज, खेल,आदि जगह पर गुरु की आवश्यकता पड़ती है। अतः गुरु के महत्व को समझे। गुरु के सेवा करे। इसीलिए हमें चाहिए के गुरु के चरणों में अपने समस्त अहंकार घमंड अभिमान भ्रष्टाचारी मानसिकता अर्पित कर दें यही सच्ची गुरु दक्षिणा होगी।

साथियों बात अगर हम गुरु द्रोणाचार्य भगत एकलव्य विवेकानंद अर्जुन की करें तो, द्रोणाचार्य को युद्ध भूमि में जब अर्जुन ने अपने सामने प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखा तो उसने युद्ध लड़ने से इंकार कर दिया। यह अर्जुन के शिष्य के रूप में द्रोणाचार्य के प्रति प्रेम व सम्मान का भाव था। इसी प्रकार जब एकलव्य से गुरु द्रोणाचार्य ने प्रश्न किया कि तुम्हारा गुरु कौन है, तब उसने कहा- गुरुदेव आप ही मेरे गुरु हैं तब द्रोणाचार्य ने कहा- पुत्र तब तो तुमको मुझे दक्षिणा देना होगी। तब गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य से दाहिने हाथ का अँगूठा माँगा। एकलव्य ने सहर्ष अपना अँगूठा काटकर गुरु के चरणों में रख दिया। विवेकानंद ने अपने गुरु के आदेश से पूरे विश्व में सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार किया। छत्रपति शिवाजी अपने गुरु के आदेशानुसार शेरनी का दूध निकालकर ले आए और गुरुदक्षिणा के रूप में पूरे महाराष्ट्र को जीतकर अपने गुरु के चरणों में रख दिया था। यह बुद्ध का ही असर था कि अंगुलिमान जैसा क्रूर डाकू भी भिक्षु बन गया। ऐसा होता है गुरु का सामर्थ्य।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि गुरु पूर्णिमा पर्व 10 जुलाई 2025-गुरुवार और गुरु पूर्णिमा का संयोग अत्यंत दुर्लभ और अत्यधिक शुभ माना जाता है ।गुरुर्ब्रह्मा ग्रुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः। ।गुरु के चरणों में अपने समस्त अहंकार घमंड अभिमान भ्रष्टाचारी मानसिकता अर्पित कर दें यही हमारी सच्ची गुरु दक्षिणा होगी।

MG M9 MPV इस तारीख को होने जा रही लॉन्च, कई बेहतरीन और एडवांस फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

JSW MG मोटर इंडिया 21 जुलाई को MG M9 लॉन्च कर सकती है जो प्रीमियम डीलरशिप सिलेक्ट के जरिए बेची जाएगी। इसकी बुकिंग मई 2025 में 51000 की टोकन राशि से शुरू हुई। MG M9 में LED लाइटिंग लग्जरी इंटीरियर प्रेसिडेंशियल सीट्स पैनोरमिक सनरूफ 64-रंगों वाली एम्बिएंट लाइटिंग 12-स्पीकर ऑडियो सिस्टम और ADAS लेवल 2 जैसे फीचर्स हैं। यह 548km तक की रेंज देती है।

नई दिल्ली। JSW MG मोटर इंडिया 21 जुलाई को भारतीय बाजार में अपनी पहली MPV, MG M9 को लॉन्च कर सकती है। यह कंपनी की पहली ऐसी गाड़ी होने वाली है, जिसे ब्रांड के प्रीमियम डीलरशिप सिलेक्ट के जरिए बेचा जाएगा। मई 2025 में ही 51,000 की टोकन राशि इसकी बुकिंग शुरू की जा चुकी है। लॉन्च से पहले, आइए इस शानदार इलेक्ट्रिक MPV MG M9 की सभी फीचर्स के बारे में जानते हैं।

MG M9 का डिजाइन

इसमें LED लाइटिंग, फ्रंट में बंपर में एकीकृत हेडलाइट्स दी गई है, जो वाहन के निचले हिस्से में चलने वाली क्रोम ट्रिम से घिरे हुए हैं। इसके अलावा, MPV के निचले हिस्से में एक फॉक्स एयर डाम भी दिया गया है। इसके पीछे की तरफ क्रोम डिटेल्स और टेल लाइट्स दी गई है। टेल लाइट्स एक फुल-चौड़ाई वाली लाइट बार से जुड़ी हैं। यह 5,200mm लंबी, 2,000mm चौड़ी और 1,800mm ऊंची है। इसका व्हीलबेस 3,200mm का है।

MG M9 का इंटीरियर

इसमें काफी लग्जरी इंटीरियर दिया गया है। इसके सेकंड रो में प्रेसिडेंशियल सीट्स है, जो हीटिंग, वेंटिलेशन और मसाज फंक्शन के साथ आती है। इसमें फोल्ड-आउट ओटोमन यानी पैर रखने के लिए स्टूल, बॉस मोड जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

MG M9 के फीचर्स

इसमें कई शानदार फीचर्स देखने के लिए मिलेंगे। MG M9 में पैनोरमिक सनरूफ, 64-रंगों वाली एम्बिएंट लाइटिंग, 12-स्पीकर ऑडियो सिस्टम, प्रेसिडेंशियल सीटिंग, 16-तरफा एडजस्टेबल सीटें और वेंटिलेशन और हीटिंग ऑप्शन के साथ 8 मसाज सेटिंग्स देखने के लिए मिलेगी। इसमें पैसेंजर्स की सेफ्टी के लिए इसमें ADAS लेवल 2, 7 एयरबैग्स, 360-डिग्री कैमरा, ESP, TPMS और चारों पहियों में डिस्क ब्रेक मिलता है। इसे यूरो NCAP और ऑस्ट्रेलियन NCAP क्रैश टेस्ट में पूरी 5-स्टार रेटिंग मिली है।

MG M9 की रेंज

इसमें 90 kWh का बैटरी पैक देखने के लिए मिलेगा। इसमें लगा हुआ मोटर 245hp की पावर और 350Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इस बैटरी को चार्ज करने के बाद 548km तक की ड्राइविंग रेंज मिलेगी। 160kW DC फास्ट चार्जर का उपयोग करके इसे पूरी तरह चार्ज होने में 90 मिनट लगते हैं। 11kW AC चार्जर से 0 से 100 प्रतिशत तक पूरी तरह चार्ज होने में लगभग 10 घंटे लगते हैं।

मानसून में बेपरवाही पड़ेगी भारी, गाड़ी को जंग से बचाने के लिए करें ये 5 उपाय

परिवहन विशेष न्यूज

बारिश का मौसम गाड़ियों के लिए कई समस्याएँ लाता है जिनमें जंग लगना सबसे बड़ी है। अपनी गाड़ी को जंग से बचाने के लिए उसे वाटरप्रूफ कवर से ढकें और बारिश में भीगने के बाद धोकर अच्छी तरह सुखाएं। एंटी-रस्ट कोटिंग करवाएं खासकर निचले हिस्से और मेटल पार्ट्स पर। गाड़ी को छांव या गैरेज में पार्क करें जहाँ पानी न जमता हो।

नई दिल्ली। बारिश का मौसम आते ही मन में चाय-पकौड़े, गरमागरम भजिया और सुहावने मौसम की तस्वीर सी बन जाती है। इस मानसून के मौसम में हम अक्सर एक जरूरी चीज भूल जाते हैं, जो है गाड़ी की सही से देखभाल करता। मानसून जितना खुशनुमा होता है, उतना ही गाड़ियों के लिए समस्याएं भी लेकर आता है। इसमें सबसे बड़ी समस्या है गाड़ी में जंग लगने की। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको कुछ ऐसे जरूरी टिप्स बता रहे हैं, जिन्हें अपनाकर आप अपनी गाड़ी को जंग लगने से बचा सकते हैं। आइए इसके बारे में हम विस्तार से जानते हैं।

बारिश में गाड़ी को जंग से बचाने के लिए 5 जरूरी टिप्स

1. गाड़ी को कवर से ढक कर रखें

बारिश के मौसम में हमेशा अपनी कार या बाइक को कवर से ढक कर रखें। एक अच्छी क्वालिटी का वाटरप्रूफ कवर खरीदें। यह न केवल आपकी गाड़ी को बारिश और धूल से बचाएगा, बल्कि सूरज की यूवी किरणों से भी सेफ्टी देने का काम करेगा।

2. भीगी गाड़ी को धोकर सही सुखाएं

बारिश में बाहर से आने के बाद अपनी गाड़ी को जरूर एक बार धोएं। ऐसा करने से उसपर लगा हुए कीचड़, धूल और गंदगी साफ हो जाएगी। इनके कार से साफ होने की वजह से उसमें जंग लगने का खतरा भी कम रहता है। दरअसल, नमी और गंदगी के लंबे समय तक संपर्क में रहने से मेटल पार्ट्स पर जंग लगनी शुरू हो जाती है। इसलिए गाड़ी को जंग से बचाने के लिए उसे सही से धोकर सुखाएं और कवर से ढक दें।

3. एंटी-रस्ट कोटिंग करवाएं

एंटी-रस्ट कोटिंग (Anti-Rust Coating) गाड़ी के लिए सुरक्षा कवच की तरह काम करता है। इसे आप खासकर गाड़ी के निचले हिस्से और उन मेटल पार्ट्स पर लगावाए, जो नमी के संपर्क में अक्सर रहते हैं। इससे उन जगहों पर नमीं नहीं रहती है और कार जंग से पूरी तरह से सुरक्षित रहती है। यह आपकी गाड़ी को जंग से बचाने का एक प्रभावी तरीका है।

4. गाड़ी खुले न करें पार्क

आप अपनी गाड़ी को कहां पर पार्क करते हैं, यह बहुत मायने रखता है। अगर आपने अपनी गाड़ी को ऐसी जगह पर पार्क किया है, जहां पर पानी जमता है या फिर सीधे बारिश का पानी उस पर पड़ती है, तो उसके टायर से लेकर साइलेंसर तक सबकुछ खराब हो सकता है। अपनी गाड़ी को हमेशा छांव, शेड, गैरेज या फिर कम से कम ऐसी जगह पर पार्क करें जहां पर पानी न जमता हो और सीधी बारिश का पानी आपकी गाड़ी पर नहीं पड़ता।

5. इन चीजों का भी रखें ध्यान

बारिश के मौसम में ब्रेक्स, साइलेंसर, नट-बोल्ट, दरवाजों के कब्जों पर जंग लगने का खतरा सबसे ज्यादा होता है। इन छोटी लेकिन जरूरी चीजों का ध्यान रखें। इन पर नियमिर पूर से ऑयल, ग्रीस या लुब्रिकेशन स्प्रे का इस्तेमाल करते रहें। ऐसा करने से ये पार्ट्स लंबे समय तक और सही से काम करते हैं। इसके साथ ही जंग लगने का खतरा भी कम रहता है।

महिंद्रा लेकर आई एक्सयूवी 3XO का नया वेरिएंट, बाकी ट्रिम से कितनी है अलग

महिंद्रा ने अपनी पॉपुलर Mahindra XUV 3XO REVX का नया मिड-स्पेक वेरिएंट लॉन्च किया है। इसमें नई ग्रिल अलॉय व्हील्स इंटीरियर थीम और सीट अपहोल्स्ट्री जैसे बदलाव हैं। यह पांच रंगों में उपलब्ध है और इसमें 16 इंच के ब्लैक अलॉय व्हील्स हैं। इसमें डुअल 10.25-इंच स्क्रीन पैनोरमिक सनरूफ और 6-स्पीकर साउंड सिस्टम जैसे फीचर्स हैं। सुरक्षा के लिए 6 एयरबैग दिए गए हैं।

नई दिल्ली। महिंद्रा ने अपनी पॉपुलर Mahindra XUV 3XO REVX के लिए नए मिड-स्पेक वेरिएंट को हाल ही में लॉन्च किया है। यह नए वेरिएंट पहले से मिल रही वेरिएंट्स की तुलना में कुछ खास बदलावों के साथ आते हैं, जैसे- नई ग्रिल, अलॉय व्हील्स, इंटीरियर थीम और सीट अपहोल्स्ट्री दी गई है। आइए इसके बारे में विस्तार में जानते हैं कि यह किन खास फीचर्स के साथ लेकर आई गई है।

Mahindra XUV 3XO REVX का डिजाइन

REVX A में बॉडी-कलर्ड ग्रिल दी गई है, जिसमें रेगुलर XUV 3XO जैसी ही क्रोम स्लैट्स हैं। इसमें LED DRLs के साथ वही प्रोजेक्टर LED हेडलाइट्स भी मिलती हैं। बंपर का निचला हिस्सा अभी भी ब्लैक आउट है जिसमें कुछ घुमावदार डिजाइन एलिमेंट्स हैं।

इसे पांच कलर में लेकर आया गया है, जो एवरेस्ट व्हाइट, गैलेक्सी ग्रे, नेबुला ब्लू, स्टील्थ ब्लैक और टैंगो रेड है। इसके स्टील्थ ब्लैक कलर में ग्रे ग्रिल मिलती है, जबकि बाकी कलर में बॉडी-कलर्ड फिनिश दिया गया है।

इसे साइड से देखने पर 16-इंच के ब्लैक अलॉय व्हील्स मिलते हैं, जो नए वेरिएंट को रेगुलर ट्रिम्स से ज़्यादा स्पोर्टी बनाते हैं। इसे अलग दिखाने के लिए महिंद्रा ने C-पिलर पर REVX बैज जोड़ा है। इसके व्हील आर्च और दरवाजों पर ब्लैक बॉडी क्लैडिंग जारी है। इसके रूफ, रूफ रेल्स और A-, B-, C-पिलर भी काले रंग में फिनिश किए गए हैं। इसके पीछे की तरफ ही कनेक्टेड LED टेल लाइट्स और रिफ्लेक्टर और सिल्वर स्किड प्लेट के साथ ब्लैक बंपर दिया गया है।

Mahindra XUV 3XO REVX का इंटीरियर

XUV 3XO के स्टैंडर्ड और REVX दोनों वेरिएंट में एक ही ब्लैक / व्हाइट डैशबोर्ड दिया गया है। इसके अलावा, डैशबोर्ड पर डुअल 10.25-इंच स्क्रीन और 3-स्पोक स्टीयरिंग व्हील दिए गए हैं। बाकी चीजें पहले की तरह ही है।

नई KTM 390 एडवेंचर X भारत में लॉन्च, क्रूज कंट्रोल समेत एडवांस्ड फीचर्स से हुई लैस

केटीएम इंडिया ने अपनी लोकप्रिय KTM 390 Adventure X को और भी अधिक शक्तिशाली फीचर्स के साथ अपडेट किया है। इस एडवेंचर मोटरसाइकिल में कॉर्नरिंग एबीएस क्रूज कंट्रोल सिस्टम और कॉर्नरिंग ट्रैक्शन कंट्रोल जैसे कई एडवांस राइडिंग फीचर्स शामिल किए गए हैं। 3.03 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत पर लॉन्च की गई यह बाइक राइडर्स को बेहतर राइडिंग अनुभव प्रदान करेगी।

नई दिल्ली। केटीएम इंडिया ने अपनी पॉपुलर KTM 390 Adventure X और भी ज्यादा दमदार फीचर्स के साथ अपडेट कर दिया है। ऑस्ट्रियाई निर्माता कंपनी ने अपनी इस एडवेंचर मोटरसाइकिल में कई एडवांस राइडिंग फीचर्स को शामिल किया है। इसके डिजाइन में कोई बदलाव नहीं किया गया है, लेकिन फीचर्स की लिस्ट अब कहीं ज़्यादा एडवांस हो गई है। इसे 3.03 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है, जो पिछले मॉडल से 12,000 रुपये ज्यादा है। आइए इसके बारे में विस्तार से जानते हैं।

कई बेहतरीन फीचर्स से हुई लैस

KTM 390 Adventure X को कॉर्नरिंग ABS, क्रूज कंट्रोल सिस्टम और कॉर्नरिंग ट्रैक्शन कंट्रोल जैसे फीचर्स से लैस किया गया है। ये ऐसे फीचर्स हैं, जो आमतौर पर बड़ी और महंगी मोटरसाइकिलों में देखने के लिए मिलते हैं। बाइक में अब तीन राइडिंग मोड्स को शामिल किया गया है, जो स्ट्रीट (Street), रेन (Rain) और ऑफ-रोड (Off-Road) है। ये राइडिंग मोड्स राइडर को जरूरतों के हिसाब से अलग-अलग थ्रॉटल मैप्स प्रदान करते हैं। इन मोड्स को टॉगल करने के लिए स्टैंडर्ड मॉडल से स्विचगियर दिया है, जिसमें क्रूज कंट्रोल बटन और स्पीड कंट्रोल के लिए टॉगल स्विच भी शामिल किया गया है।

KTM 390 Adventure X का इंजन

इसमें मैकेनिकल तौर पर मौजूदा स्टैंडर्ड सेटअप बरकरार रखा गया है। इसका ब्रेकिंग सिस्टम पहले जैसा ही है। इसके फ्रंट में 19-इंच के अलॉय व्हील्स और रियर में 17-इंच के अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। इसमें अभी भी वही 399 cc LC4c सिंगल-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 45 hp की पावर और 9 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह अपडेटेड KTM 390 Adventure X उन राइडर्स के लिए एक बेहतरीन विकल्प है जो अपनी एडवेंचर बाइक में ज़्यादा टेक्नोलॉजी और कंट्रोल चाहते हैं। क्या आप इस नई 390 Adventure X को टेस्ट राइड करना चाहेंगे?

सुपर कंप्यूटर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस फ्यूचर ग्रीन इंडस्ट्रीज बनाते हैं

विजय गर्ग

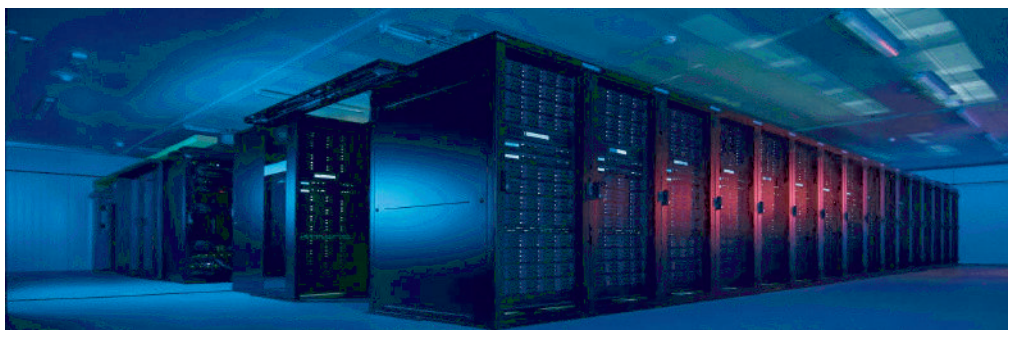

उन्नत सामग्री की अगली पीढ़ी को पकाने के लिए सुपर कंप्यूटर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) अपरिहार्य उपकरण हैं। उन्नत कंप्यूटर वैज्ञानिकों को लाखों संभावित उम्मीदवारों का उपयोग करके बेहतर मिश्र, रासायनिक उत्प्रेरक और प्लास्टिक को तेजी से डिजाइन करने की अनुमति देते हैं। मानव परीक्षण और त्रुटि को कम करने के लिए कल की उच्च तकनीक सामग्री का इस तरह से परीक्षण किया जा रहा है।

जीवाश्म ईंधन मुक्त भविष्य के लिए दुनिया को फिर से आकार देने का मतलब है जल्दी से काम करना। जलवायु वैज्ञानिकों का कहना है कि पर्यावरण क्षति को कम करने के लिए उत्सर्जन 2025 तक चरम पर होना चाहिए। और कम्प्यूटेशनल सामग्रियों को एक साथ निर्माताओं के साथ डिजाइन करके जो उन्हें जल्दी से बना और परीक्षण कर सकते हैं, विज्ञान तेजी से अधिक शक्तिशाली सौर कोशिकाओं और कार बैटरी जैसी तकनीकों को विकसित कर सकता है।

माइकल सिर्फ एक कार्य के लिए समर्पित एक सुपर कंप्यूटर का नाम है - परम बैटरी प्रणाली की खोज। यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन के शोधकर्ता माइकल (प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी और रसायनज्ञ माइकल फैराडे के नाम पर) का उपयोग बैटरी जीवन, प्रदर्शन और कीमत में सुधार करने के लिए हर नई सामग्री और सेल के प्रकार में प्रोटोटाइप का डिजिटल निर्माण और परीक्षण करने के लिए करेंगे।

ठोस-राज्य बैटरी के लिए एक लचीला डिजाइन खोजना इलेक्ट्रिक वाहनों और ऊर्जा भंडारण के लिए एक बड़ी सफलता होगी। हल्का, लंबे समय तक चलने वाला और सस्ता ठोस-राज्य तकनीक वाहन रेंज और चार्जिंग समय में काफी सुधार कर सकती है। और सौर और पवन ऊर्जा से ऊर्जा को उपयोग के लिए तैयार होने तक अधिक कुशलता से संग्रहीत किया जा सकता है।

अमेरिका और ब्रिटेन में काम करने वाले वैज्ञानिकों ने 1970 के दशक में आज की इलेक्ट्रिक कारों, लैपटॉप और कैमरों में इस्तेमाल की जाने वाली लिथियम आयन बैटरी को विकसित करने में रास्ता बनाया। लेकिन वाणिज्यिक इकाइयों को केवल एक बार विकसित किया गया था जब जापानी इलेक्ट्रॉनिक्स दिग्गज सोनी ने बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए 1991 में प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ाया।

कंपनियों और विश्वविद्यालयों के बीच साझेदारी अंततः ठोस-राज्य बैटरी डिजाइन को क्रैक कर सकती है। स्टार्टअप ब्रिटिशवोल्ट, केमिकल्स कंपनी जॉनसन मैथी और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी सात-मजबूत कंसोर्टियम का हिस्सा है जो टिकाऊ उत्पाद बनाने के लिए अंतरराष्ट्रीय दौड़ जीतने की तलाश में है। लेकिन वे कई में से केवल एक हैं।

लिथियम-आयन बैटरी में उपयोग किए जाने वाले तरल या बहुलक इलेक्ट्रोलाइट्स को बदलना, अक्सर सिरेमिक जैसे ठोस कंडक्टर के साथ ओवरहीटिंग का खतरा होता है, कुछ बड़ी संख्या में क्रंचिंग हो सकती है। इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता मर्सिडीज-बेंज आईबीएम और उसके क्वांटम कंप्यूटरों के साथ सफल डिजाइन खोजने के लिए काम कर रहे हैं जिसमें समुद्री जल में पाई जाने वाली सस्ती और भरपूर सामग्री शामिल हो सकती है।

निसान 2024 में एक ठोस-राज्य बैटरी संयंत्र खोलने के लिए नासा के साथ साझेदारी कर रहा है जो कोई दुर्लभ या महंगी धातु का उपयोग नहीं करता है। योजना उन सामग्रियों का एक बड़ा डेटाबेस बनाने की है जिन्हें सर्वोत्तम संयोजनों के लिए मिश्रित और मिलान किया जा सकता है। लेकिन वस्तुतः हर उद्योग में कम्प्यूटेशनल सामग्रियों की आवश्यकता हो सकती है। और तेजी से बिजली, उनकी क्रूरता, या जिस तरह से वे प्रकाश को प्रतिबिंबित करने की क्षमता पर लाखों पदार्थों को वर्गीकृत करके, एआई और सुपर कंप्यूटर सिर्फ किसी भी चीज के लिए सामग्री बनाने की प्रक्रिया को गति दे सकते हैं।

ड्यूक विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने 200,000 से अधिक पदार्थों की सूची से दो नए चुंबकीय सामग्री डिजाइन करने के लिए सुपर कंप्यूटर का सफलतापूर्वक उपयोग किया है। एक हार्ड ड्राइव और कंप्यूटर मेमोरी बनाने के लिए उपयोगी है, और दूसरा कोई दुर्लभ पृथ्वी धातु का उपयोग नहीं करता है और उच्च तापमान पर काम कर सकता है।

कम्प्यूटिंग पावर ने टोरंटो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को ईंधन और प्लास्टिक बनाने के लिए उत्प्रेरक के एक वर्ग की पहचान करने में भी मदद की जो ईंधन और प्लास्टिक बनाने के लिए ग्रीनहाउस गैस कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) को एथिलीन में जल्दी से बदल सकता है।

टीम ने एक कंप्यूटर एल्गोरिथ्म बनाया जो 240 से अधिक अणुओं के हजारों संयोजनों के माध्यम से चला, जिससे 17 नए उत्प्रेरक की खोज हुई। उनकी खोज केवल अक्षय ऊर्जा का उपयोग करके मूल्यवान रासायनिक कच्चे माल में अपशिष्ट CO_2 को बदलने वाले $ 60 बिलियन के बाजार तक पहुंच को सक्षम कर सकती है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

बारिश का मौसम विषाणुओं के पांव

विजय गर्ग

बरसात के दिनों में मच्छरों के काटने से सिर्फ डेंगू और मलेरिया ही नहीं फैलता, लोगों को चिकनगुनिया भी हो जाता है । यह कभी - कभी घातक हो जाता है। एशिया और अफ्रीका महाद्वीप में चिकनगुनिया से बड़ी संख्या में लोग पीड़ित होते हैं। यह रोग संक्रमित मच्छरों के काटने से फैलता है। समय रहते लक्षणों की पहचान कर ली जाए, तो चिकनगुनिया का इलाज संभव है। अगर एहतियात बरत लें, तो इससे बचा जा सकता है। मच्छरों के काटने का असर सात दिनों में दिखने लगता है। संक्रमण के दौरान जोड़ों और मांसपेशियों में अत्यधिक दर्द होता है। मरीज को तेज बुखार होता है। कभी-कभी यह जानलेवा साबित होता है। चिंता की बात यह है कि चिकनगुनिया की कोई विशिष्ट दवा नहीं है। लिहाजा लक्षणों के आधार पर ही चिकित्सक इस रोग का उपचार करते हैं। संक्रमित व्यक्ति में चिकनगुनिया का विषाणु लगभग एक हफ्ते तक रहता है । इस दौरान कोई मच्छर काट ले तो वह भी संक्रमित हो जाता है। इसके बाद वह मच्छर जिसे भी काटता है, उसे चिकनगुनिया हो जाता है। लक्षण सिर्फ बुखार नहीं अचानक तेज बुखार आना ही चिकनगुनिया का लक्षण नहीं है। इसके लक्षण हफ्ते भर से ज्यादा रह सकते हैं। इसके लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। मरीज को थकान अधिक महसूस हो, सिर में दर्द हो और चक्कर आने के साथ उल्टी आए, तो इसे गंभीरता से लेने की जरूरत है। मरीज को इस दौरान बहुत कमजोरी महसूस होती है। जोड़ो और मांसपेशियों में दर्द होता है। कभी - कभी शरीर में चकत्ते और दाने निकल आते हैं। जोड़ों का दर्द लंबे समय तक बना रह सकता है। कमजोरी और थकावट भी कई हफ्ते तक रहती है।

जोखिम की कई वजह चिकनगुनिया फैलाने वाले मच्छर जल जमाव वाले इलाकों में खास तौर से पनपते हैं। ऐसी जगह रहने वाले लोगों को संक्रमित होने का खतरा अधिक होता है। निर्माण स्थलों और झुग्गी-झोपड़ी इलाकों में चिकनगुनिया अधिक फैलता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने से भी लोग इसकी चपेट में आ जाते हैं। खास तौर से गर्भवती महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग । जटिलता बढ़ने पर न केवल यकृत विकार बल्कि मस्तिष्क संबंधी समस्याएं पैदा होती हैं। गुर्दे के नुकसान का भी जोखिम बना रहता है। उपचार और एहतियात मच्छरों से बचाव ही चिकनगुनिया से बचने का सर्वोत्तम उपाय है। छतों पर टूटे-फूटे बर्तनों और पक्षियों के लिए रखे मिट्टी के बर्तनों में जमा पानी को साफ करते रहना चाहिए। घरों के बाहर लेमनग्रास जैसे पौधे लगाएं जो मच्छरों को दूर रखते हैं। चिकित्सक बुखार कम करने, जोड़ो और मांसपेशियों में दर्द को कम करने के लिए संबंधित दवाएं देते हैं। मरीज के शरीर में पानी कम न हो, इसका ध्यान रखना चाहिए। उसे पर्याप्त नारियल पानी दिया जाना चाहिए।

आहार का असर

चिकनगुनिया के मरीज के आहार पर विशेष ध्यान देना चाहिए। कुछ खाद्य पदार्थ सूजन बढ़ा देते हैं। इससे रोग ठीक होने में समय लगता है। अधिक चीनी वाले पदार्थ जैसे बोतलबंद शीतल पेय, फलों का रस, मिठाइयां, केक आदि नहीं लेना चाहिए। ये पदार्थ प्रतिरक्षा तंत्र को कमजोर करते हैं। मरीज को वसायुक्त भोजन और मांसाहार बचना चाहिए। शराब भी प्रतिरक्षा प्रणाली

कमजोर करती है। मरीज को मसालेदार और अम्लीय पदार्थ भी नहीं लेना चाहिए। इस रोग उबरने में संतरा, पपीता और जामुन मदद करते हैं। मरीज को सब्जियों में पालक, केला और गाजर दिया जाना चाहिए। भोजन में दाल, मछली और वसारहित चिकन दिया जा सकता है। सूखे मेवे में बादाम का सेवन किया जा सरकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

गर्मी बढ़ा रहे हैं घटते हुए बादल

विजय गर्ग

पृथ्वी के लिए बादलों के आवरण का विशेष महत्व है। बादल न सिर्फ धरती की प्यास बुझाते हैं, बल्कि सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करके हमारे ग्रह को ठंडा रखने में भी मदद करते हैं, लेकिन अब घने काले बादलों का क्षेत्र सिकुड़ने लगा है। इन बादलों को स्टार्म क्लाउड भी कहा जाता है। चिंता की बात यह है कि यह सिकुड़न अधिक सौर विकिरण को अंदर आने दे रही है। नासा के नेतृत्व में किए गए एक नए अध्ययन से पता चलता है कि पृथ्वी की हाल में गर्मी बढ़ने का यह सबसे बड़ा कारण है।

उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों और भूमध्य रेखा तथा ध्रुवीय क्षेत्रों के बीच के इलाकों में काले बादलों के क्षेत्र प्रति दशक 1.5 प्रतिशत से तीन प्रतिशत तक सिकुड़ गए हैं। ये क्षेत्र पहले बहुत अधिक मात्रा में सूर्य के प्रकाश को वापस अंतरिक्ष में परावर्तित करते थे। बादलों के गायब होने से अधिक गर्मी पृथ्वी की सतह तक पहुंच रही है। आस्ट्रेलिया के मोनाश विश्वविद्यालय के प्रोफेसर क्रिश्चियन जैकब ने कहा कि यह खोज स्पष्ट करती है कि पृथ्वी अब कितनी अतिरिक्त सौर ऊर्जा अवशोषित करती है। विशेषज्ञों ने अपने अध्ययन 2001 से 2023 तक के उपग्रह डाटा का उपयोग किया। उन्होंने बादलों के आवरण और सौर विकिरण पर बादलों के प्रभाव को मापा। इस प्रभाव को 'शार्टवेव रेडिएशन इफेक्ट' कहा जाता है। विज्ञानियों का एक उद्देश्य यह पता लगाना था कि बादल सूर्य की कितनी रोशनी वापस लौटाते हैं। अधिक नकारात्मक संख्या का मतलब है कि अधिक सूर्य की रोशनी परावर्तित हो रही है, लेकिन विज्ञानियों ने यह भी पाया कि मजबूत रेडिएशन प्रभाव वाले क्षेत्र सिकुड़ रहे हैं।

इन सबका नतीजा अधिक गर्मी के रूप में सामने आ रहा है। प्रति दशक अवशोषित सौर ऊर्जा में कुल वृद्धि में बड़ा हिस्सा सिकुड़ते बादल क्षेत्रों का था। बादल वाले क्षेत्र में छोटी सी कमी भी पृथ्वी के ताप पर बड़ा प्रभाव डालती है । अध्ययन के अनुसार अधिकांश गर्मी काले बादलों के क्षेत्र में कमी के कारण आई है। बादलों के भीतर के परिवर्तनों के कारण ऐसा नहीं हुआ। काले बादल क्यों सिकुड़ रहे हैं? विज्ञानियों का कहना है यह मुख्य रूप से वैश्विक पवन पैटर्न परिवर्तनों के कारण हो रहा है। हैडली सेल (भूमध्य रेखा से उठने वाली हवा) चौड़ी हो रही है तथा जेट स्ट्रीम (वायुमंडल में तेज बहने वाली हवा) ध्रुवों की ओर बढ़ रही है। ये रुझान जलवायु माडल द्वारा ग्रह के गर्म होने की भविष्यवाणी से मेल खाते हैं। शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि जेट स्ट्रीम में गर्मी से प्रेरित बदलाव के कारण ध्रुवीय क्षेत्रों के आसपास के क्षेत्रों में काले बादल पीछे हट रहे हैं। अध्ययन हाल में देखी गई असाधारण गर्मी की पहेली को समझने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और तत्काल जलवायु कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर देता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

10 जुलाई – गुरु पूर्णिमा विशेष
गुरु के प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता...!

"गुरु पूर्णिमा" हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म,
आषाढ़ मास की पूर्णिमा में मनाते कर्म।
गुरु के प्रति श्रद्धा, सम्मान एवं कृतज्ञता,
हम करते सदा प्रकट न हो अनभिज्ञता।
यह ज्ञान व शिक्षा के महत्व को दर्शाता,
शिक्षा माध्यम ही जीवन बेहतर बनाता।

"गुरु पूर्णिमा₹ हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म,
आषाढ़ मास की पूर्णिमा में मनाते कर्म।
आध्यात्मिक विकास महत्वपूर्ण है होता,
भिन्न पौराणिक कथाओं से गहरा नाता।
महाभारत में कृष्ण ने गुरु महत्व बताया,
ईश्वर ने अर्जुन को गुरु अस्तित्व बताया।

"गुरु पूर्णिमा" हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म,
आषाढ़ मास की पूर्णिमा में मनाते कर्म।
इसी दिन महर्षि वेदव्यास का जन्म हुआ,
उन्होंने वेदों को व्यवस्थित विभक्त किया।
ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद,
महाभारत की रचना एवं 18 पुराण भेंट।

– संजय एम तराणेकर

"ख़ामोश रिश्तों की चीख़"

तुम कहते रहे —
"तुम तो हमेशा ज़्यादा सोचती हो..."
मैं हर बार कम बोलती गई,
हर बार थोड़ा और खोती गई।

तुमने कहा —
"तुम बातों को बढ़ा देती हो..."
मैंने हर घाव को छोटा मान लिया,
अपने आँसुओं को तकिए में छिपा लिया।

तुमने जताया —
"मैंने वो मतलब नहीं निकाला..."
और मैं अपने अर्थ को
अपने ही अंदर गुम करती गई।

मैंने हर बार तुम्हारे शब्दों से ज़्यादा
तुम्हारे मौन को पढ़ा।

मैंने हर तर्क को
प्यार की तरह समझा।

पर जब खामोशी भी
अब संवाद नहीं रही,
तो मैंने खुद से कहा —
₹अब और नहीं...₹

अब मैं किसी की सही होने की परिभाषा में
गलत नहीं बनूंगी।
अब मैं अपने भीतर के आइने से
मुलाक़ात करूंगी।

– प्रियंका सौरभ

"दक्ष की दीपशिखा"

डॉ. सत्यवान सौरभ

ब्रह्मा के मानस पुत्र जो, यज्ञों के अधिपति कहाए,
धूप-दीप से पावन धरती, जिनके पदचिह्न सुलगाए।
दक्ष प्रजापति नाम जिनका, अनुशासन जिनकी वाणी,
धर्म की रेखाएं खींचें, रचें सृष्टि की नई कहानी।

कन्याएँ थीं सप्त सागरों सी, शील-संस्कारों की खान,
बांधीं सब ऋषियों को बंधन, किया नवजीवन का दान।
सावित्री से संध्या, रोहिणी से काल का क्रम,
चंद्र को सौंपा वह विश्वास — समय बने सुंदरतम।

पर जब हुआ शिव से विवाह, सती ने उठाई बात,
दक्ष न माने योगी को, देखा बस औघड़ ठाठ।
ना पहचाना आत्म-स्वरूप, बस देखा भस्म का रंग,
मर्यादा में उलझ गया, बुन बैठा तिरस्कार का जाल तंग।

यज्ञ रचा पर भाव नहीं था, शिव को आमंत्रण खो गया,
सती गईं सम्मान हेतु, और प्राणों से रो गईं।
शिव ने खोया संयम फिर, वीरभद्र बन गरजे आकाश,
बिन भक्ति यज्ञ हो गया राख, टूटा धर्म का पलाश।

दक्ष का सिर गया कट, पर शिव ने फिर दिया जीवन,
बकरी-मुख से पुनः उठाया — सीख यही, क्षमा है साधन।
सिखाया जग को यह बात — ना हो धर्म में दंभ,
अनुशासन से बड़ा प्रेम, और प्रेम में छुपा है यज्ञ।

आज भी जब हो यज्ञ कहीं, सती की चिता सुलगती है,
जब बेटी की ना सुनी जाए, हर अग्नि मौन भड़कती है।
दक्ष सिखा गए संयम, पर शिव ने सिखाया त्याग,
धर्म वहीं जहां समता हो, नहीं जहां केवल भाग।

हे दक्ष! तुम्हारी जयंती पर, दीप जलाएँ ज्ञान के,
क्योंकि तुमने यज्ञ किया था — पर सीखा अग्निपथ प्राण के।
श्रद्धा से झुकते हैं शीश, पर आँखें अब खोलेंगे,
दूसरों की राह भी सुनेंगे — यही तुमसे बोलेंगे।

धर्मांतरण का धंधा: विदेशी फंडिंग और सामाजिक विघटन का षड्यंत्र

उत्तर प्रदेश में एटीएस ने एक बड़े धर्मांतरण रैकेट का खुलासा किया है, जिसमें विदेशी फंडिंग के जरिए करीब 100 करोड़ रुपये 40 खातों में भेजे गए। मुख्य आरोपी 'छांगरू बाबा' उर्फ जमशेदुद्दीन के नेतृत्व में यह गिरोह ऊंची जाति की लड़कियों के लिए 15-16 लाख रुपये की दर से धर्मांतरण कराता था। यह मामला केवल आस्था नहीं, बल्कि एक सुनियोजित सामाजिक षड्यंत्र है जो जाति, धर्म और लिंग के आधार पर राष्ट्र की एकता को तोड़ने का प्रयास करता है। इसे धार्मिक स्वतंत्रता नहीं, संगठित अपराध के रूप में देखा जाना चाहिए।

डॉ. सत्यवान सौरभ

धर्म किसी भी समाज की आत्मा होता है, लेकिन जब धर्म का प्रयोग 'धंधे' में बदल जाए तो सवाल सिर्फ आस्था का नहीं, राष्ट्र की सुरक्षा, सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों का हो जाता है। उत्तर प्रदेश में एटीएस द्वारा उजागर किए गए एक बड़े धर्मांतरण रैकेट ने यही भयावह सच्चाई हमारे सामने रखी है। कथित रूप से ₹छांगरू बाबा₹ उर्फ जमशेदुद्दीन के नेतृत्व में यह गिरोह न केवल भोले-भाले लोगों का धर्मांतरण कर रहा था, बल्कि इसके पीछे एक व्यवस्थित नेटवर्क, विदेशी फंडिंग और जातिगत लक्ष्य निर्धारण भी शामिल था।

जिस प्रकार से इस रैकेट की कार्यप्रणाली सामने आई है, वह धर्मांतरण को एक सुनियोजित व्यवसाय के रूप में प्रकट करती है। यह कोई व्यक्तिगत आस्था का निर्णय नहीं, बल्कि विदेशी पैसों से संचालित एक मिशन था – जिसमें धर्म, जाति, स्त्री और समाज को एक वस्तु की तरह देखा गया। एफआईआर और जांच रिपोर्ट के अनुसार, धर्मांतरण के लिए बाकायदा 'रेट कार्ड' था। ऊंची जाति की लड़कियों के लिए धर्मांतरण की दर 15-16 लाख रुपये तक थी, जबकि अन्य लड़कियों के लिए 8-10 लाख रुपये। सोचिए, जब धर्म को भी जाति और लिंग के आधार पर मूल्यांकित किया जाने लगे, तो वह किस स्तर तक गिरावट का प्रतीक बनता है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि इस रैकेट के पास 40 बैंक खाते थे जिनमें विदेशों से 100 करोड़ रुपये से अधिक की रकम भेजी गई। यह रकम किसके इशारे पर भेजी गई, किन उद्देश्यों के लिए, और किन देशों से – यह सवाल सिर्फ जांच एजेंसियों के नहीं, पूरे देश के हैं। क्या यह केवल धर्मांतरण के लिए था या इसके पीछे कोई और बड़ा वैश्विक, राजनीतिक या वैचारिक षड्यंत्र भी छिपा है?

इस रैकेट की कार्यशैली में सोशल मीडिया का जबरदस्त उपयोग किया गया। वीडियो, मोटिवेशनल भाषण, 'इस्लाम कबूल करने से मिली राहत' जैसे फर्जी वीडियो वायरल कर कमजोर तबकों को बरगलाया गया। पहले मानसिक रूप से प्रभावित किया गया, फिर आर्थिक लालच दिया गया और अंत में जबरन धर्मांतरण। यह साइकोलॉजिकल वॉरफेयर जैसा है – जहां पहले मस्तिष्क जीता जाता है, फिर शरीर। और सबसे दुखद यह कि इसे धर्म का नाम दिया गया।

इस प्रकरण में बलरामपुर जिले के एक पूरे परिवार के धर्मांतरण की पुष्टि हुई है। वहां महिलाओं और बच्चों को टारगेट कर उन्हें धर्म बदलने के लिए मजबूर किया गया। यह कोई एक अपवाद नहीं, बल्कि उसी पैटर्न का हिस्सा है – जिसमें ग्रामीण, अशिक्षित और आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों को निशाना बनाया जाता है। यह सामाजिक असमानता का शोषण है। जब राज्य, समाज और प्रशासन इन परिवारों की रक्षा नहीं कर पाते, तो ऐसे गिरोह अपना मकड़जाल फैलाते हैं।

इस रैकेट का सबसे खतरनाक पहलू था – जातिगत दर निर्धारण। ऊंची जाति की लड़कियों के धर्मांतरण के लिए अधिक पैसा दिया जाता था। इसका मतलब है कि धर्मांतरण सिर्फ धर्म का नहीं, जाति-सामाजिक संरचना को तोड़ने का औजार भी बन चुका है। यह न केवल हिंदू समाज को कमजोर करने की चाल है, बल्कि राष्ट्र को आंतरिक रूप से विखंडित करने की भी रणनीति है।

इस मामले पर तथाकथित सेक्युलर बुद्धिजीवी वर्ग चुप है। वही वर्ग जो 'धर्मनिरपेक्षता' की दुहाई देता है, 'संविधान की आत्मा' की बात करता है, आज गूंगा बना बैठा है। क्यों? क्या धर्मांतरण को भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मान लिया गया है? क्या किसी गरीब, दलित, महिला या आदिवासी का जबरन धर्म बदलवाना मानवाधिकारों का उल्लंघन नहीं है? अगर किसी दलित के मंदिर में प्रवेश करने से किसी को आपत्ति है, तो उस पर शोर मचता है, लेकिन जब उसी दलित को पैसों से धर्म बदलवाया जाता है तो कोई नहीं बोलता। यह मौन स्वयं एक अपराध है।

यह भी गौरतलब है कि ऐसे मामलों पर राजनीतिक दल अक्सर वोट बैंक की राजनीति के कारण खुलकर प्रतिक्रिया नहीं देते। अल्पसंख्यकों की 'संवेदनशीलता' के नाम पर ऐसे राष्ट्रघातक कृत्यों को नजरअंदाज किया जाता है। सवाल यह है कि क्या देश की अखंडता और सामाजिक समरसता वोट बैंक से भी छोटी हो गई है? अगर कोई हिंदू संगठन धर्मांतरण रोकने की बात करता है तो उसे कट्टरपंथी कह दिया जाता है, लेकिन जब धर्मांतरण के नाम पर विदेशी पैसा आकर समाज को तोड़ता है, तो सब चुप हो जाते हैं।

यह मामला अकेला नहीं है। देश के विभिन्न हिस्सों में ऐसे गिरोह सक्रिय हैं जो सामाजिक दुर्बलता, आर्थिक मजबूरी और शिक्षा की कमी का लाभ उठाकर धर्मांतरण करा रहे हैं। इससे निपटने के लिए धर्मांतरण विरोधी कानूनों को और मजबूत बनाना चाहिए। विदेशी फंडिंग की निगरानी के लिए डिजिटल ट्रैकिंग तंत्र को सशक्त करना चाहिए। प्रभावित परिवारों के पुनर्वास और मनोवैज्ञानिक काउंसलिंग की व्यवस्था होनी चाहिए। शिक्षा और रोजगार के माध्यम से समाज को आत्मनिर्भर और सजग बनाना जरूरी है।

धर्म आत्मा का विषय है, उसे सौदेबाज़ी का औजार बनाना न केवल अपराध है, बल्कि मानवता का भी अपमान है। धर्मांतरण जब व्यक्तिगत चेतना से नहीं, लालच, भय या फरेब से होता है, तो वह धर्म नहीं, शोषण होता है। हमारे लिए जरूरी है कि हम धर्मांतरण की आड़ में चल रहे इन संगठित अपराधों को पहचानें, उनका विरोध करें और समाज को ऐसी गतिविधियों से बचाने के लिए संगठित प्रयास करें। धर्म को न बेचे, न खरीदें – बल्कि समझें, आत्मसात करें और उसकी गरिमा को बचाए रखें।

कहानी: "राजा और मशीन-मंत्री की ट्विटर-लीला"

विजय गर्ग

(एक बाल्य-बुद्धि साम्राज्य की सच्ची कहानी)

किसी समय की बात है — पश्चिमी दुनिया के उस महाद्वीप में, जहाँ सूरज भी चश्मा लगाकर उगता था और चाँद घमंड में चूर हुआ करता था, वहीं एक अनोखा राज्य हुआ करता था।

इस राज्य में एक बाल-बुद्धि राजा हुआ — नाम था डोनाल्ड राजा। वह अपने झक्क सफेद बालों और राजसी जुबान के लिए विश्वप्रसिद्ध था। कहते हैं, उसकी बातों में तलवार नहीं होती थी, लेकिन तलवार से कहीं ज़्यादा धार होती थी।

इसी राज्य में एक और अद्भुत प्राणी था — एलन, जिसे प्रजा यंत्र-मंत्री कहती थी। वह कोई सामान्य मंत्री नहीं था, बल्कि मशीनों से बातें करता था, चाँद पर घर बसाने के सपने देखता था, और आए दिन कोई न कोई यंत्र उड़ा देता था।

इन दोनों में बड़ी यारी थी — चुनावों में एक-दूसरे की पीठ थपथपाते थे, सभाओं में गले मिलते थे और ट्विटर पर एक-दूसरे को दिल वाले इमोजी भेजते थे।

इनकी भाषणबाज़ी में एक बात अक्सर गूंजती थी

जनता भी भोली थी, चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गई, और डोनाल्ड को राजा बना बैठी।

उन्हें क्या मालूम था कि यह राजा नहीं, बाल-बुद्धि बालक है।

कलह का अंकुर

समय बदला, स्वार्थ टकराए — और फिर एक दिन, दरबार की सभा में डोनाल्ड राजा ने कहा:

> "हमारा यंत्र-मंत्री तो सिर्फ़ मेरी वजह से बड़ा बना है!"

यह सुनते ही यंत्र-मंत्री एलन ने अपने लैपटॉप पर प्रहार किया, और ट्विटर पर एक बाण छोड़ा:

राजमहल की दीवारें काँप उठीं। दरबारियों ने चौंककर कहा —

महाराज! यह तो ट्विटर संग्राम है!

बचपन पुनः जाग उठा

राजा ने तुरंत पलटवार किया:

एलन ने जवाब में एक मीम पोस्ट किया — जिसमें राजा को खिलौने वाले राजा के रूप में दिखाया गया, और नीचे लिखा:

राजा ने भी चुप्पी नहीं साधी — एक पुराना वीडियो डाला, जिसमें यंत्र-मंत्री रॉकेट पर चढ़ते समय गिर रहा था, और कैप्शन दिया:

प्रजा हुई भ्रमित

यह सब देखकर जनता का सिर चकरा गया।

बच्चे बोले –

"माँ! ये लोग भी तो हमारी तरह लड़ते हैं!"

माँ बोली –

"नहीं बेटा, तुम तो कम से कम खिलौनों के लिए लड़ते हो... ये लोग तो 'इगो' के लिए लड़ते हैं

निष्कर्ष – राजा का बचपन और मंत्री का मनोबल

राजा अब भी ट्विटर पर दिन में तीन बार व्यंग्य करता है, और यंत्र-मंत्री हर बार उसमें "Edit" बटन जोड़ने की धमकी देता है।

सच कहा जाए तो, यह कोई साधारण तकरार नहीं...

बल्कि एक बचपने का महाकाव्य है — जिसमें दुनिया की दो सबसे ऊँची कुर्सियाँ, बालक बुद्धि में डूबी हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

गरीब अफ्रीकी-अमेरिकी देशों की यात्रा पर मोदी क्यों

राजेश कुमार पासी

विपक्ष शुरू से ही प्रधानमंत्री मोदी की विदेश यात्राओं पर सवाल उठाता रहा है कि वो इतनी विदेश यात्राएं क्यों करते हैं । विपक्ष यह सवाल उठाता है कि इन विदेश यात्राओं का क्या फायदा है क्योंकि इन यात्राओं पर काफी पैसा खर्च होता है । ऑपरेशन सिंदूर के बाद मोदी जी का विपक्ष ने यह कहकर मजाक बनाया कि इतनी विदेश यात्राओं के बावजूद कोई भी देश भारत के साथ नहीं खड़ा हुआ । विपक्ष यह भी देखने को तैयार नहीं है कि इन्हीं विदेश यात्राओं का असर है कि कोई भी देश भारत के खिलाफ नहीं खड़ा हुआ । चीन और तुर्की पाकिस्तान के साथ इसलिए खड़े दिखाई दिए क्योंकि वो पाकिस्तान को हथियार सप्लाई करते हैं । भारत विरोधी होने के कारण चीन और तुर्की पाकिस्तान का साथ दे रहे थे । ऐसे तो भारत भी रूस, इजराइल, फ्रांस और अमेरिका के हथियारों से जंग लड़ रहा था । इस युद्ध की विशेषता यह रही कि भारत ने अपने बनाए हथियारों का ज्यादा इस्तेमाल किया । इस तरह देखा जाए तो भारत को किसी देश की मदद की जरूरत ही नहीं थी ।

प्रधानमंत्री मोदी २ जुलाई से 5 दिन की विदेश यात्रा के दौरान घाना, त्रिनिदाद और टोबैगो, अर्जेंटीना, ब्राजील और नामीबिया का दौरा कर रहे हैं । इस पर भी कांग्रेस के कई नेताओं के बयान सामने आ चुके हैं कि मोदी जी इन देशों की यात्रा पर क्यों जा रहे हैं । जिन देशों का कई दशकों से भारत के किसी प्रधानमंत्री ने दौरा नहीं किया है, वहां जाने का क्या जरूरत है । यहां तक मजाक बनाया जा रहा है कि मोदी जी बाकी बचे हुए देशों की भी यात्रा कर लेना चाहते हैं । हर बार की तरह घरेलू समस्याओं की दुहाई देते हुए मोदी जी की यात्रा पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं । ऐसे में देश की जनता के मन में भी सवाल उठ सकता है कि इन गरीब देशों की यात्रा करके मोदी जी क्या हासिल करने वाले हैं । इसका विश्लेषण करने की जरूरत है कि क्यों मोदी जी इन देशों की यात्रा कर रहे हैं ।

किसी भी राष्ट्र प्रमुख द्वारा विदेश यात्रा करने का मकसद दूसरे देशों के साथ सम्बन्धों को बढ़ाना होता है । आजकल तो ज्यादातर राष्ट्र प्रमुख विदेश यात्राएं अपने देश के व्यापार को बढ़ाने के लिए करते हैं । भारत धीरे-धीरे विश्व शक्ति बन रहा है, जिसके कारण जिम्मेदारियां भी बढ़ रही हैं । विश्व पटल पर भारत की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर चीन ने दक्षिण अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में अपनी पैठ बना ली है और भारत कहीं दिखाई नहीं दे रहा है । मोदी जी ने सत्ता में आते ही जान लिया था कि भारत को अगर वैश्विक शक्ति बनना है तो इन देशों के साथ सम्बन्ध बढ़ाने होंगे । मोदी जी के सत्ता में आने से एक साल पहले ही चीन ने दुनिया के गरीब देशों को अपने कर्ज जाल में फंसाने के लिए एक जबरदस्त चाल चली थी । उसने अपने बीआरआई प्रोजेक्ट के अन्तर्गत गरीब देशों को यह लालच दिया कि वो उनके देशों को एक ऐसे गलियारे से जोड़ेगा जिससे उनका आयात-निर्यात आसानी से पूरी दुनिया में हो सकेगा । उसने इस योजना के अन्तर्गत इन देशों में ऐसी विकास परियोजनाएं शुरू की जिससे इन देशों के बुनियादी ढांचे का निर्माण होना था । उसने इन देशों को यह लालच दिया कि इन विकास परियोजनाओं से इन देशों की आय बढ़ जाएगी और इन पर खर्च किया गया पैसा भी जल्दी वापिस आ जाएगा । इसके लिए चीन ने इन देशों को कर्ज दिया और कर्ज की शर्तों को गुप्त रखा गया । इन शर्तों का ही नतीजा है कि श्रीलंका बर्बाद हो गया है, मालदीव और पाकिस्तान मुश्किल में हैं । चीन का तरीका यही है कि उन गरीब देशों को कर्ज दो और उसके बदले उनके प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा कर लो । चीन की इस नीति से दक्षिण अमेरिकी और अफ्रीकी देश बर्बाद हो चुके हैं । मोदी जी अब इन देशों से सम्बन्ध बढ़ा रहे हैं ताकि चीन के इस कर्ज जाल से उन्हें बाहर निकालने में मदद दी जाए । भारत ऐसा करने के लिए इन देशों को कर्ज नहीं दे रहा है बल्कि इन देशों के विकास पर काम कर रहा है ताकि ये देश खुद ही चीन के कर्ज की वापसी कर सके । इसके लिए भारतीय कंपनियां इन देशों में निवेश कर रही हैं ताकि इन देशों में भी विकास की धारा बह सके । भारत इन देशों को प्राकृतिक संसाधनों की लूट से बचा कर इन संसाधनों का उचित दाम दिलाना चाहता है । सच कहे तो भारत को भी इन संसाधनों की जरूरत है लेकिन भारत चीन की तरह उन पर कब्जा नहीं चाहता बल्कि इन देशों के साथ व्यापार भी चाहता है ।

२०२३ की एक रिपोर्ट के अनुसार चीन ने अफ्रीकी देशों के लगभग 80 प्रतिशत व्यापार पर कब्जा कर लिया है और यही हाल दक्षिण अमेरिकी देशों का भी है । मोदी जी की इन पांच देशों की यात्रा भारत की सॉफ्ट पावर, ग्लोबल साउथ रणनीति, आर्थिक सहयोग और कूटनीतिक नेतृत्व को शक्ति प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित हो सकती है । भारत आजादी के बाद से ही ग्लोबल साउथ के देशों के प्रति एक जिम्मेदारी महसूस करता रहा है, इसलिए नेहरू जी ने गुटनिरपेक्ष नीति पर इन देशों को लाने की कोशिश की थी ताकि ये देश दो गुटों की लड़ाई में उलझ कर बर्बाद न हो जाएं । घाना एक तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है और भारत के महत्वपूर्ण व्यापारिक सम्बन्ध उसके साथ हैं । भारत सोने का बड़ा आयातक है और घाना से 70 प्रतिशत सोना हमारे देश में आता है । भारत इन व्यापारिक संबंधों का बढ़ाना चाहता है और घाना की विकास परियोजनाओं में सहयोग देना चाहता है । घाना के जरिये भारत अफ्रीकी देशों में अपनी पैठ बनाना चाहता है । घाना अफ्रीकी बाजारों में भारत की पहुंच आसान बना सकता है । त्रिनिदाद एवं टोबैगो में भारतीय मूल की बड़ी आबादी है इसलिए भारत इस देश के साथ अपने संबंधों को मजबूत करना चाहता है । इसके अलावा यह देश भारत की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में भी मददगार बन सकता है । भारतीय कंपनियों के लिए निवेश का रास्ता भी बन सकता है और इससे इस देश के विकास में मदद मिल सकती है । अर्जेंटीना दक्षिण अमेरिका का महत्वपूर्ण देश है और भारत को इस क्षेत्र में अपनी कूटनीतिक और आर्थिक उपस्थिति को बढ़ाने में मदद कर सकता है । भारत के साथ अर्जेंटीना का व्यापार बहुत कम है लेकिन इसमें वृद्धि की अपार संभावनाएं हैं । सोयाबीन तेल, लिथियम और दूसरे खनिज पदार्थों की आपूर्ति के लिए यह देश भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है । जहां तक ब्राजील की बात है तो यह हमारा एक महत्वपूर्ण साझेदार है । ब्राजील के साथ मजबूत संबंध हमें वैश्विक आर्थिक और कूटनीतिक मोर्चे पर मजबूती प्रदान कर सकते हैं । ब्राजील भारतीय हथियारों को खरीदने की भी इच्छा रखता है और ब्रिक्स जैसे मंच पर ब्राजील भारत का महत्वपूर्ण सहयोगी देश है । इसके अलावा भारत ब्राजील से व्यापार बढ़ाना चाहता है ।

नामीबिया के साथ भी भारत संबंधों को बढ़ाकर अफ्रीका में पहुंच बढ़ाना चाहता है । भारत को अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए यूरेनियम की जरूरत है और नामीबिया इसमें भारत की बड़ी मदद कर सकता है । वास्तव में देखा जाए तो मोदी जी की यात्रा का मुख्य उद्देश्य ग्लोबल साउथ देशों के साथ संबंधों को मजबूती देना है । भारत इन देशों की समस्याओं और आवश्यकताओं को समझ कर इनके साथ एक साझेदारी विकसित करने की कोशिश कर रहा है । अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इन देशों की आवाज किसी भी मंच पर सुनी नहीं जाती है । ये देश गरीब और कमजोर होने के कारण वैश्विक राजनीति में अलग-थलग दिखाई देते हैं । भारत की कोशिश है कि वो इन देशों की आवाज बन सके । भारत इन देशों को चीन के कर्ज जाल से भी मुक्त कराना चाहता है और अमेरिका की दादागिरी से भी बचाना चाहता है । यही कारण है कि भारत ने अफ्रीकन यूनियन के जरिये इन देशों को जी-२० में जगह दिलाई है । अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में अगर शक्ति प्राप्त करनी है तो दूसरे देशों से पार्टनरशिप ही एक रास्ता है और भारत ग्लोबल साउथ के देशों के साथ यही कर रहा है । मोदी जी इन देशों की यात्रा करके उनके साथ एक पार्टनरशिप विकसित करना चाहते हैं ताकि अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में अपनी पैठ बना सके । देखा जाए तो यह यात्रा सिर्फ शुरुआत है, अभी आगे और यात्राओं की जरूरत होगी क्योंकि अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भारत को अभी लंबा रास्ता तय करना है । हमने चीन के मुकाबले बहुत देर कर दी है, इसकी कीमत तो चुकानी होगी । चीन जिस तरह से इन देशों में अपनी मजबूत पकड़ बना चुका है उससे ऐसा लगता है कि भारत की राह आसान होने वाली नहीं है ।

पूर्णता के बोध का अवसर है- गुरु पूर्णिमा

गुरु और गोविंद दोनों पूर्ण हैं और ये दोनों एक दूसरे के पर्याय भी हैं। गुरु भी पूर्ण हैं और पूर्णिमा भी पूर्ण होती है इसलिए गुरु पूर्णिमा उत्सव बन जाता है। शिष्य अपूर्ण होता है और इसी अपूर्णता की पूर्ति हेतु वह गुरु के शरणागत होता है। गुरु इस अपूर्ण शिष्य को पूर्णता का बोध करवाते हैं। इसलिए गुरु पूर्णिमा पूर्णता के बोध का अवसर है।

एक सामान्य व्यक्ति के रूप में जीवन की संपूर्ण यात्रा जानने-समझने की यात्रा है, जिसमें व्यक्ति कभी सफल होता है तो कभी असफल। कभी वह कुछ सीख पाता है तो कभी नहीं सीख पाता। सद्गुरु की शरणागति इस सामान्य व्यक्ति को भी लौकिक जगत के साथ-साथ अलौकिक अथवा आध्यात्मिक जगत से जोड़ने की ओर बढ़ती है। इसलिए सद्गुरु के मार्गदर्शन अथवा शिक्षा से यह सामान्य व्यक्ति भी धीरे-धीरे विशेष बनता चला जाता है। वेद, पुराण, रामायण और महाभारत आदि ग्रंथों में भिन्न-भिन्न रूपों में गुरु महिमा वर्णित है। भक्तिकाल के अनेक कवियों और भक्तों ने गुरु महिमा का अनेक प्रकार से वर्णन किया है। संत कबीर ने तो गुरु को गोविंद से भी बड़ा माना है। ध्यान रहे गुरु के सानिध्य में सत्संग मिलता है, जिससे शिष्य की असद वृत्तियाँ नष्ट होती चली जाती हैं। यही कारण है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरा... अर्थात गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश कहते हुए परब्रह्म की उपाधि से विभूषित किया गया है। आदि शंकराचार्य ने अपने विवेक चूड़ामणि नामक ग्रंथ में शिष्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश आदि जो अज्ञान के कारण हैं तू उनसे मुक्त होकर ब्रह्मभाव में स्थित होने की इच्छा कर रहा है। लेकिन इसके बाद यह भी कहा। है कि- शब्दजालं महारण्यं... अर्थात शब्द जाल तो चित्त को भटकाने वाला एक महान वन है, इसलिए किन्हीं तत्वज्ञानी महात्मा से प्रयत्नपूर्वक आत्मतत्व को जानना-समझना चाहिए। ध्यान रहे जिस आत्मतत्व को जानने समझने का आवाह्न आदि शंकराचार्य कर रहे हैं उसे केवल गुरु की कृपा से ही जाना- समझा जा सकता है। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है- मातु पिता गुर प्रभु कै बानी,
बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी...। अर्थात माता, पिता, गुरु और स्वामी की बात को बिना ही विचारे शुभ समझकर करना चाहिए। इसी प्रकार वे आगे लिखते हैं- गुर के बचन प्रतीति न जेही,
सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही।
अर्थात जिसको गुरु के वचनों में विश्वास नहीं है, उसको सुख और सिद्धि स्वप्न में भी सुगम नहीं होती।

भारतवर्ष की सनातन ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य का संबंध अनादि काल से है। गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र, संदीपनी, द्रोणाचार्य, रामानंद एवं रामकृष्ण परमहंस आदि भारतीय गुरु परंपरा के आधार स्तंभ हैं। प्रभु श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनों ही साक्षात ब्रह्म हैं किंतु दोनों ही गुरु गृह यानी गुरुकुल में गुरु के सानिध्य में जाकर ही पूर्णता प्राप्त करते हैं।

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर हमें भारतवर्ष की संत परंपरा का भी वंदन- अभिनंदन करना चाहिए। क्योंकि संत परमात्मा के प्रतिनिधि रूप में हम सबका मार्गदर्शन करते हैं। ये अपने तप बल से परहित के लिए जीवन लगते हैं। बद्री, केदार, ऋषिकेश, हरिद्वार, काशी, प्रयागराज एवं चित्रकूट आदि अनेक ऐसे दिव्य स्थान है जहां अनेक संत साधनारत हैं और जन कल्याण के लिए अपना जीवन लगा रहे हैं। विगत कई दशकों से ऋषिकेश स्थित परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती जी प्रकृति- पर्यावरण, नदी एवं जल स्रोतों के संरक्षण- संवर्धन का संदेश दे रहे हैं। उनके नेतृत्व में इस दिशा में अनेकानेक बड़ी योजनाएं संपन्न हो चुकी हैं। वे गुरु रूप में प्रतिदिन मानवता, देश की एकता- अखंडता, सनातनता और जीवन के उत्थान का संदेश देते हैं। उनका महत्वपूर्ण संदेश है- मन:स्थिति बदलेगी तो शांति की संस्कृति निश्चित रूप से स्थापित होगी। विगत वर्ष गुरु पूर्णिमा के अवसर पर बोलते हुए श्रीराम किंकर विचार मिशन के संस्थापक अध्यक्ष और मानस मर्मज्ञ स्वामी मैथिलीशरण जी ने कहा- गुरु पूर्णिमा का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि सारे शिष्य जब अपनी भावनाओं से गुरुदेव का स्मरण, पूजन और अर्चन करते हैं तो प्रार्थना की इस सामूहिक शक्ति के द्वारा शिष्य के हृदय में गुरु का प्राकट्य हो जाता है। गुरु अपने शिष्य को पूर्ण करके ही पूर्ण होता है। गुरु स्व दृष्टि से शून्य है परंतु शिष्य की भावना शक्ति के कारण गुरु शिष्य दृष्टि से पूर्ण होता है। गुरु पूर्णिमा गुरु के पूजन के साथ-साथ उनके मार्गदर्शी संदेश को आत्मसात करने का अवसर भी है।

आइए गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर अंधकार से प्रकाश की ओर चलें और गुरु चरण कमल की वंदना करें। क्योंकि उनमें ऐसी संजीवनी जड़ी है जो संपूर्ण भव रोगों का नाश कर सकती है। गुरु पूर्णिमा का अर्थ भी यही है कि गुरु के उपदेश और सत्संग से अंदर के विकारों को निकालें। इसके साथ-साथ परहित और राष्ट्रहित के लिए कोई एक संकल्प लें। हमारा एक सकारात्मक कार्य दूसरों के जीवन में बदलाव ला सकता है।

डॉ.वेदप्रकाश
असिस्टेंट प्रोफेसर, किरोड़ीमल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

तस्मै श्री गुरुवे नमः: गुरु की महिमा अपरंपार

डॉ० घनश्याम बादल

इस बार दस जुलाई को आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा है जिसे जिसे सनातन संस्कृति के अनुसार गुरु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए मनाया जाता है। गुरु पूर्णिमा महाभारत रचयिता कृष्ण द्वैपायन व्यास की जयंती भी है । वें संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे और उन्होंने चारों वेदों एवं अट्ठारह पुराणों की रचना की थी इस कारण उनका नाम वेद व्यास भी है। उन्हें आदिगुरु भी कहा जाता है और उनके सम्मान में गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा नाम से भी जाना जाता है।

मान्यता है कि ईश्वर प्राप्ति का मार्ग गुरु ही दिखाते हैं । सच्चे गुरु शिष्य को गलत मार्ग से हटाकर सही दिशा देते हैं। ऐसे श्रद्धेय गुरुओं के सम्मान में ही आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा के दिन गुरु पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है।

गुरु पूर्णिमा परंपरा :

गुरू पूर्णिमा उन सभी गुरूजनों को समर्पित पर्व है जो कर्मयोग सिखाकर व्यक्तित्व विकास शिष्यों को प्रबुद्ध करते हैं, बिना लालच के ज्ञान प्रदान करने वाले व्यक्ति को ही गुरु माना जाता है। मुद्रा या तनक लेकर सिखाने वाले को कोच या शिक्षक मात्र कह सकते हैं लेकिन गुरु कोच एवं शिक्षक में आधारभूत अंतर है ।

गुरु व शिक्षक में अंतर :

जहां कोच किसी खास विधा में प्रशिक्षित करता है और शिक्षक पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करता है वहीं गुरु जीने का गुर सिखाता है । जीवन में संस्कार, संस्कृति, उच्च मूल्य एवं आदर्श का प्रस्थापन करता है । वह गुरु ही है जो मनुष्य को मानव बना कर उसे देवत्व की तरफ ले जाता है तथा मोक्ष प्राप्त करने का रास्ता दिखाता है। संक्षिप्त रूप में कहे तो गुरु वह है जो ज्ञान के साथ-साथ गुर भी प्रदान करता है।

गुरु पूर्णिमा का पर्व भारत, नेपाल और भूटान में हिन्दू, जैन और बोद्ध धर्म के अनुयायी उत्सव के रूप में और गुरु के अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए मनाया जाता है। इस उत्सव को महात्मा गांधी ने अपने आध्यात्मिक गुरू श्रीमद राजचन्द्र को सम्मान देने के लिए पुनर्जीवित किया था ।

गुरु पूर्णिमा का महत्व

भगवान की प्राप्ति का मार्ग गुरु के बताए मार्ग से ही संभव है क्योंकि एक गुरु ही है, जो अपने शिष्य को ग़लत मार्ग पर जाने से रोकते हैं और सही मार्ग पर जाने के लिए प्रेरित करते हैं। गुरु की महिमा का जितना भी वर्णन किया जाए कम है ।

साहित्य में गुरु

संत कबीर ने एक दोहे में गुरु का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा था -

गुरु सो ज्ञान जु लीजिये,
सीस दीजये दान।...
गुरु की आज्ञा आवै,
गुरु की आज्ञा जाय ...

अर्थात व्यवहार में भी साधु को गुरु की आज्ञानुसार ही आना जाना चाहिए। सद् गुरु कहते हैं कि संत वही है जो जन्म – मरण से पार होने के लिए साधना करता है। गुरु को पारस पत्थर से भी श्रेष्ठ मानते हुए भी कबीर कहते हैं

गुरु पारस को अन्तरो,
जानत हैं सब सन्त ...

अर्थात गुरु में और पारस पत्थर में अन्तर है, यह सब सन्त जानते हैं। पारस तो लोहे को सोना ही बनाता है, परन्तु गुरु अज्ञानी शिष्य को भी महान बना देता है। वह गुरु ही है जो शिष्य की कुबुद्धि से अज्ञान एवं सांसारिक दुर्गुणों रूपी कीच को ज्ञानरूपी जल से दूर करके उसका भला करता है

कुमति कीच चेला भरा,
गुरु ज्ञान जल होय ...

गुरु अपने शिष्य के दोष निकालने के लिए वह सब कुछ करता है जो उसे करना चाहिए साम दाम दंड भेद से गुरु शिष्य को दृढ़ बनाता है तभी तो कहा गया है

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है,
गढ़ि - गढ़ि काढ़ै खोट ...

गुरु के समान दाता नहीं और शिष्य के समान याचक नहीं :

गुरु समान दाता नहीं,
याचक शीष समान ...

तभी तो कबीर की सलाह है कि हमें अपने गुरु की आज्ञा के अनुसार ही चलना चाहिए अगर हम ऐसा करेंगे तो फिर तीनों लोगों में भय होने का कोई कारण ही नहीं है।

गुरु को सिर राखिये,
चलिये आज्ञा माहिं,
कहैं कबीर ता दास को,
तीन लोकों भय नाहिं।

गुरु की महिमा अपरंपार है उसका वर्णन असंभव है कबीर के शब्दों में देखिए :

सब धरती कागज करूँ,
लेखनी सब बनराय,
सात समुद्र मसि करूँ,
गुरु गुन लिखा न जाय...

सतगुरु के समान कोई हो ही नहीं सकता है यह दोहा भी यही कहता है

सतगुरु सम कोई नहीं,
सात दीप नौ खण्ड,
तीन लोक न पाइये,
अरु इकइस ब्रह्मणड।

अर्थात -सात द्वीप, नौ खण्ड, तीन लोक, इक्कीस ब्रह्मणडो में सद् गुरु के समान हितकारी आप किसी को नहीं पायेंगे।

देव भाषा संस्कृत में तो गुरु को ब्रह्मा विष्णु महेश के साथ-साथ साक्षात परब्रह्म ही मानते हुए उन्हें प्रणाम किया गया है

गुरुर्ब्रह्मा ग्रुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः,
गुरुःसाक्षात्पर ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः

अब गुरु किसे कहा जाता है इसकी भी परिभाषा संस्कृत में अद्भुत ढंग से की गई है-

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मपरायणः ।
तत्त्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थादेशको गुरुरुच्यते

जिस का भाव है - धर्म को जाननेवाले, धर्म मुताबिक आचरण करने वाले, धर्मपरायण, और सब शास्त्रों में से तत्त्वों का आदेश करनेवाले गुरु कहे जाते हैं ।

अधिक क्या कहा जाए समस्त शास्त्रों के अध्ययन व अनुसरण से भी क्या होना है चित्त की परम शांति गुरु के बिना मिलना दुर्लभ है

आइए, इस गुरु पूर्णिमा पर मन क्रम एवं वचन से अपने आध्यात्मिक, धार्मिक शैक्षणिक या किसी भी क्षेत्र में ज्ञान प्रदान करने वाले हर गुरु को श्रद्धा पूर्वक नमन करें ।

डॉ० घनश्याम बादल

रोज़गार नहीं, भविष्य का वादा: ईएलआई योजना की क्रांतिकारी पहल

[भारत के युवाओं को मिला अवसरों का महासेतु : ईएलआई योजना]

भारत की धरती आज एक नए युग के स्वागत के लिए सज रही है, जहाँ हर युवा के हाथ में मेहनत का औज़ार और आँखों में आत्मनिर्भरता का स्वप्न चमक रहा है। करोड़ों हृदयों की धड़कनों में बस एक ही पुकार गूँज रही है—सम्मानजनक रोज़गार, सशक्त भविष्य और आर्थिक स्वतंत्रता। इस पुकार को सुनकर, भारत सरकार ने एक ऐतिहासिक कदम उठाया है, जिसे रोज़गार से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (ईएलआई) के नाम से जाना जा रहा है। यह योजना कोई साधारण नीति नहीं, बल्कि 3.5 करोड़ युवाओं के जीवन को नई उड़ान देने वाला एक क्रांतिकारी मंत्र है, जो देश की आर्थिक और सामाजिक संरचना को सुदृढ़ करने का संकल्प लिए हुए है।

99,446 करोड़ रुपये के विशाल बजट के साथ शुरू हुई यह योजना, भारत के रोज़गार परिदृश्य को हमेशा के लिए बदल देने का वादा करती है। यह केवल बेरोज़गारी से जूझ रहे युवाओं के लिए आशा की किरण नहीं, बल्कि 'मेक इन इंडिया' जैसे राष्ट्रीय अभियानों को नई गति देने वाला एक शक्तिशाली इंजन है। इसका हर पहलू इतनी बारीकी और दूरदर्शिता से गढ़ा गया है कि यह न केवल वर्तमान की चुनौतियों का समाधान करता है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी एक मज़बूत नींव रखता है।

इस योजना का सबसे आकर्षक और प्रेरणादायक तत्व है इसका समावेशी स्वरूप, जो कर्मचारी और नियोक्ता दोनों को प्रोत्साहित करता है। पहला हिस्सा उन युवाओं को समर्पित है, जो औपचारिक रोज़गार की दुनिया में पहली बार कदम रख रहे हैं। उनके लिए यह योजना केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और स्थिरता का एक सुनहरा सेतु है। ऐसे कर्मचारियों को 15,000 रुपये तक की प्रोत्साहन राशि दो किश्तों में दी जाएगी—पहली छह महीने की निरंतर सेवा के बाद और दूसरी 12 महीने पूरे होने व वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण प्राप्त करने पर। यह राशि डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के ज़रिए उनके आधार-लिंक्ड बैंक खातों में सीधे जमा होगी। इस राशि का एक हिस्सा बचत खाते में सुरक्षित रहेगा, जिसे वे बाद में उपयोग कर सकेंगे। अनुमान है कि 1.92 करोड़ युवा इस प्रावधान से सीधे लाभान्वित होंगे। यह कदम न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को मज़बूत करेगा, बल्कि उन्हें एक ज़िम्मेदार और सशक्त नागरिक बनने का मार्ग भी दिखाएगा।

दूसरा हिस्सा नियोक्ताओं को प्रोत्साहित करने का है, जो भारत के औद्योगिक और आर्थिक विकास की रीढ़ हैं। कंपनियों को अब नए कर्मचारियों की भर्ती के लिए आकर्षक प्रोत्साहन मिलेगा। यदि कोई कंपनी 1 लाख रुपये तक मासिक वेतन वाले कर्मचारियों को नियुक्त करती है, तो उसे प्रत्येक कर्मचारी के लिए 3,000 रुपये प्रति माह की सहायता प्रदान की जाएगी। यह सहायता गैर-विनिर्माण क्षेत्र में दो वर्ष और विनिर्माण क्षेत्र में चार वर्ष तक जारी रहेगी। छोटी इकाइयों (50 से कम कर्मचारी) को कम से कम दो और बड़ी इकाइयों (50 से अधिक कर्मचारी) को कम से कम पाँच नई भर्तियाँ करनी होंगी। साथ ही, प्रत्येक कर्मचारी को कम से छह महीने तक काम करना होगा। यह शर्त सुनिश्चित करता है कि रोज़गार वास्तविक और दीर्घकालिक हों, न कि केवल कागज़ी औपचारिकताएँ।

योजना का एक और अनुपम पहलू है इसकी तकनीकी पारदर्शिता और जवाबदेही। कर्मचारियों और नियोक्ताओं के खाते आधार और पैन से लिंक होंगे, जिससे धन वितरण में किसी भी तरह की अनियमितता की गुंजाइश नहीं रहेगी। यह डिजिटल ढांचा न केवल भ्रष्टाचार को रोकता है, बल्कि सरकार की विश्वसनीयता को भी रेखांकित करता है। इसके अलावा, कर्मचारियों को दिए जाने वाले वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण से वे अपनी मेहनत की कमाई का बेहतर प्रबंधन और निवेश करना सीखेंगे, जो उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाएगा।

ईएलआई योजना का प्रभाव केवल तात्कालिक नहीं, बल्कि दीर्घकालिक भी है। देश की एक बड़ी आबादी आज भी अनौपचारिक क्षेत्र में काम करती है, जहाँ न तो सामाजिक सुरक्षा है और न ही स्थायित्व। यह योजना उन्हें औपचारिक क्षेत्र में लाने का एक सुनहरा अवसर प्रदान करती है। भविष्य में, ये कर्मचारी कर्मचारी राज्य बीमा (ईएसआईसी), भविष्य निधि (पीएफ), और अन्य बीमा योजनाओं से जुड़ेंगे, जिससे उनके परिवारों की आर्थिक स्थिरता बढ़ेगा। विशेष रूप से विनिर्माण क्षेत्र को इस योजना से अभूतपूर्व लाभ होगा। 'मेक इन इंडिया' अभियान को नई ऊर्जा मिलेगी, उत्पादन बढ़ेगा और भारत वैश्विक बाजार में अपनी प्रतिस्पर्धकता को और सुदृढ़ करेगा।

हालांकि, इस योजना के सफल कार्यान्वयन के लिए कुछ चुनौतियों पर ध्यान देना आवश्यक है। सबसे पहले, इसका प्रचार-प्रसार देश के हर कोने, विशेष रूप से ग्रामीण और छोटे शहरों तक पहुँचाना होगा, ताकि छोटे और मझोले उद्यम भी इससे जुड़ सकें। दूसरा, वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण को केवल औपचारिकता तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसे प्रभावी और प्रायोगिक बनाया जाए। तीसरा, कंपनियों द्वारा आँकड़ों में हेरफेर को रोकने के लिए सतत निगरानी और ऑडिट की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। इस योजना का सबसे बड़ा संदेश यह है कि भारत का युवा अब अकेला नहीं है। उसकी मेहनत को न केवल सम्मान मिलेगा, बल्कि उसे एक ऐसा मंच मिलेगा, जहाँ वह अपने सपनों को हकीकत में बदल सकेगा। यह योजना उस भरोसे की मशाल है, जो हर युवा के मन में यह विश्वास जगाती है कि उसका परिश्रम राष्ट्र निर्माण का आधार बनेगा। यदि इस विजन को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ लागू किया गया, तो निश्चित ही भारत में रोज़गार की एक ऐसी क्रांति आएगी, जो विश्व पटल पर देश को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगी। यह योजना हर उस युवा के लिए एक आलिंगन है, जो अपने मेहनत और हौसले से भारत को 21वीं सदी की आर्थिक महाशक्ति बनाने का सपना देखता है।

जैसे जैसे सूरज भारत की धरती पर नई सुबह लेकर आता है, वैसे ही ईएलआइ योजना हर युवा के लिए एक नया सवेरा ला रही है। यह वह क्षण है, जब हर हाथ को काम, हर परिवार को आत्मविश्वास और हर युवा को उज्ज्वल भविष्य का वरदान मिलेगा। यह भारत की वह कहानी है, जो मेहनत, संकल्प और सामूहिक शक्ति से लिखी जा रही है—एक ऐसी कहानी, जो आने वाली पीढ़ियों को गर्व और प्रेरणा देगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",
बड़वानी (मप्र)

पूर्वी क्षेत्रिय परिषद की बैठकों में सरायकेला ओड़िया मुद्दा सदैव गायब रहने से लोग नाराज़

आज गृहमंत्री चार राज्यों के मुख्यमंत्रियों संग करेंगे बैठक, झारखंड कर रहा मेजबानी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, कल रांची में गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की 37 वां बैठक प्रस्तावित है। परन्तु इस बैठक मे आजतक सरायकेला खरसावां को षड्यंत्र पुर्ण तरीके से ओडिशा से बिहार लाकर झारखंड गठन के समय ओडिशा को नहीं लौटाने तथा ओडिया हित की मुद्दा नहीं उठाये जाने से मामला गंभीर बनी हुई है। कारण यह देश व राज्य के बीच का मामला है । उससे कहीं वड़ी समस्या यहां के ओडिया भाषियों की राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक, भाषाई, सांस्कृतिक शोषण पर केंद्र व राज्यों दोनों द्वारा मामले को ठंडे बस्ते में डाल कर रखा गया है। जिससे लोग बेहद नाराज़ हैं दोनों सरकारों के प्रति।। वास्तव में यह केवल झारखंड की नहीं वल्कि राष्ट्रीय स्तर का बड़ा राजनीतिक षड्यंत्र है । यह भारतीय गणतंत्र व संविधान के प्रति विरोधाभास भी प्रस्तुत करता है, कारण यहां - जनता के प्रति समानता के नाम का कोई चीज नहीं रह गयी है ।

संभवत यही वजह राहा कि सन 2000 मे तत्कालीन गृहमंत्री आडवाणी ने सरायकेला-खरसावां को ओडिशा एवं प्रस्तावित झारखंड दोनों राज्यों के ओड़िया जनमानस उत्थान पर बल दिया था । जब दर्जनों सांसदों ने ओडिया भाषा में लोकसभा को संचालित रखा ।उधर ओडिशा सरकार ने अपने विधानसभा में एक रिजुलुसन पास कर सरायकेला खरसावां को पुनः ओडिशा में वापस कराने की मांग उठाया कर केंद्र को भेजा दिया था ।

बुधवार शाम तक क्षेत्रीय परिषद की 27वीं बैठक को लेकर तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। राजधानी रांची के रेडिशन होटल में 10 जुलाई को सुबह 11 बजे से होने वाली यह बैठक काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में होने वाली इस बैठक की तैयारी को लेकर रांची डीसी मंजूनाथ भजंत्री होटल में घंटों जमे रहे। बैठक कक्ष से लेकर केंद्रीय गृह मंत्री और इसमें शामिल होनेवाले विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों के ठहरने की व्यवस्था का उन्होंने जायजा लिया. होटल में बाहरी व्यक्तियों के बगैर पास के ठहरने या प्रवेश करने पर पूरी तरह से पाबंदी लगा दी गई है।

इस प्रस्तावित बैठक में सरायकेला खरसावां दो देशी रियासत जो स्वतंत्र भारत वर्ष में ओडिशा में 14 तथा 15 दिसंबर को 1947 को कटक में ओडिशा में रखे जाने हेतु विलय हुआ था वह ओडिशा का राजस्व जिला बनने के बाद तत्कालीन बड़े नेताओं के षड्यंत्र के कारण बिहार में लाया गया था । जहां ओड़िया भाषियों की राजनीतिक, आर्थिक, भाषाई, सांस्कृतिक स्थिति पर आज तक शोषण बदस्तूर आज भी झारखंड जारी है ।

ज्ञात हो कि स्वतंत्र भारत वर्ष में उसके प्रथम उपायुक्त उड़ीसा कैडर के दुर्गा दास रहे । आप बेंचमार्क एडमिनिस्ट्रेशन देने वाले अधिकारी माने जाते थे ।तब ऐसे काबिल अफसर के साथ किए गए व्यवहार अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण रहा ।कारण सरायकेला खरसावां को लालची प्रवृत्ति नेताओं के कारण इसे बिहार में ले जाना । इसी बात को लेकर स्वतंत्र भारत का पहला गोलीकांड -खरसावां गोलीकांड तक कराई गयी थी । जिसका एफ आई आर आज तक सार्वजनिक हुआ नाही कोई आयोग बैठने दिया गया । यहां के वास्तविक निवासी ओडिआओ का बदस्तूर शोषण करने हेतु यह खेल खेला गया ।

यहां उल्लेखनीय होगा की सरायकेला खरसावां को केवल एक वर्ष के लिए बिहार में लाया गया था । 1948 मे जिसे आज तक बिहार ने किस कारण ओडिशा को नहीं लौटाया यह सबसे बड़ी राजनीतिक षड्यंत्र बना हुआ है ओडिया भाषियों के खिलाफ ।

सन 2000 में तत्कालीन भाजपा, बीजेडी सम्मिलित ओडिशा सरकार द्वारा इसे पुनः उड़ीसा में वापस करने की मांग की गई थी। परन्तु पुनः लौटाया नहीं गया ।कारण झारखंड गठन के बाद यहां भ्रष्टाचार रखा जा सके । जहां ओडिया लोगों को मिटाने हेतु स्कूलों से भाषा तक ख़त्म कर दी गयी है झारखंड में । इस जिले में राज्य का सर्वाधिक उद्योग होते हुए मुल लोगों की रोजी रोजगार छीनी जा रही है जिससे भयंकर असंतुलन पैदा होने से लोग बेहद असंतुष्ट हैं । ओड़िया के जमीन पर बाहरी लोगों को रोजगार उपलब्ध कराई जा रही है । उद्योगों से आने वाली सामाजिक उत्तरदायित्व धनराशि नेता अधिकारियों की तिजोरी में चली जाती है । जिसका जबाब प्रशासन मिडिया को आज तक नहीं दिया है । यह अब्बल दर्जे का भ्रष्टाचार है ।

1977 तक इस इलाके से अंतिम उड़िया विधायक सरायकेला के राजा सतभानु सिंहदेव हुआ करते थे, उनके पहले उनके पिता टिकायत रूपेंद्र नारायण सिंह देव फिर उनके पहले महाराज आदित्य प्रताप सिंह देव सरायकेला के विधायक रहे । सर्वप्रथम विधायक मिहिर कवि थे । पर इस ऐतिहासिक ओड़िया इलाके पर भी सीट आरक्षित कर दी गयी । आज नगर पंचायत या पंचायतों तक कहीं पर ओड़िया के नाम एक भी जगह आरक्षित नहीं है । यद्यपि यह इलाका आजादी के बाद भी उड़ीसा का एक राजस्व जिला रहा है ।

गुरु के अतिरिक्त कोई ब्रह्म नहीं है, यह सत्य है(10 जुलाई गुरु पूर्णिमा विशेष आलेख)

10 जुलाई 2025 को हम भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और शास्त्रीय पर्व गुरू पूर्णिमा मनाने जा रहे हैं। हर साल आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाने वाला यह त्योहार गुरु और शिष्य के रिश्ते के पवित्र संबंध का प्रतीक माना जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इस दिन शिष्य अपने गुरूओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं। सनातन हिंदू धर्म में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान माना गया है, क्योंकि वे हमें अज्ञानता के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं।गुरु शब्द का अभिप्राय ही है- 'अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने वाला।' 'गिरति अज्ञानान्धकार मइति गुरुः' अर्थात इसका मतलब यह है कि जो अपने सदुपदेशों के माध्यम से शिष्य के अज्ञानरूपी अंधकार को नष्ट कर देता है, वह गुरू है। अद्वयतारक उपनिषद (16) में गुरू का अर्थ बताया गया है। यहाँ 'गु' का अर्थ अंधकार है और 'रु' का अर्थ है दूर करने वाला। पाठकों को बताता चलूं कि रामचरित मानस के आरंभ में गोस्वामी तुलसीदास गुरु की वंदना करते हुए 'वंदे बोधमयं नित्यं गुरु शंकर रूपिणम्' कहकर आदि गुरु सदाशिव का स्थान दिया है। वास्तव में, शिव स्वयं बोध रूपरूप है, सृष्टि के सूत्र संचालक हैं। कहते हैं कि 'गुरू बिना ब्रह्म नान्यन्-सत्यं वरानने।' तात्पर्य यह है कि गुरु के अतिरिक्त कोई ब्रह्म नहीं है, यह सत्य है, सत्य है। बहरहाल, कहना चाहूंगा कि गुरु पूर्णिमा का त्योहार भारत ही नहीं बल्कि नेपाल और भूटान में भी बड़े पैमाने पर मनाया जाता है। ज्योतिष पंचांग के मुताबिक आषाढ़ माह की पूर्णिमा तिथि की शुरुआत 10 जुलाई को रात 01 बजकर 37 मिनट पर होगी और अगले दिन यानी 11 जुलाई रात को 02 बजकर 07 मिनट पर तिथि खत्म होगी और इस प्रकार से 10 जुलाई को गुरू पूर्णिमा का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन शिष्य अपने गुरू के प्रति आभार प्रकट करते हैं और उनकी पूजा- अर्चना करते हैं।वहीं, कुछ लोग इस दिन गुरु दीक्षा भी लेते हैं। संस्कृत में 'गुरु' शब्द आध्यात्मिक शिक्षक या मार्गदर्शक को दर्शाता है, जबकि 'पूर्णिमा' पूर्णिमा(पूर्ण चंद्रमा) का प्रतीक है। वास्तव में गुरू पूर्णिमा का पर्व हमारी सनातन भारतीय संस्कृति में हमारे सभी शिक्षकों के सम्मान के लिए समर्पित दिन है-फिर चाहे वे आध्यात्मिक मार्गदर्शक हों या अकादमिक गुरू। यह कृतज्ञता, श्रद्धा, ज्ञान और बुद्धि के मूल्यों पर जोर देता है और उन्हें बढ़ावा देता है। पाठकों को बताता चलूं कि आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के दिन महर्षि वेद -व्यास जी का जन्म हुआ था, इसीलिए इसे व्यास पूर्णिमा(वेदव्यास जयंती) के नाम से भी जाना जाता है। पाठकों को बताता चलूं कि महर्षि वेद व्यास महाभारत, श्रीमद्भागवत समेत अट्ठारह पुराणों के रचयिता थे। पाठकों को बताता चलूं कि वेदव्यास जी ऋषि पराशर के पुत्र थे और शास्त्रों के अनुसार महर्षि व्यास को तीनों कालों का ज्ञाता माना जाता है। गौरतलब है कि गुरु पूर्णिमा के अगले दिन से सावन मास प्रारंभ हो जाता है, जिसका उत्तर भारत में बहुत महत्व है। कहते हैं कि यह वही दिन है जब भगवान गौतम बुद्ध ने सारनाथ में अपना प्रथम उपदेश दिया था। मान्यता है कि इसके बाद ही बौद्ध धर्म की शुरुआत हुई थी। इसलिए गुरु पूर्णिमा को बौद्धों द्वारा गौतम बुद्ध के सम्मान में भी मनाया जाता है।इस दिन पीले वस्त्र पहनकर पूजा-अर्चना करने का भी विधान है। पाठकों को बताता चलूं कि ज्योतिष शास्त्र में पीले रंग को गुरु बृहस्पति का कारक माना जाता है तथा उनकी पूजा से ज्ञान, समृद्धि और भाग्य की प्राप्ति होती है। इसलिए गुरु पूर्णिमा के दिन अपने गुरु को पीले रंग की चीजें जैसे कि पीले वस्त्र,पीले रंग की मिठाईयां, हल्दी,पीले फल(केला,आम), पीले पुष्प, कोई धार्मिक ग्रंथ या पुस्तक आदि भेंट करनी चाहिए। कहते हैं कि ऐसा करने से गुरूओं का आशीर्वाद, सुख-समृद्धि, संपत्ति की प्राप्ति होती है। गुरू की महिमा कितनी है, इसका बखान कबीर दास जी ने क्या खूब किया है -'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।बलिहारी गुरु अपने, गोविंद दियो बताय।।' इतना ही नहीं वे आगे एक दोहे में यह भी कहते हैं कि- 'गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोष।गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मिटै न दोष।।' इसका तात्पर्य यह है कि गुरू के बिना ज्ञान का मिलना असंभव है।जब तक गुरु की कृपा प्राप्त नहीं होती, तब तक कोई भी मनुष्य अज्ञान रूपी अधंकार में भटकता हुआ माया मोह के बंधनों में बंधा रहता है, उसे मोक्ष (मोष) नहीं मिलता। गुरु के बिना उसे सत्य और असत्य के भेद का पता नहीं चलता, उचित और अनुचित का ज्ञान नहीं होता। बौद्ध धर्म ही नहीं जैन धर्म में भी इस दिन का बहुत महत्व है।जैन धर्मावलंबी भगवान महावीर और उनके प्रमुख शिष्य गौतम स्वामी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए गुरु पूर्णिमा मनाते हैं। पौराणिक कथाओं के मुताबिक जगत गुरु भगवान शिव ने इसी दिन से सप्तऋषियों को योग सिखाना शुरू किया था। कहते हैं कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने अध्यात्मिक गुरु श्रीमद राजचंद्र को श्रद्धांजलि देने के लिए भी गुरु पूर्णिमा का दिन ही चुना था। इस दिन स्नान-दान का भी काफी महत्व माना जाता है। अंत में यही कहूंगा कि मानव जीवन बहुत अनमोल है और हमें मानव जीवन केवल मोक्ष प्राप्ति के लिए मिला है। इसके लिए गुरु का होना बहुत जरूरी है। कबीर दास जी बड़े ही सुंदर शब्दों में यह कहते हैं कि-'सात समंदर की मसि करूं, लेखनी करूं बनराय।धरती का कागज करुं, गुरु गुण लिख्या न जाये।।' अतः आइए इस पावन गुरू पूर्णिमा के अवसर पर हम सभी गुरूओं को नमन करें और अपने जीवन को धन्य बनाएं।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

गुरु पूर्णिमा: चातुर्मास, सत्संग और साधना की प्रेरक वेला

[गुरु पूर्णिमा: चेतना को आलोकित करने वाली अनुपम प्रभा]

जब जीवन की राहों पर अंधेरा घना हो और कदम डगमगाने लगें, तब गुरु की वाणी एक ऐसी ज्योति बनकर उभरती है, जो न केवल मार्ग दिखाती है, बल्कि हृदय को भी प्रज्वलित करती है। गुरु पूर्णिमा वह पवित्र पर्व है, जो इस अलौकिक शक्ति का उत्सव मनाता है। आषाढ़ की पूर्णिमा, जो 10 जुलाई को मनाई जाएगी, चंद्रमा की संपूर्ण आभा के साथ ज्ञान का सागर उमड़ता है। यह मात्र एक तिथि नहीं, बल्कि गुरु-शिष्य के अटूट बंधन को श्रद्धा, प्रेम और कृतज्ञता से सजाने वाला आध्यात्मिक दीपोत्सव है। यह वह दिन है, जब हम उन महान आत्माओं को प्रणाम करते हैं, जिन्होंने हमें अज्ञान से मुक्त कर सत्य, धर्म और जीवन के उच्च लक्ष्य की ओर प्रेरित किया। सनातन संस्कृति में गुरु को परमब्रह्म का साक्षात स्वरूप माना गया है— "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः" का मंत्र उनकी उस शक्ति को रेखांकित करता है, जो हमें अनंत की अनुभूति कराती है। यह पर्व महर्षि वेदव्यास के जन्मदिन के रूप में भी अमर है, जिन्होंने वेदों, पुराणों और महाभारत जैसे ग्रंथों से मानवता को ज्ञान का खजाना सौंपा। गुरु पूर्णिमा का महत्व सनातन धर्म की आत्मा में गहराई से समाया है। प्राचीन भारत में गुरुकुल प्रणाली शिक्षा का आधार थी, जहां तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय विश्व ज्ञान के केंद्र बने। इन गुरुकुलों ने चाणक्य और चंद्रगुप्त जैसे महान व्यक्तित्वों को जन्म दिया। एक ललिया सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में 85% लोग इस पर्व को अपने शिक्षकों और आध्यात्मिक गुरुओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर मानते हैं। 'गुरु' शब्द—'गु' यानी अंधकार और 'रु' यानी प्रकाश—अज्ञान को नष्ट कर ज्ञान का आलोक फैलाने वाली शक्ति का प्रतीक है। यह पर्व केवल पूजा तक सीमित नहीं, बल्कि ज्ञान, करुणा और नैतिकता के प्रसार का सशक्त मंच है, जो हमें आत्म-चिंतन और ज्ञानार्जन की प्रेरणा देता है।

गुरु पूर्णिमा का ऐतिहासिक महत्व महर्षि वेदव्यास के अमर योगदान से जुड़ा है। उन्होंने चार वेदों—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद—का संकलन, 18 पुराणों की रचना और महाभारत जैसे महाकाव्य की सृष्टि की, जो आज भी मानवता को धर्म, नीति व कर्तव्य का मार्ग दिखाता है। उनके कार्य ने भारतीय दर्शन को नई दिशा दी, यही कारण है कि यह पर्व व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। 2024 में, भारत के मंदिरों और आश्रमों में 70% से अधिक लोग व्यास पूजा में शामिल हुए, जो इस पर्व की गहरी लोकप्रियता को दर्शाता है। बौद्ध धर्म में यह दिन भगवान बुद्ध के सारनाथ में दिए गए प्रथम उपदेश, धर्मचक्र प्रवर्तन, का स्मरण करता है, जिसने बौद्ध धर्म की वैश्विक नींव रखी। जैन धर्म में यह तीर्थंकरों के प्रति श्रद्धा का अवसर है। 2023 में, भारत, नेपाल, भूटान और श्रीलंका में लाखों लोग मंदिरों, आश्रमों और गुरुद्वारों में एकत्र हुए, जो इस पर्व की सर्वधर्म स्वीकार्यता और वैश्विक अपील को रेखांकित करता है। इस पर्व का आध्यात्मिक आयाम इसे हृदयस्पर्शी बनाता है। आदि शंकराचार्य के शब्दों में, "न गुरोरधिकं तत्त्वं"—गुरु से बढ़कर कोई तत्व नहीं। गुरु वह दीपक हैं, जो हमारे अंतर्मन के अंधेरे को मिटाकर आत्म-साक्षात्कार का पथ प्रशस्त करते हैं। एक अध्ययन के अनुसार, 75% लोग मानते हैं कि किसी गुरु का मार्गदर्शन उनकी सफलता और व्यक्तित्व निर्माण में निर्णायक रहा। यह पर्व हमें सिखाता है कि गुरु केवल एक व्यक्ति ही नहीं, बल्कि माता-पिता, प्रकृति, अनुभव या परिस्थितियाँ भी हो सकते हैं। स्वामी विवेकानंद ने श्री रामकृष्ण परमहंस के मार्गदर्शन में भारतीय दर्शन को विश्व मंच पर स्थापित किया। गुरु पूर्णिमा आत्म-मंथन का अवसर है, जो हमें गुरु की शिक्षाओं को जीवन में उतारने और स्वयं को परखने की प्रेरणा देता है। यह पर्व न केवल श्रद्धा का, बल्कि ज्ञान, करुणा और आत्म-जागृति का महोत्सव है।

गुरु पूर्णिमा का दिन पवित्रता और श्रद्धा का प्रतीक है, जब शिष्य अपने गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। पंचांग के अनुसार, प्रभात में स्नान, ध्यान और गुरु पूजन अत्यंत शुभ माने जाते हैं। शिष्य गुरु के चरणों में पुष्प, फल, मिठाई और दक्षिणा अर्पित कर उनके प्रति अपनी भक्ति प्रकट करते हैं। यदि गुरु सशरीर उपस्थित न हों, तो उनके चित्र या स्मृति के समक्ष पूजन उतना ही प्रभावशाली होता है। शास्त्रों में कहा गया है कि गुरु पूजन से आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ जीवन के हर क्षेत्र में सफलता मिलती है। इस दिन दान-पुण्य, सत्संग और स्वाध्याय का विशेष महत्व है। प्राचीन परंपरा में यह दिन चातुर्मास का प्रारंभ भी है, जब साधक तप, उपवास और साधना में लीन होकर आत्मोन्नति की राह पर बढ़ते हैं। आधुनिक युग में गुरु पूर्णिमा का महत्व और भी प्रासंगिक हो गया है। डिजिटल शिक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में भी गुरु का स्थान अपरिहार्य है। 2025 में, जब विश्व तकनीकी प्रगति की ओर अग्रसर है, यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि सच्चा ज्ञान वही है, जो नैतिकता, करुणा और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाए। एक सर्वेक्षण के अनुसार, 65% युवा मानते हैं कि उनके शिक्षक या मेंटर ने उनके करियर और जीवन को दिशा दी। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे शिक्षकों ने लाखों युवाओं को विज्ञान और नैतिकता का पाठ पढ़ाकर प्रेरित किया। गुरु का आशीर्वाद वह अमूल्य शक्ति है, जो हर चुनौती से पार पाने का साहस देता है। यह पर्व हमें सिखाता है कि भौतिक सफलता से कहीं अधिक मूल्यवान वह आंतरिक शांति है, जो गुरु की शिक्षाओं से प्राप्त होती है। गुरु पूर्णिमा केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि जीवन को अर्थ और प्रेरणा देने वाला एक आध्यात्मिक संदेश है। गुरु पूर्णिमा का सामाजिक प्रभाव अत्यंत गहन है, जो विभिन्न समुदायों को एक सूत्र में पिरोता है। 2023 में, 80% आध्यात्मिक संगठनों ने सत्संग, ध्यान सत्र और सामाजिक कार्यों का आयोजन किया, जिसमें लाखों लोग एकजुट हुए। यह पर्व हमें सिखाता है कि ज्ञान का प्रसार ही समाज के उत्थान का आधार है। गुरु पूर्णिमा हमें प्रेरित करती है कि हम अपने गुरुओं की शिक्षाओं को समाज में बाँटें, एक बेहतर और समावेशी विश्व का निर्माण करें।

गुरु पूर्णिमा वह पावन अवसर है, जो हमें अपने गुरुओं के प्रति हृदय की गहराइयों से कृतज्ञता व्यक्त करने और उनके दिखाए मार्ग पर अडिग रहने की प्रेरणा देता है। यह पर्व हमें उस शाश्वत सत्य से जोड़ता है कि गुरु के बिना जीवन अधूरा है—न ज्ञान, न गति, न सार्थकता। ऋग्वेद का सूत्र, "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः," हमें विश्व भर से श्रेष्ठ विचार ग्रहण करने की प्रेरणा देता है। गुरु पूर्णिमा यही संदेश देता है—ज्ञान की अनवरत खोज, अनुशासन का पालन और गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा। जब हम गुरु के चरणों में सिर झुकाते हैं, तब हम उस अनंत शक्ति को प्रणाम करते हैं, जो हमें अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाती है। यह पर्व हमें विश्वास दिलाता है कि गुरु का आलोक वह अमर ज्योति है, जो न केवल व्यक्तिगत जीवन, बल्कि समस्त विश्व को आलोकित करती है। गुरु पूर्णिमा का संदेश अनंतकाल तक गूँजेगा—गुरु ही जीवन का आधार, गुरु ही मुक्ति का द्वार!

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

गुरु पूर्णिमा : गुरु-शिष्य के पवित्र रिश्ते का पर्व

प्रदीप कुमार वर्मा

गुरु पूर्णिमा यानि आषाढ़ मास की पूर्णिमा। प्रसिद्ध ब्रज तीर्थ गोवर्धन में मुड़िया पूर्णिमा। श्रीमद्भागवत और अट्ठारह पुराण आदि साहित्यों के रचियता महर्षि वेदव्यास का जन्म। और देश और दुनिया के लिए गुरु पद पूजन एवं वंदन का पर्व। हिंदू धार्मिक ग्रंथो में आषाढ़ मास की पूर्णिमा यानी गुरु पूर्णिमा का यही महात्म है। गुरु पूर्णिमा पर्व पर प्रसिद्ध गोवर्धन की परिक्रमा में करोड़ों भक्त गोवर्धन महाराज की परिक्रमा करेंगे वही, शिष्य अपने गुरुजनों के चरण वंदना कर अपने जीवन को धन्य करेंगे। इस दिन भगवान विष्णु के साथ मां लक्ष्मी की पूजा विशेष रूप से की जाती है। साथ ही इस दिन घरों में सत्य नारायण भगवान की कथा करने का खास महत्व शास्त्रों में बताया गया है। इस दिन पवित्र नदी में स्नान करने से हर तरह के पाप से मुक्ति मिलती है और महापुण्य की प्राप्ति होती है। यह पर्व गुरु व शिष्य के पवित्र रिश्ते का प्रतीक माना जाता है। आज के दिन शिष्य अपनी समर्थ के अनुसार अपने गुरुजनों को भेंट एवं उपहार प्रदान कर उनका आशीष प्राप्त करेंगे।

सनातन धर्म में गुरु को भगवान का दर्जा दिया गया है। यहां तक की गुरु की महिमा का बखान करते हुए शास्त्रों में गुरु को ब्रह्मा विष्णु और महेश के समकक्ष माना गया है। गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु की पूजा और चरण वंदन करना अत्यंत शुभ माना गया है। गुरु पूर्णिमा के दिन शिष्यों द्वारा अपने गुरु के प्रति आस्था को प्रकट किया जाता है। शिष्यों द्वारा आध्यात्मिक गुरुओं और अकादमिक शिक्षकों को नमन और धन्यवाद करने के लिए गुरु पूर्णिमा के पर्व को मनाया जाता है। सभी गुरु अपने शिष्यों की भलाई के लिए अपना पूरा जीवन न्योछावर कर देते है। हमेशा से आध्यात्मिक गुरु संसार में शिष्य और दुखी लोगों की सहायता करते आये हैं और ऐसे ही कई उदाहरण हमारे सामने मौजूद है जब गुरुओं ने अपने ज्ञान से अनेक दुखी लोगों की समस्याओं का निवारण किया है। इसके अलावा इस दिन व्रत करने व पूजा-पाठ करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। इस दिन भगवान विष्णु, माता लक्ष्मी के साथ भगवान सत्य नारायण की कथा करने का विशेष महत्व है।

हिंदू पंचांग के जानकर पंडित श्यामसुंदर शर्मा के अनुसार पूर्णिमा तिथि 10 जुलाई को सुबह 01 बजकर 36 मिनट पर प्रारंभ होगी और 11 जुलाई को सुबह 02 बजकर 06 मिनट पर समाप्त होगी। इसलिए हिंदू धर्म की मान्यता के मुताबिक उदया तिथि होने के कारण गुरु पूर्णिमा 10 जुलाई 2025 को है। गुरु पूर्णिमा पर मिट्टी का घड़ा, जल, अनाज, मौसमी फल, वस्त्र, अन्न, मिठाई व गुड़ आदि का दान करना अत्यंत शुभ माना गया है। हिंदू, बौद्ध और जैन संस्कृतियों में गुरुओं को एक विशेष स्थान प्राप्त है। इन धर्मों या संस्कृतियों में अनेक शैक्षणिक और आध्यात्मिक गुरु हुए हैं जिन्हें भगवान के तुल्य माना गया है। स्वामी अभेदानंद, आदिशंकराचार्य एवं चैतन्य महाप्रभु आदि प्रसिद्ध हिन्दू गुरु थे। वैदिक मान्यताओं के अनुसार, ऐसा माना जाता है कि प्राचीन काल में आषाढ़ पूर्णिमा की तिथि पर ब्रह्मसूत्र, महाभारत, श्रीमद्भागवत और अट्ठारह पुराण आदि साहित्यों के रचियता महर्षि वेदव्यास का जन्म भी हुआ था।

धार्मिक ग्रंथों में महर्षि वेदव्यास को तीनों कालों के ज्ञाता माना गया है। महर्षि व्यास ने ही महाभारत की रचना की थी। महर्षि व्यास जी को हमारे आदि-गुरु माना जाता हैं। गुरु पूर्णिमा के प्रसिद्ध त्यौहार को व्यास जयंती के रूप में भी मनाया जाता है। इसलिए इस पर्व को व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं और इस दिन हमें अपने गुरुओं को व्यास जी का अंश मानकर उनकी पूजा करनी चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं से जुड़ी ब्रजभूमि में स्थित गोवर्धन पर्वत श्रद्धा और आस्था का बड़ा केंद्र है। हर साल यहां करोड़ों भक्त परिक्रमा लगाने आते हैं। खासतौर पर मुड़िया पूर्णिमा के दिन यहां सबसे ज्यादा भीड़ जुटती है। गोवर्धन धाम में लगने वाले इस मेले में देश ही नहीं, बल्कि विदेशों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। देसी और विदेशी श्रद्धालु पवित्र गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा कर पूर्ण लाभ अर्जित करते हैं। यही वजह है कि उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के गोवर्धन में आयोजित होने वाला मुड़िया मेला देश और दुनिया के लक्खी धार्मिक मेलों में शुमार है।

ऐसी मान्यता है कि मुड़िया पूर्णिमा मेले की शुरुआत सनातन गोस्वामी की याद में हुई थी। कहा जाता है कि जब उनका परलोक गमन हुआ , तब उनके अनुयायियों ने गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा की और सिर मुंडवाकर भजन-कीर्तन करते हुए यात्रा निकाली। तभी से यह परंपरा शुरू हुई, जिसे खासतौर पर बंगाली भक्ति संप्रदाय के लोग पूरी श्रद्धा से निभाते आ रहे हैं। मान्यता है कि जो भी भक्त मुड़िया पूर्णिमा के दिन 21 किलोमीटर की गोवर्धन परिक्रमा करता है, उसे जीवन मेंसुख-शांति और धन-धान्य की प्राप्ति होती है। यही नहीं, ऐसी मान्यता भी है कि गोवर्धन की परिक्रमा करने के बाद व्यक्ति की दुख-दरिद्रता भी दूर हो जाती है। इसके साथ ही परिक्रमा करने वाले व्यक्ति को भगवान विष्णु का लोक कहे जाने वाले बैकुंठ की भी प्राप्ति भी होती है। इस मेले की परंपरा करीब पांच सौ साल पुरानी है, लेकिन आज भी इसमें लोगों की आस्था उतनी ही मजबूत दिखती है। गुरु पूर्णिमा हमें यह सिखाती है कि गुरु का स्थान जीवन में कितना महत्वपूर्ण है। गुरु के बिना ज्ञान और मार्गदर्शन के अभाव में जीवन अधूरा है।

- लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

भारत बंद का असर: राउरकेला में आंशिक, सुंदरगढ़ में अधिक

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

राउरकेला/ भूबनेश्वर : 10 केंद्रीय ट्रेड यूनियनों और श्रमिक संगठनों के संयुक्त आह्वान पर आज भारत बंद है। यह हड़ताल श्रम नीतियों, कृषि विरोधी नीतियों और खदानों व कोयला कारखानों में श्रमिक विरोधी गतिविधियों के खिलाफ बुलाई गई है। इसका सुंदरगढ़ ज़िले पर खासा असर पड़ा है। जिला मुख्यालय राउरकेला में स्थिति सामान्य है, लेकिन सुंदरगढ़ प्रखंड क्षेत्र सबसे ज़्यादा प्रभावित हुआ है ।सुबह 7 बजे से ही सीटू के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बिष्णु चरण मोहंती के नेतृत्व में सैकड़ों मज़दूरों ने बस स्टैंड से बिरसामुंडा चौक तक जुलूस निकाला। उन्होंने चौक पर विभिन्न मज़दूर विरोधी नीतियों का विरोध किया और सरकार के ख़िलाफ़ नारे लगाए। उन्होंने लगभग 3 घंटे तक चौक पर विरोध प्रदर्शन किया। इसमें मज़दूरों के साथ सीटू के विमानन मज़दूर और अन्य सदस्य भी शामिल हुए।

दूसरी ओर, सुबह से ही रेल सेवाएँ सामान्य रहीं, लेकिन सरकारी और निजी बसें बंद रहीं। इसी तरह, कुछ सरकारी स्कूल बंद रहे, जबकि निजी स्कूल, बैंक और बाज़ार खुले रहे। नतीजतन, शहर में धार्मिक अवकाश का आंशिक असर रहा। दूसरी ओर, सुंदरगढ़, बोनाई, कोइड़ा, बीरमित्रपुर, राजामुंडा, लहुणीपाड़ा, हेमगिरी इलाकों में भी ज़ोरदार विरोध प्रदर्शन हुए, जिससे बंद का असर रहा। ब्लॉक क्षेत्र में खदानों और कारखानों के परिवहन वाहन बंद रहे, वहीं मज़दूर संघों ने बाज़ार, स्कूल और कार्यालय बंद करके विरोध प्रदर्शन किया।

ओडिशा मंत्रिमंडल विस्तार: मनमोहन समल ने संकेत दिए: मंत्रिमंडल में जल्द होगा बदलाव

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर ; राज्य में मंत्रिमंडल का विस्तार जल्द ही होगा। प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल ने यह स्पष्ट किया। मनमोहन ने कहा कि केंद्र से चर्चा के बाद कई फैसले लिए गए हैं। इसके साथ ही, राज्य में बोर्ड और निगमों की नियुक्ति को लेकर भी दो बैठकें हो चुकी हैं और सूची भी तैयार कर ली गई है ।प्रदेश अध्यक्ष ने मीडिया को बताया कि कुछ और चर्चाओं के बाद जल्द ही कोई फैसला लिया जाएगा। प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल एक नई टीम के साथ काम करेंगे। नई प्रदेश टीम युवाओं और वरिष्ठों के समन्वय से बनेगी। उन्होंने कहा कि नई टीम सभी वर्गों को महत्व देते हुए पार्टी के लिए काम करेगी। हालाँकि, अभी मनमोहन को लेकर काफी चर्चा हो रही है।

हालाँकि, मनमोहन के एकमात्र उम्मीदवार के रूप में नामांकन दाखिल करने के बाद, मनमोहन सामल को औपचारिक रूप से भाजपा प्रदेश अध्यक्ष घोषित किया गया है। चौथी बार पार्टी की कमान संभालने के बाद, मनमोहन ने अपना रुख स्पष्ट किया। पार्टी सरकार के पीछे खूंटे की तरह खड़ी रहेगी और भाजपा ने साइनबोर्ड पार्टी से सरकार बनाई है। इसलिए, भाजपा सरकार लंबी पारी खेलेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार 2036 और 2047 भी देखेगी।

सरकार आने के बाद, लोगों की उम्मीदों को पूरा करने की ज़िम्मेदारी बढ़ गई है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने पार्टी कार्यकर्ताओं से सत्ता में आने के बाद सोने का आह्वान नहीं किया है। इन दोनों बातों से साफ़ है कि मनमोहन सामल सरकार और संगठन के बीच समन्वय बनाए रखने की कुंजी बनेंगे। पार्टी सरकार की सफलता को गाँव-गाँव तक पहुँचाने की ज़िम्मेदारी उठाएगी। लेकिन अब चर्चा उनके मंत्रिमंडल को लेकर दिए गए बयान पर हो रही है।

श्रीरामेश्वरम धाम से पुण्य लाभ लेकर श्रद्धालु सकुशल लौटे

-श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव और तीर्थ यात्रा का भव्य समापन

परिवहन विशेष न्यूज

खेड़ापति भागवत समिति, खेड़ीपुरा के श्रद्धालुजन श्रीरामेश्वरम धाम से पुण्य लाभ लेकर सकुशल नगर लौट आए। समिति के तत्वावधान में आयोजित 7 दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव एवं तीर्थ यात्रा का समापन 7 जुलाई को पूर्णाहुति और महाप्रसादी के साथ हुआ था। इसके पश्चात श्रद्धालु अन्य तीर्थ स्थलों के दर्शन कर आज हरदा पहुंचे। 150 श्रद्धालुओं के इस पुण्य यात्रा दल ने श्रीरामनाथस्वामी मंदिर, धनुषकोडी, कोदंड रामस्वामी मंदिर, सीता कुंड तिरूपती, कन्याकुमारीजैसे प्रमुख तीर्थ स्थलों के दर्शन कर आत्मिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त की। समिति के सक्रिय सदस्य राजू हरने ने जानकारी दी कि रामेश्वरम में हरदा के सुप्रसिद्ध भागवताचार्य पं. विद्याधर उपाध्याय महाराज (नयापुरा) ने अपनी दिव्य वाणी से प्रतिदिन श्रीमद्भागवत कथा का अमृतपान कराया। आज जैसे ही श्रद्धालु खेड़ापति मंदिर, खेड़ीपुरा पहुंचे, मोहल्ले वासियों ने उनका फूल-मालाओं और जयघोष के साथ आत्मीय स्वागत किया। मंदिर प्रांगण में एक संक्षिप्त स्वागत-सत्कार समारोह भी आयोजित किया गया जिसमें समिति पदाधिकारियों एवं क्षेत्रवासियों ने अपनी श्रद्धा और हर्ष व्यक्त किया। खेड़ापति भागवत समिति की तीर्थ यात्राओं की श्रृंखला का तीसरा प्रमुख आयोजन रहा, जो इस बार और भी विस्तृत, भव्य और दिव्य रूप में संपन्न हुआ। उन्होंने आगामी समय में और भी ऐसे आध्यात्मिक आयोजनों की रूपरेखा तैयार करने की बात कही।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023